कर्मभूमि

वर्ष १० अंक २१

मई २०१७

सोलहवें हिंदी महोत्सव के अवसर पर
पर्व और त्यौहार विशेषांक

Vishwa Sant Pujya Gurudev Guruvanand ji Swami

Will be blessing us with his divine presence in NY – NJ

You are cordially invited for his Personal Blessing, Darshan, and Discourse

Flushing, Queens

Friday, June 23rd - 6 PM

Hindu Temple Society of North America

Long Island, NY

Saturday, June 24th 3 PM

Wheatley School, Old Westbury

Kearny, NJ

Sunday, June 25th – 3 PM

Hindu Community Center

For details, please contact: 516-484-0018 - info@gurujiusavisit.com

Best compliments:

Meenakshi & Rakesh Bhargava, Roslyn Hts. NY

Rayansh Prasad, Ruchi, Vivek, Richa, Dr. Rahul

www.hindiusa.org

हिन्दी USA ®

1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक) - 856-625-4335

रचिता सिंह (शिक्षण तथा प्रशिक्षण संयोजिका) - 609-248-5966

राज मित्तल (धनराशि संयोजक) - 732-423-4619

माणक काबरा (प्रबंध संयोजक) - 718-414-5429

सुशील अग्रवाल (पत्रिका 'कर्मभूमि' संयोजक) - 908-361-0220

शिक्षण समिति

नैना रैना - कनिष्ठा १ स्तर

जयश्री कलवचवाला, रजनी रामनाथन - कनिष्ठा २ स्तर

मोनिका गुप्ता, भाविका चुग - प्रथमा १ स्तर

सन्जोत ताटके, सरिता नेमानी - प्रथमा २ स्तर

इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी - मध्यमा १ स्तर

ममता त्रिवेदी, अरुणधति तारे - मध्यमा २ स्तर

विकास ओहरी, सुशील अग्रवाल - मध्यमा ३ स्तर

कविता प्रसाद, सुशील अग्रवाल - उच्च स्तर १

नेहा माथुर - उच्च स्तर २

अन्य समितियाँ

अमित खरे – वेब साइट

अद्वैत तारे – वीडियो

सुनीता गुलाटी – पुस्तक वितरण

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

एडिसन: माणक काबरा (718-414-5429)
सुनील दुबे (732-570-3258)

साऊथ ब्रंस्विक: उमेश महाजन (732-274-2733)

मॉन्टगोमरी: अद्वैत/अरुणधति तारे (609-651-8775)

पिस्कैटवे: सौरभ उदेशी (848-205-1535)

ईस्ट ब्रंस्विक: मायनो मुर्मु (732-698-0118)

वुडब्रिज: शिव आर्य (908-812-1253)

जर्सी सिटी: मनोज सिंह (201-233-5835)

प्लेंसबोरो: गुलशन मिर्ग (609-451-0126)

लॉरेंसविल: जयश्री कलवचवाला (609-638-6284)

चैरी हिल: देवेंद्र सिंह (609-248-5966)

चैस्टरफील्ड: शिप्रा सूद (609-920-0177)

होमडेल: निनिता पटेल (732-365-2874)

मोनरो: सुनीता गुलाटी (732-656-1962)

विल्टन: अमित अग्रवाल (630-401-0690)
चेतना मल्लारपु (475-999-8705)

नॉर्थ ब्रंस्विक: योगिता मोदी (609-785-1604)

स्टैमफर्ड: पंकज झा (732-930-3162)
मनीष महेश्वरी (203-522-8888)

एलिकोट सिटी: मुरली तुल्शियान (201-892-7898)

हम को सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

संपादकीय

हिंदी यू. एस. ए. की स्थापना का यह सोलहवां वर्ष है। २००१ में स्थापित इस संस्था ने अपना कार्य कुछ बच्चों को स्वयंसेवकों के घर से ही हिंदी प्रशिक्षण देकर प्रारम्भ किया। कई चुनौतियों एवं संघर्षो का सामना करते हुए, संस्था आज तीन राज्यों में १७ हिंदी पाठशालाएँ सफलता पूर्वक संचालित कर रही है जिनमे ४००० से अधिक छात्र-छात्राएं हिंदी का ९ स्तरों में प्रशिक्षण ले रहे हैं। इन पाठशालाओं को संचालित करने वाले हमारे ३०० से अधिक समर्पित अध्यापक एवं स्वयंसेवक है। तीन नयी पाठशालाएं आगामी सत्र में प्रारम्भ किये जाने की तैयारियां चल रही है।

सोलहवें हिंदी महोत्सव के उपलक्ष में कर्मभूमि का यह अंक 'पर्व और त्यौहार विशेषांक' के रूप में आपकी सेवा में समर्पित है। नन्हे-मुन्ने छात्रों, अभिभावकों, एवं अध्यापकों ने अत्यंत उत्साह से इस अंक को अपने रोचक लेखों, कविताओं और कहानियों से सुसज्जित किया है। भारत की परम्पराओं और पुराणों के अनुसार, वर्ष का प्रत्येक दिन किसी न किसी त्यौहार का ध्योतक है, इस अंक में बहुत से प्रमुख त्यौहारों की जानकारी हमारे लेखकों ने दी है। 'प्रवासी जीवन में त्योहारों की भूमिका' लेख में लेखिका ने विदेशों में त्यौहार मनाने के अतुल्य लाभों का बहुत ही सुन्दर विश्लेषण करते हुए बतलाया है की हमें हमारे सभी त्यौहार हमारे बच्चों के साथ मनाने चाहिए ताकि उनसे जुडी घटनाएँ और संस्मरण उनके हृदय और मस्तिष्क में सदा के लिए अंकित हों और वे परिवार से बंधे रहें।

अपने विभिन्न लेखों में नन्हे मुन्ने बच्चों ने, नवरात्री, गणेश उत्सव, जन्माष्टमी, होली, दिवाली, रक्षा बंधन, आदि प्रमुख पर्वों के अपने संस्मरण लिखे हैं जो प्रशंसनीय हैं। हिदी पाठशालाओं के छात्रों द्वारा प्रमुख पर्व सामूहिक रूप से पाठशालाओं में मनाये जाते हैं। सभी अध्यापक एवं अभिभावक इसमें विशेष रुची लेकर छात्रों को विशेषकर होली, दिवाली, रक्षाबंधन, दशहरा, गणेश चतुर्थी, तथा जन्माष्टमी आदि पर्वों को सामूहिक रूप में धूम-धाम से मनाकर बच्चों को हमारी संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा देते हैं है जो उन्हें हमेशा याद रहता है। हिंदी यू.एस.ए. की अधिकांश शालाओं ने अपनी पाठशालाओं में मनाये गए विभिन्न त्यौहारों का विस्तृत वर्णन चित्रों के किया है, उन्हें अवश्य पढ़े। बहुत से बच्चों के संस्मरण, आलेख उनके बनाये गए चित्रों सहित उन्हीं की लिपि में ही प्रकाशित किये जा रहे हैं, इससे उनका उत्साहवर्धन होगा और उन्हें सतत लिखने की प्रेरणा मिलेगी।

'हमारे आदर्श' आलेख में विभिन्न बच्चों ने उनके आदर्शों के बारे में लिखा है। बच्चों ने बहुत सहज भावों से उनका वर्णन किया है और उन्हें वे अपना आदर्श क्यों मानते हैं, इस बारे में उन्होंने समझाया है। सभी कुछ मिलाकर यह अंक एक बहुत सुंदर एवं संग्रहणीय अंक है क्योकि इसमें अधिकांश लेख हमारे बच्चों एवं युवाओं के ही है।

इस वर्ष के महोत्सव में बच्चों एवं युवाओं के विशेष कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताएं के आलावा हम एक विशेष कार्यक्रम मई २०, २०१७ को प्रस्तुत करने जा रहे हैं। यह कार्यक्रम 'भारत माता की आरती', भारत से आमंत्रित बहुमुखी प्रतिभा के धनी, बाबा श्री सत्यनारायण मौर्य द्वारा प्रस्तुत की जाएगी। भारत में इनके कार्यक्रमों को देखने के लिए हजारों व्यक्तियों का सैलाब उमड़ पड़ता है, वही बाबा मौर्य हमारे बीच उनकी हस्ताक्षर रचना 'भारत माता की आरती' की प्रस्तुति भारत माता का विशालकाय चित्र आरती के

दौरान बनाकर करेंगे । यह प्रस्तुति अपने आप में एक अद्भुत कार्यक्रम होगा।

पत्रिका की मुद्रित प्रतियों पर आये खर्च का एक बड़ा हिस्सा हमारे समर्थकों द्वारा पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर पूरा किया गया है। उनकी वित्तीय सहायता हेतु हिंदी यू. एस. ए. उनका आभारी है। पाठकों से अनुरोध है की पत्रिका पढने के पश्चात अपनी प्रतिक्रियाएं, आलोचना, समालोचना अवश्य भेजें। हमें उनकी प्रतीक्षा रहेगी। जो अभिभावक या पाठक संस्था में स्वयं-सेवक या अध्यापक बनने के इच्छुक हो, कृपया अवश्य संपर्क करें।

धन्यवाद

हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है। निरंतर १६ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप हिन्दी यू.एस.ए. संस्था के स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं, जो संस्था के मजबूत स्तम्भ हैं, को देख सकते हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। हिन्दी यू.एस.ए. की १७ पाठशालाएँ चलती हैं। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। यदि आप उत्तरी अमेरिका के किसी राज्य में हिन्दी पाठशाला खोलना चाहते हैं तो आप हमें सम्पर्क कीजिए। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा, अपनी संस्कृति को संजोय रखने में सहभागी बनना चाहते हैं तो हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का सदस्य बनें।

कर्मभूमि

०७ - कार्यकर्ता की पहचान

०८ - हिंदी यू.एस.ए. के वार्षिक कार्यक्रम

१० - युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह

११ - स्वस्थ जीवन

१२ - प्रवासी जीवन में त्यौहार की भूमिका

१४ - एक सार्थक पहल

१६ - मोनरो, मध्यमा-३

१८ - बसन्त, दीवाली, अद्‌भुत समय

१९ - मेरा प्रिय त्यौहार

२० - मेरे विचार

२१ - दीवाली, मकर संक्रांति

२२ - मुझे त्यौहार मनाना अच्छा लगता है क्योंकि...

२६ - वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो - दिवाली उत्सव

२७ - साड़ी

२८ - बेटियाँ

२९ - पिस्कैटवे प्रथमा-१

३० - चैरी हिल, मध्यमा-१

३२ - साउथ ब्रंसविक मध्यमा-१

३६ - मोनरो मध्यमा-१ पाठशाला

३८ - दिवाली

४० - वदला

४१ - शिक्षा एक आशीर्वाद

४२ - हमारे आदर्श

४४ - नृत्य परिचय, बचपन

४५ - गणेश उत्सव, शिक्षा का महत्त्व

४६ - हम हिन्दी क्यों सीख रहे हैं

४८ - एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-२

५६ - लोहड़ी, होली

५८ - समय यान

६० - मेरा प्रिय खेल क्रिकेट

६१ - मेरी रुचि, सम्राट अशोक

६२ - लेन्नी - नोट्रे डेम के चौकीदार

६६ - जन्माष्टमी का त्यौहार

संरक्षक

देवेंद्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें

हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

Hindi USA
70 Homestead Drive
Pemberton, NJ 08068

मुख्य पृष्ठ – मेधा महेश शिंदे

६८ - हिंदी यू.एस.ए. एक संयुक्त त्यौहार

७० - चेस्टरफील्ड पाठशाला – प्रथमा-२

७१ - मेरा प्रिय पर्व, बर्फ का दिन

७२ - हमारा प्रिए त्यौहार

७६ - मेरा नया साल - चैरी हिल - कनिष्ठ २

७८ - दीपावली उत्सव

८० - तिरंगा

८१ - अधिकारी और वाहन चालाक

८२-९४ पाठशालाओं के लेख

कार्यकर्ता की पहचान

सच्चे कार्यकर्ता का पहला कर्त्तव्य होता है कि वह संस्था के उद्देश्यों को सर्वोपरी रखे और व्यक्तिगत उलझन, लाभ और सुविधा को कभी भी कार्य के सम्पन्न होने में बाधा न बनने दे। कार्य की महत्ता, उसका कार्यवहन और संस्था के मंच को अपने से ऊपर रख कर ही कार्य के प्रति न्याय किया जा सकता है। हमारे शास्त्र और लोकप्रिय ग्रंथ जैसे रामायण एवं भगवत गीता व्यक्ति के कर्त्तव्य को बखूबी प्रस्तुत करते हैं।

हिन्दी यू॰एस॰ए के कार्यकर्ताओं ने समाज में हिन्दी भाषा को नई पीढ़ी में लोकप्रिय बनाने के किए निस्स्वार्थ सेवा का महत्वपूर्ण उदाहरण समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। ३०० से अधिक कार्यकर्ता नियमित रूप से वर्ष दर वर्ष हिन्दी भाषा को युवा पीढ़ी में स्थानांतरित करने के सुसंरचित एवं सुव्यवस्थित कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कार्यकर्ताओं में ५, १०, १५ वर्ष या उससे भी अधिक स्वयंसेवक की भूमिका में रहने के बाद भी उत्साह में कोई कमी नहीं आई है। इससे पता चलता है कि उन्हें हिन्दी को युवा पीढ़ी में लोकप्रिय बनाने के कार्य और उनके अपने योगदान के बारे में बखूबी पता है।

समाज में नैतिक, सांसारिक और सांस्कृतिक मूल्यों की जानकारी और उनके पालन में जो गिरावट है, उसका मुख्य कारण अभिभावकों में इस प्रकार की शिक्षा के अनुसरण में कमी और ऐसी संस्थाओं का अभाव है जो नियमित रूप से भाषा और संस्कृति को मजबूत करने वाली परियोजनाओं में संलग्न हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के सैंकड़ों कार्यकर्ता वर्ष भर समय के साथ पारिपक्व हुए एक ऐसे कार्यक्रम के अंतर्गत अपना योगदान उन सैनिकों की भांति निभा रहे हैं जो हमारे विद्यार्थियों में कोई भी ऐसे अवगुण प्रवेश नहीं होने देंगे जिनकी वजह से उनके शैक्षिक, चारित्रिक और सांस्कृतिक विकास में कोई कमी आए। ये कार्यकर्ता आंधी, पानी, तूफान या बर्फ से विचलित हुए बिना अपनी पूर्ण ऊर्जा से हिन्दी यू.एस.ए. के उद्देश्यों को पूरा करने में लगे हैं। जनवरी २०१७ की एक महत्वपूर्ण सभा में लगभग सभी पाठशाला संचालक उपस्थित रहे। गौर करने वाली बात यह है कि उस दिन ६-७ इंच बर्फ गिरी हुई थी। इस वर्ष का महोत्सव हिन्दी यू.एस.ए. के सभी कार्यकर्ताओं को समर्पित है।

सत्र २०१६-१७

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

हिन्दी यू. एस. ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू. एस. ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि “यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए”। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू. एस. ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण - पिछले ५ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (**www.hindiusa.org**) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण - हिन्दी यू. एस. ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड्स का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में सीडी तथा डीवीडी का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४,००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार - ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्यौहार का परिचय - प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्यौहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोड़ी, बैसाखी आदि त्यौहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा - दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह - हिन्दी यू. एस. ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ३५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरुस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू. एस. ए. उपहार प्रदान करता है।

७. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन - प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है

जिसमें उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

८. कर्मभूमि की तैयारी - जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

९. अंतर्शालेय कविता पाठ - इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू. एस. ए. की १८ पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। प्रत्येक स्तर से १० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

१०. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन - इसका विस्तृत विवरण पेज १० पर देखें।

११. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी - मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१२. मौखिक परीक्षा - मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१३. हिन्दी महोत्सव - यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोकनृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्यौहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण जेओपर्डी प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू. एस. ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१४. वार्षिक परीक्षा - जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू. एस. ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू. एस. ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं?
क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं?
क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट **www.hindiusa.org** पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

युवा स्वयंसेवक अभिनन्दन समारोह

माणक काबरा

हिंदी यू.एस.ए. संस्था पिछले १६ वर्षों से न्यू जर्सी में हिंदी सिखाने में कार्यरत है। संस्था की करीब २० पाठशालाओं से लगभग ५०० से भी ज्यादा विद्यार्थी स्नातक की उपाधि प्राप्त कर चुकें हैं। आज उनमे से १०० से ज्यादा छात्र-छात्राएं इन पाठशालाओं में युवा स्वयंसेवक के रूप में हिंदी सिखा रहे हैं। इससे इनका हिंदी से जुड़े रहना और सीखी हुई भाषा को और भी लोगों तक पहुंचाने में मदद मिलती हैं।

इस वर्ष के अभिनन्दन समारोह का आयोजन एडिसन नगर में मार्च १८ को रखा गया जहाँ ५३ युवा स्वयंसेवक के साथ पाठशाला संचालक एवं कुछ अभिभावक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरूआत गायत्री मंत्र से हुई और बाद में श्री देवेंद्र जी और श्रीमती रचिता सिंह जी ने सभी को सम्बोधित करते हुए कुछ महत्वपूर्ण बातें बताईं। फिर पाठशाला

संचालकों ने अपनी-अपनी पाठशाला के युवा स्वयंसेवकों के कार्यों की प्रशंसा की और उनके बारे में बातें बताईं। उसी प्रकार सभी युवा स्वयंसेवकों ने भी अपने-अपने अनुभव सभी से साथ साँझा किये। कुछ ने अपने कॉलेज के अनुभव बताये कि उन्हें कैसे हिंदी सीखने का लाभ मिल रहा है और कैसे वे इसको और भी लोगों तक पहुंचा रहे हैं। इसके साथ ही कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गए। हमने देखा है कि युवा स्वयंसेवक केवल सिखाते ही नहीं बल्कि इसे नई टेक्नोलॉजी का उपयोग करके और भी सरल बनाने के तरीकों को भी बताते हैं। इसका एक उदाहरण हर्षल नवाड़े ने एक मोबाइल ऐप्प बनाकर प्रस्तुत किया। हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में उपयोग में लाये जाने वाले फ़्लैश कार्डस को हर्षल ने बहुत ही प्रभावशाली ढंग से मोबाइल एप्प के प्रोग्राम में डाला और उसका प्रदर्शन किया। आने वाले दिनों में इसका उपयोग हिंदी सीखने में हो सकता है। सभी युवा स्वयंसेवकों को एक साथ देख कर ऐसा अनुभव हुआ कि हमारी अगली पीढ़ी हिंदी की मशाल आगे बढ़ने के लिए अब तैयार हो रही है। सभी के सहयोग से यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा और हम आशा करते हैं कि आगे भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन होता रहेगा।

हिंदी यू.एस.ए. के युवा स्वयंसेवक

स्वस्थ जीवन

नमस्ते, मेरा नाम शैलजा सैनी है। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ती हूँ। आज मैं आप को स्वस्थ जीवन जीने के कुछ महत्पूर्ण सुझाव दूँगी। स्वस्थ और खुश रहने के लिये सब से ज्यादा महत्पूर्ण आपकी नींद का पूरा होना जरूरी है। सब लोगों के लिये नींद आवश्यक है। रात को काम की वजह से अपनी नींद का त्याग नहीं करना चाहिये।

दूसरा स्वस्थ रहने का महत्वपूर्ण राज, ताजा फल और सब्जियों का भरपूर उपयोग है। उन सब में अगर हरी सब्जियाँ हों तो फिर कहना ही क्या। अगर खाना समय पर खाया और उसमे ताजा दही, सलाद और हरी सब्जी हो तो खा कर आपका मन खुश हो जाएगा और अगर मन खुश होगा तो स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। अगर आपकी नींद पूरी होगी और खाना खाया हुआ होगा तो आपके मन में और शरीर में स्फूर्ति रहेगी। स्फूर्ति रहेगी तो आप का मन व्यायाम करने को करेगा। हम सब लोग जानते हैं व्यायाम हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है।

प्रवासी जीवन में त्यौहार की भूमिका

रचिता सिंह

त्यौहार शब्द खुशियों और उल्लास का पर्याय है। प्रत्येक देश, धर्म, जाति और राज्यों के अपने विशेष त्यौहार होते हैं। इन त्यौहार के प्रारम्भ होने का इतिहास और विशेष कारण होता है, जो युगों से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। देश के त्यौहार राष्ट्रीय और सांस्कृतिक त्यौहार होते हैं जो देश की परम्पराओं और इतिहास से जुड़े रहते हैं। धार्मिक त्यौहार धर्म से जुड़े त्यौहार होते हैं। इन त्यौहार का इतिहास धर्म की पुस्तकों तथा पौराणिक कथाओं में मिलता है। जाति और राज्यों के त्यौहार को हम क्षेत्रिय या जातीय त्यौहार कह सकते हैं।

जब कोई व्यक्ति अपना देश या प्रांत छोड़कर किसी दूसरे देश में या दूसरे प्रांत में बस जाता है तो वहाँ के वातावरण में समाहित होने के लिए वह वहाँ के त्यौहार और परम्पराओं को भी धीरे-धीरे अपनाने लगता है और समय के साथ वहाँ के त्यौहार उसके अपने बन जाते हैं। यहाँ पर एक ध्यान देने वाली बात यह है कि ऐसे प्रवासी लोग कभी-कभी दूसरे धर्मों के त्यौहार को भी अपने घर में मनाने लगते हैं। धार्मिक त्यौहार आपकी उस धर्म के प्रति आस्था तथा उस धर्म के ईष्ट के प्रति आस्था पर आधारित होते हैं। ऐसा देखने में आया है कि दूसरे धर्म के त्यौहार मनाने वाले न तो दूसरे के भगवान में विश्वास रखते हैं और न ही धर्मग्रंथ में। वे केवल इसलिए ये त्यौहार मनाने लगते हैं क्योंकि ये त्यौहार सभी मना रहे होते हैं या फिर वे शौख में मनाने लगते हैं। इस प्रकार के त्यौहार आपके लिए शौक हो सकते हैं पर बच्चे इसे बहुत गंभीरता से लेते हैं और उसे अपना ही समझकर उसे अपने त्यौहार में शामिल कर लेते हैं। कोई भी परिवर्तन एक दिन में नहीं होता, अत: कोई त्यौहार मनाने से पहले यह अवश्य सोचें कि यह त्यौहार आप क्यों मना रहे हैं और इसके दूरगामी परिणाम क्या होंगे।

जब प्रवासी अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश में जाते हैं तो वे अपने कपड़ों और सामान के साथ-साथ एक चुनौती भी लेकर जाते हैं कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति आए अपनी धार्मिक, पारिवारिक और देश की परम्पराओं, रीति-रिवाजों और सम्मान की रक्षा करेंगे और आगे आने वाली पीढ़ी को भी उससे अवगत कराएंगे। यह चुनौती तब और कठिन हो जाती है जब आपके देश के लोगों की संख्या बहुत कम हो। इस चुनौती से निपटने में त्यौहार का बहुत बड़ा हाथ होता है। जब अपना देश छोड़कर आते हैं तो देश के साथ-साथ अपना परिवार, घर, बाजार, मित्र, रिश्तेदार, त्यौहार, मंदिर और सबसे बढ़कर वह वातावरण जिसे हम प्रवासी आजकल “देसी” के नाम से जानते हैं कहीं बहुत पीछे छूट जाता है।

किसी भी संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए वातावरण या माहौल की अत्यधिक आवश्यकता होती है और वातावरण बनता है समूह से। एक ऐसे समूह से जो समान धर्म, समान वेशभूषा, समान संस्कृति, समान भोजन और समान परम्पराओं में विश्वास रखता हो। इसमें यदि समान भाषा का भी समावेश हो जाए तो यह सोने में सुहागा होता है। इस प्रकार के समूह अपने-अपने त्यौहार को मंदिरों में पूजा के

माध्यम से विशाल सभागारों में जलसों के माध्यम से या घरों में जमा होकर त्यौहार मिलन के रूप में मनाते हैं।

प्रवासी भारतीयों की जिंदगी रोज़मर्रा की भागदौड़ में पाठशालाओं में, दफ्तरों में, बाज़ारों में अपने कमाने खाने और परिवार के क्रिया-कलापों में उस देश की भाषा और भेष के बीच में ऐसे सरपट भागती है कि अपने देश और संस्कृति को याद करने का समय सप्ताहांत या किसी त्यौहार के आने पर ही मिलता है। भारत में तो भारतवासी हमेशा ही भारतीय रहते हैं, परंतु विदेशों में रहने वाले भारतीय त्यौहार के आने पर अपने भारतीय होने का अनुभव करते हैं। यही वह समय होता है जब उन्हें अच्छे भारतीय पकवान, मिठाइयाँ खाने-खिलाने का और सुंदर-सुंदर भारतीय परिधानों, गहनों, सामानों को खरीदने और पहनने का आनंद मिलता है।

विदेशों में त्यौहार मनाने के लाभ अतुल्य हैं।

१. त्यौहार के माध्यम से बच्चों को उनके पूर्वजों की जड़ों से जोड़ना बहुत सरल हो जाता है।

२. त्यौहार के आते ही परिवार के सभी सदस्य एक-दूसरे के करीब आ जाते हैं।

३. त्यौहार का सहारा ले हम बच्चों को अपने धर्म और इतिहास का ज्ञान सरलता से दे सकते हैं।

४. त्यौहार और उत्सवों में घर को सजाने का अवसर मिलता है।

५. पर्वों के मौसम में घर और बाहर सब जगह त्यौहारमय हो जाता है और हमारा खाना, पहनना और बोलना सभी कुछ भारतीय हो जाता है।

६. विभिन्न पर्वों के माध्यम से बच्चों विभिन्न देवी-देवताओं और उनकी विशेषताओं का पता चलता है।

७. प्रत्येक भारतीय त्यौहार का अपना एक विज्ञान और दर्शन है जिसके बारे में अधिकांश माता-पिता नहीं जानते, लेकिन जो अभिभावक धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं वे अपने बालकों को बचपन से ही पर्व को मनाने के पीछे क्या दर्शन (फिलोसफ़ी) है वह बताते रहते हैं।

८. त्यौहार का विज्ञान हमारे पर्यावरण की रक्षा से जुड़ा हुआ है। जब बच्चों को इसका पता चलता है तो मन ही मन उन्हें अपनी संस्कृति पर गर्व होता है।

९. त्यौहार को पाठशालाओं और सार्वजनिक रूप से मनाने से बच्चों के ऊपर पीयर प्रेशर बहुत कम हो जाता है।

१०. त्यौहार मनाने से बच्चों के मन में अपने पूर्वजों के देश और संस्कृति के प्रति गर्व और सम्मान बढ़ता है।

११. इन सब लाभों को देखते हुए सभी भारतीयों को अपने त्यौहार बहुत धूम-धाम के साथ बढ़ चढ़ कर मनाने चाहिए। इन त्यौहार को मनाने का उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर आस्था और आध्यात्म के साथ सौहार्द बढ़ाना होना चाहिए। बचपन में मनाए गए त्यौहार और उससे जुड़ी घटनाएँ और संस्मरण बच्चों के हृदय और मस्तिष्क में सदा के लिए अंकित हो जाते हैं जो उन्हें परिवार से बांधे रखते हैं।

हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे द्वारा परिश्रम से जोड़ा हुआ धन नहीं चाहती। यह पीढ़ी हमसे हमारी संस्कृति और सभ्यता की सौगात चाहती है। क्या आप दे सकते हैं? क्या आप दे रहे हैं? क्या आज के बाद आप स्वयं अपना ज्ञान बढ़ाएँगे और अपने बच्चों के प्रश्नों के उत्तर उन्हें देने योग्य बनेंगे?

अगर किसी देश को भ्रष्टाचार-मुक्त और सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है तो मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं। पिता, माता और गुरु!

अब्दुल कलाम

एक सार्थक पहल

साईं इतना दीजिये, जा में कुटुम्भ समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधू न भूखा जाय।

कबीर दास जी की इन सरल किन्तु जीवन के आदर्श-आचरण से ओतप्रोत पंक्तियों में समाहित सन्देश से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि प्रभु से उस सक्षमता को पाने की प्रार्थना करें जिससे हम केवल अपने और अपने परिवार के अतिरिक्त भरण पोषण में ही ना लगे रहें बल्कि अन्य जरूरतमंदों क़ी भी सहायता कर पाएँ तथा जिससे मन एवं आत्मा की आतंरिक संतुष्टि का अनुभव कर पाएँ। आदर्श जीवन के इसी मूल मंत्र को कुछ हद तक वास्तविकता में बदलने का हिंदी यू.एस.ए. द्वारा किया गया प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

इस परिवार की अनेकानेक उपलब्धियों में एक और महत्वपूर्ण कड़ी तब जुड़ गयी जब विभिन्न पाठशालाओं ने अपने यहाँ सामूहिक रूप से Packed खाद्य-पदार्थों को एकत्रित कर उसे Food Bank को देने का निश्चय किया। सर्वप्रथम, हिंदी यू.एस.ए. की चैरी हिल पाठशाला की ओर से इस प्रयास को प्रारम्भ किया गया जिसका अनुकरण किया लॉरेंसेविल, प्लेन्सबोरो, नार्थ ब्रुन्सविक आदि पाठशालाओं ने।

यह सर्व-विदित है कि राष्ट्र भाषा हिंदी के पठन-पाठन के माध्यम से देश की संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण में अनवरत जुटी यह संस्था एक विशाल एवं महत्वपूर्ण सामजिक उद्देश्य की पूर्ती कर पाने में सफल रही है, किन्तु इसके साथ ही इस प्रकार के अन्य सामजिक कार्यों में यह अनूठी पहल उललेखनीय है।

सामूहिक रूप से अपनी भागीदारी को अंकित करने के लिए सभी का साधुवाद। आशा है कि हम इन जीवन मूल्यों को ऐसे ही संजो के रख पाएँ और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को पूरी इच्छा शक्ति और दृढ़ता से पूरा करते रहें।

धन्यवाद—योगिता मोदी

फूड ड्राइव

वेनू गोपाल वर्मा

हिन्दी यू.एस.ए. संगठन ने नवंबर के महीने में फूड ड्राइव योजना का आरंभ किया और सफल तरीके से इसको लागू भी किया! हिन्दी यू.एस.ए. के शिक्षकों, संचालकों और छात्रों के माता-पिता द्वारा दान किया हुआ आहार 'चेरी हिल फूड पैंट्री' में दिया गया। चेरी हिल फूड पैंट्री ने हिन्दी यू.एस.ए. की तरफ से "packed food cans" प्राप्त किए। चेरी हिल फूड पैंट्री एक खाद्य बैंक और गैर लाभ संगठन है जो गरीबों में भोजन वितरित करता है। यह संस्था ऐसे लोगो को भोजन प्रदान करती है जिनके पास पौष्टिक आहार की कमी है और जो अपने आहार की ज़रूरत को पूरा करने के लिए फूड बैंकों या पैंट्री पर निर्भर करते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. संगठन ने बहुत अच्छे तरीके से समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को निभाया है।

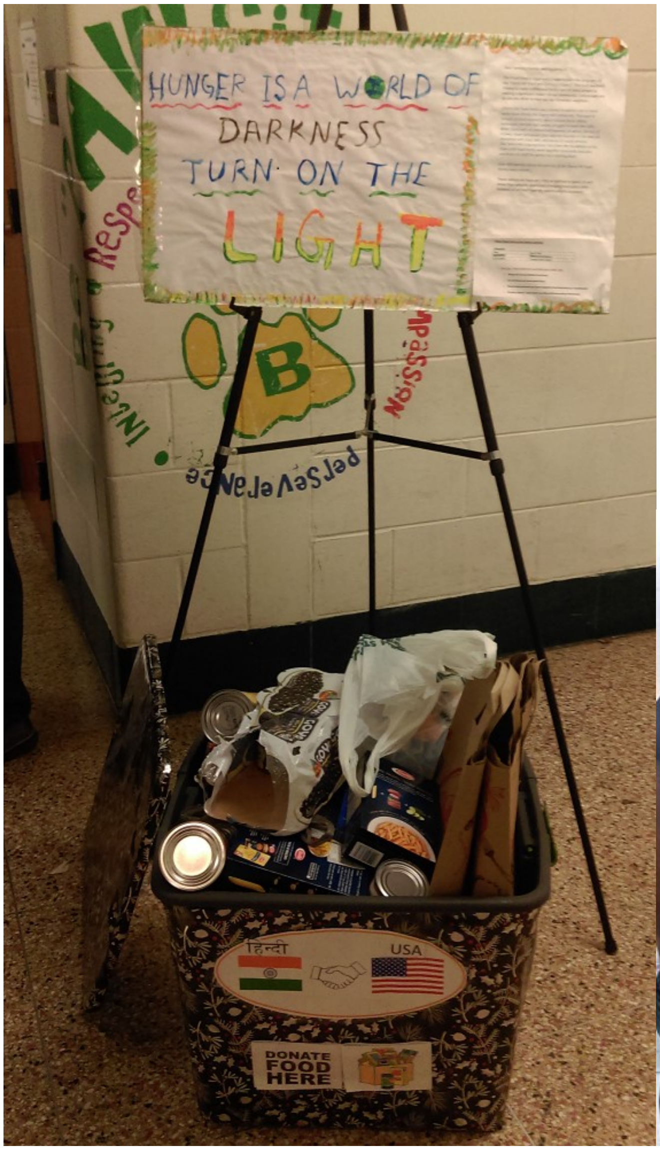

मध्यमा-३, मोनरो पाठशाला

मैं पिछले छह सालों से हिंदी यू.एस.ए. के साथ जुड़ी हूँ और दो साल से मध्यमा-३ की शिक्षिका हूँ। अब तक का यह सफर काफी अच्छा और रोचक रहा है। मुझे नृत्य और संगीत में काफी रुचि है। हर साल महोत्सव और शिक्षक अभिनन्दन समारोह में रंगारंग कार्यक्रम तैयार करने का मुझे बड़ा उत्साह रहता है। इस साल हमारी कक्षा के बच्चों ने विभिन्न राज्यों के त्यौहार के बारे में सामूहिक परियोजना में भाग लिया। सभी को काफी आनंद आया।

नवरात्रि

मेरा नाम सोन्या हरजानी है और आज मैं आप सबको हिन्दू त्यौहार नवरात्रि के बारे मे बताऊंगी। पहले तो आप सब को नवरात्रि शब्द का मतलब बताऊंगी। इसका मतलब है नव = ९ (9) और रात्रि = रात। माँ दुर्गा के ९ रूपों की पूजा करने के लिए नवरात्रि मनाई जाती है। माँ दुर्गा हिन्दू शक्ति की देवी हैं। नवरात्रि के दसवें दिन पर दशहरा मनाया जाता है। गुजरात राज्य में नवरात्रि बहूत धूम-धाम से मनाई जाती है और सब लोग मिलकर गरबा और डांडिया खेलते हैं। मुझे डांडिया खेलना बहुत पसंद है। मैं अपने दोस्तों के साथ डांडिया खेलने जाती हूँ और पूजा पाठ करती हूँ। गरबा खेलते समय सभी लड़कियाँ रंग बिरंगी चुनिया चोली और चूडिया पहनती हैं। नवरात्रि का आठवा दिन अष्ठमी का दिन होता है। उस दिन छोटी लड़कियों को देवी का रूप मान कर पूजा करते हैं और उन्हें पूरी, चने, हलवा खिलाते हैं।

गणेश उत्सव

मेरा नाम रश्मि कापसे है और मैंने गणेश उत्सव के बारे में बताने की कोशिश की है। गणेश चतुर्थी महोत्सव हिंदू भगवान गणेश के सम्मान में मनाया जाता है। यह एक बहुत ही शुभ शुरुआत मानी जाती है और हर गतिविधि के शुरू में सफलतापूर्वक किसी भी बाधाओं के बिना पूरा होने की प्रार्थना करने के लिए भी मनाया जाता है। भगवान गणेश ज्ञान के देवता के रूप में जाने जाते हैं। गणेश चतुर्थी दस दिवसीय त्यौहार है और यह हिन्दू महीने भाद्रपद के चौथे दिन जो सामान्य रूप से ग्रेगोरियन कैलेंडर के अगस्त या सितंबर महीने से मेल खता है। यह उत्सव घर में एक गणेश की मिट्टी की मूर्ति खरीद कर औपचारिक स्थापना के साथ शुरू होता है। मूर्ति को फूल और अन्य रंगीन सजावट की चीजों से सजाया जाता है। इस तरह दस दिन तक भाव पूर्ण पूजा करने के बाद मूर्ति को समुंदर या तालाब में विसर्जित किया जाता है। यह भारत भर में मनाया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश राज्यों में मनाया जाता है।

जन्माष्टमी

मेरा नाम क्रिश सक्सेना है। मैं १० साल का हूँ। रोबोटिक्स, चित्रकारी और तैराकी मेरे कुछ शौक हैं। जन्माष्टमी का त्यौहार भगवान् कृष्ण के जन्म के अवसर पर मनाया जाता है। यह त्यौहार श्रावण मॉस के कृष्ण पक्ष के आठवे दिन आता है। हम इस दिन उपवास रखते हैं और मध्य रात्रि में कृष्ण भगवान की पूजा करते हैं। यह माना जाता है कि कृष्ण भगवान का जन्म अर्ध रात्रि में हुआ था। इस दिन घर में तरह-तरह के लड्डू, मिठाइयाँ और उपवास वाला खाना बनता है। मंदिरों में कृष्ण भगवान की झाँकी सजाई जाती है और झूले लगाए जाते हैं। कृष्ण भगवान की मूर्ति को झूले में बिठा कर झुलाया जाता है। लोग इकट्ठे होकर भजन और आरती गाते हैं। मैंने जन्माष्टमी का चित्र भी बनाया है। आशा है आप लोगों को पसंद आएगा।

बसन्त

श्रेया

हर तरफ छाई हरियाली
खिल गई हर इक डाली।
नये फूल और पौधे फूटे
मानो कुदरत भी है हँसे।
लाल गुलाबी पीले फूल
खिले शीतल नदिया के किनारे।
हँस दी है नन्ही सी कलियाँ
भर गई है बच्चो से गलियाँ।
देखो आसमान में उड़ती पतंग
भरते नील गगन मे रंग।
देखो यह बसन्त मसतानी
आ गई है ऋतुओ की रानी।

दिवाली

रने रेड्डी

मेरा नाम रने रेड्डी है। मैं दिवाली के बारे मैं लिख रही हूँ। दीवाली बहुत लोकप्रिय हिंदू त्यौहार है। इस दिन श्री राम 14 वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या लौटे। दिवाली बुराई पर जीत के लिए मनाई जाती है। हम इस दिन लक्ष्मी देवी की प्रार्थना करते हैं। लोग इस त्यौहार के लिए अपने घरों को सजाते हैं। सभी नए कपड़े पहनते हैं। शाम को आतिशबाजी जलाई जाती है। दिवाली मेरा पसंदीदा त्यौहार भी है। हम अपने दोस्तों और परिवार के साथ हर साल दिवाली मनाते हैं। मुझे रात में आतिशबाजी करने में बहुत मजा आता है।

अद्भुत समय

प्रणव उदेशी, स्वाती सिंघानिया

कितना अद्भुत होता समय,
किसी के पकड़ मे न आता समय।
बचपन में यह जल्दी से आता,
जवानी की ओर भागता भगाता।
बुढ़ापे में यह टुकूर टुकूर चलता,
चाहे कितना ही मनुष्य हाथ मलता।
कोई नही समझ पाया इसकी सरलता,
नही चली इसके सामने किसी की चपलता।
जीवन का हर पल अमूल्य होता है,
वह मूर्ख है जो शिकायतों से इसे खोता है।
अरुणोदय तो होगा..सूर्यास्त भी आएगा,
मानो मेरी बात जीवन तेज़ी से समाप्त हो जाएगा।
आओ अपने जीवन को अद्भुत बनाएँ,
सूर्यास्त के पहले औरों के जीवन में उजाला फ़ैलाएँ।

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है। एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पता है। शिक्षा, सौंदर्य और यौवन को परास्त कर देती है

चाणक्य

मेरा प्रिय त्यौहार

लॉरेंसविल पाठशाला – मध्यमा-१

ओम पटेल

नील शिवालकर

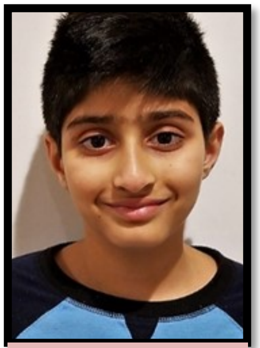

ओम शर्मा

ओम पटेल

मेरा नाम ओम पटेल है। मेरा प्रिय त्यौहार मकर संक्रांति (उत्तरायण) है। इस साल उत्तरायण मैंने भारत में मनाया। मैंने पूरा दिन छत पर बिताया और पतंग उड़ाई। हमने पटाखे जलाये और नाच गाना भी किया। उस दिन हमने खीर के साथ साथ तिल के लड्डू, उंधियू और जलेबी भी खाई। रात में हमने गुब्बारे भर कर आकाश में उड़ाये। मकर संक्रांति के दिन मैंने बहुत खुशियां मनाईं।

नील शिवालकर

मेरा नाम नील शिवालकर है। मुझे दिवाली का त्यौहार अच्छा लगता है। दिवाली के दिन दीपक जलाते हैं और घर में उजाला करते हैं। हम नए कपड़े पहनते हैं और भगवान की पूजा करते हैं। हम बहुत सारे पकवान और मिठाई खाते हैं और खिलाते हैं। मीठी खीर भी खाते हैं। हम फुलझड़ी जलाते हैं और पटाखे फोड़ते हैं। दीवाली के त्यौहार पर हम बहुत खुश हो जाते हैं।

ओम शर्मा

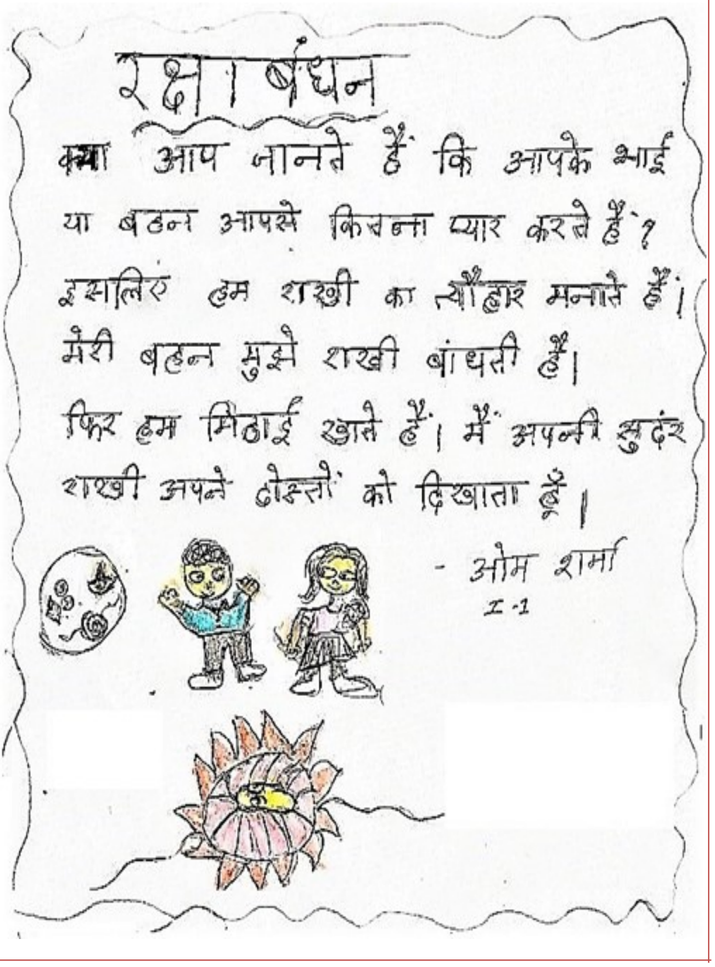

रक्षा बंधन

क्या आप जानते हैं कि आपके भाई या बहन आपसे कितना प्यार करते हैं? इसलिए हम राखी का त्यौहार मनाते हैं। मेरी बहन मुझे राखी बांधती है। फिर हम मिठाई खाते हैं। मैं अपनी सुंदर राखी अपने दोस्तों को दिखाता हूँ।

- ओम शर्मा
I-1

मेरे विचार

स्वागता माने **ईस्ट ब्रुन्सविक, उच्चत्तर-१**

नमस्ते,

ईस्ट ब्रुन्सविक में उच्चस्तर-१ की कक्षा को पढ़ाने का यह मेरा दूसरा वर्ष है। संचालिका मायनोजी की सहायता से हर काम आसान लगता है। मेरे सहचारी मित्रों से मिलकर बातचीत करने हेतु मेरे कुछ विचार:-

साल के आरम्भ से लेकर आज तक हर कक्षा में हम कुछ नया ही सीखते-सिखाते आये हैं। विद्यार्थियों को लगन से पढ़ाई करने के लिए बहुत तरीके अजमाने पड़ते हैं, इसका अनुभव हर पल होता है। हर समय कुछ नया करने का मेरा प्रयास रहता है। जो यहाँ सीखा वह यहीं सीमित न रहकर भविष्य में उनके उपयोग में आए, इस पर मेरा ध्यान रहता है। देवेंद्रजी और रचिताजी ने बच्चो को हिंदी सिखाने की जो नींव डाली है वह प्रशंसनीय ही नहीं बल्कि आदरणीय है। यही बच्चे भविष्य के नागरिक हैं, उन्हीं के जरिए हिंदी भाषा जागृत रहेगी यह मेरा विश्वास है। शुक्रवार की शाम बच्चे बड़े थके-हारे कक्षा में प्रवेश करते हैं। मेरी इस कक्षा में ५-६ मील दौड़ लगाने वाले, नृत्य, बैडमिंटन, श्लोक आदि कक्षाओं से आने वाले बच्चे हैं। थके चेहरे आने वाले कुछ ही क्षणों में हँसी-मज़ाक के माहौल में बदल जाते है। लगता है यह तो जादू ही है। यहाँ समय-समय पर रचिताजी का मार्गदर्शन बड़ा उपयोगी आता है।

हम श्वेतपट पर श्रुतिलेखन करके एक दूसरे को ही जाँच करने देते है। विद्यार्थी बड़े मजे से यह काम करते हैं। हर एक को पाठ्यपुस्तक में से किसी भी विषय पर अध्यापक की हैसियत से पढ़ाने का मौका मिलता है। अध्यापन करते-करते अध्ययन भी हो जाता है। ज्ञान बाँटने से और बढ़ता है यह बच्चों को समझ में आना महत्वपूर्ण है। कुछ चुनौतीपूर्ण प्रतियोगिताओं के माध्यम से कक्षा में बच्चे ज्यादा सतर्क रहते हैं। हिंदी में वाक्य लिखने के लिए समय की पाबंदी रखते हैं। बच्चे अपनी थकान भूलकर जब कक्षा में घुलमिलकर कार्य में हिस्सा लेते हैं, तो वह खुशी असाधारण होती है। "खेल खेल में सीखें हिंदी" इस कार्य में मेरे साथ युवा स्वयंसेवकों ने भी बड़ी मदद की है। बच्चे कक्षा का समय ख़त्म होने पर भी और सीखने की चाह रखते हैं। यह हम अध्यापकों के लिए किसी पुरस्कार से कम नहीं है।

दिवाली

रिद्धि गुप्ता, चेस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला, उच्चतर-२

भारत एक त्यौहार का देश है। इन सभी त्यौहार में दिवाली सबसे प्रमुख त्योंहार है। इसे दीपों का त्योंहार भी कहा जाता है। अमेरिका में रहने वाले भारतीय भी दिवाली बहुत धूम धाम से मनाते हैं।

हमारे घर में हम सभी लोग दिवाली बहुत अच्छे से मनाते हैं। दिवाली के दिन हम सब नए कपड़े पहनते हैं और सुबह उठ कर हनुमान जी की पूजा करते हैं और प्रसाद खाते हैं। उसके बाद हम घर को फूलों से सजाते हैं। घर के दरवाजे पर शुभ दीपावली लगाते हैं और रंगोली बनाते हैं। हम सभी तैयार होकर अपने दोस्तों के घर मिलने जाते है और उन्हे दिवाली के उपहार और शुभकामनाएँ देते हैं। शाम को घर वापस आकर हम लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं और दीपक जलाते हैं। सारा घर बहुत ही सुंदर लगता है। रात को हम सभी साथ में पटाखे चलाते हैं और सभी पटाखे खत्म हो जाने पर मिल कर खाना और मिठाई खाते हैं। उसके बाद हम सब मिलकर अपने दिवाली के तोहफे खोलते हैं और देर रात तक भारत में अपने नाना, नानी, चाचा, चाची और बहुत सारे रिश्तेदारों से फ़ोन पर बात करते हैं। ऐसे दिवाली का यह त्योंहार हम साथ मिलकर ख़ुशी ख़ुशी मानते हैं। दिवाली के पाँच दिन मुझे पूरे वर्ष में सबसे ज्यादा पसंद हैं।

मकर संक्रांति

प्रार्थना खन्ना
नॉर्थ ब्रंस्विक
मध्यमा-१

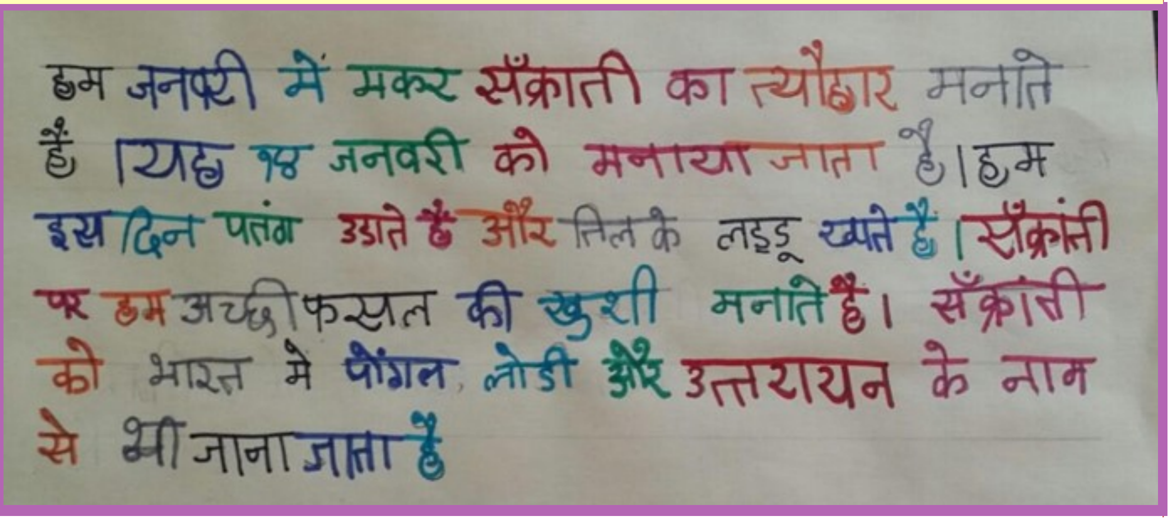

हम जनवरी में मकर सँक्राती का त्यौहार मनाते हैं।यह १४ जनवरी को मनाया जाता है।हम इस दिन पतंग उडाते हैं और तिल के लड्डू खाते हैं।सँक्रांती पर हम अच्छी फसल की खुशी मनाते हैं। सँक्राती को भारत मे पोंगल, लोडी और उत्तरायन के नाम से भी जाना जाता है

मुझे त्यौहार मनाना अच्छा लगता है क्योंकि...

कविता प्रसाद साऊथ ब्रुन्सविक, उच्चत्तर-१

भारत देश को अगर हम त्यौहार का देश कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। वहाँ हर महीने, हर प्रान्त में कोई न कोई त्यौहार धूम धाम से मनाया जाता है। सभी त्यौहार की अपनी परंपरा होती है जिसमें समाज, देश व राष्ट्र के लिए कोई न कोई विशेष संदेश निहित होता है। त्यौहार जीवन को खुशहाल व रिश्तों को मजबूत बनाने में एक अटूट कड़ी की भूमिका निभाते हैं। हमारे त्यौहार हमारे गौरव हैं और हमारी संस्कृति की पहचान हैं। हमारे लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम आने वाली पीढ़ी को त्यौहार के महत्व एवं परम्पराओं से अवगत कराएँ। इसी भावना से प्रेरित हो कर मैंने साऊथ ब्रुन्स्विक हिंदी पाठशाला के उच्चत्तर-१, "ब" कक्षा के विद्यार्थियों से उनके विचार जानने चाहे कि उनको त्यौहार मनाना क्यों अच्छा लगता है और कौन सी परम्परा उनको सबसे ज्यादा प्रभावित करती है।

आरव हाथिरामानी :
आरव १२ वर्ष के हैं और सातवीं कक्षा में पढ़ते हैं। आरव को तबला बजाना, क्रिकेट और फुटबाल खेलने का शौक है।

मेरा मनपसंद त्यौहार ओणम है। मेरा परिवार उत्तर भारत से अमेरिका आया है किन्तु ओणम उत्तर भारत में नहीं मनाया जाता। मेरी एक मामी जी ने ओणम मनाने की परम्परा हमारे परिवार में शुरू की और फिर यह मेरा पसन्दीदा त्यौहार बन गया। ओणम के दिन मेरा पूरा परिवार एक साथ इकठ्ठा होता है। मेरी ममेरी बहन ओणम की कहानी सुनाती हैं। इस कहानी के अनुसार एक असुर राजा था, महाबली जो अत्यंत लोकप्रिय था। किन्तु किसी कारणवश विष्णु भगवान् ने उसका राज्य ले लिया। कहा जाता है कि उस दिन के बाद से महाबली हर वर्ष एक दिन अपनी प्रजा से मिलने आता है जिसे ओणम के रूप में मनाया जाता है। ओणम के दिन मेरी मामी बहुत सारे व्यंजन बनाती हैं जैसे अवियल, पोंगल, पायसम और आम का अचार। सबसे पहले सभी बच्चों को एक कतार में जमीन पर बिठा कर केले के पत्ते पर खाना परोसा

जाता है। उस समय मुझे महसूस होता है कि मैं भी एक महाबली के जैसा ही राजा हूँ। बच्चों के खाना खा लेने के बाद ही बड़ों की बारी आती है। फिर हम सभी बच्चे खेलते हैं और बड़े बैठ कर बातें करते हैं। उस रात हम सभी एक साथ रुकते हैं। इस प्रकार ओणम का दिन एक यादगार दिवस बन जाता है और मैं बेसब्री से अगले वर्ष ओणम आने का इन्तजार करने लगता हूँ।

आरुशी सिंह :
आरुशी ११ वर्ष की हैं और छठवीं कक्षा में पढ़ती हैं। आरुशी को किताबें पढ़ना, चित्रकारी और नृत्य का शौक है।

मुझे त्यौहार मनाना अच्छा लगता है क्योंकि इस दिन मेरा पूरा परिवार एक साथ रहता है। मेरे मामा मामी जो न्यू यॉर्क सिटी में रहते हैं वे हमारे घर आते हैं। सब मिल कर अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं, तरह-तरह के पकवान खाते हैं और एक साथ खेलते हैं। कई बार हम त्यौहार के समय भारत में होते हैं। भारत में मेरे परिवार के अन्य सभी सदस्य रहते हैं और भारत में बिताया समय मेरी यादगार बन जाता है। मुझे अपने परिवार से बहुत प्यार है और उन पर पूरा भरोसा है, इसीलिए मुझे त्यौहार मनाना पसंद है क्योंकि मै अपने परिवार के साथ होती हूँ।

ईशा श्रीवास्तव :
ईशा ११ वर्ष की हैं और छठवीं कक्षा में पढ़ती हैं। ईशा को चित्रकारी, किताबें पढ़ना और अच्छा खाना खाने का शौक है।

मेरा मनपसंद त्यौहार होली है। भारत के बहुत से त्यौहार सिखाते हैं कि बुराई पर अच्छाई की जीत होती है पर होली उसमें रंग भर देती है। इस दिन हम सूखा और गीला रंग सब पर प्यार से लगाते हैं। यह उत्सव सिखाता है कि सभी व्यक्ति एक जैसे हैं और विश्व एक बड़े परिवार के जैसा है। होली दहन पर सुनाई जाने वाली प्रहलाद की कहानी मुझे बहुत पसंद है। इस कहानी के अनुसार हिरण्यकश्यप एक अति क्रूर एवं अहमी राजा था और अपनी प्रजा से भगवान् की जगह अपनी पूजा करवाता था। उसके पुत्र प्रहलाद को भी भगवान् विष्णु की पूजा करने की अनुमति नहीं थी। पर प्रहलाद ने अपने स्वार्थी पिता की बात नहीं मानी और अपने भगवान विष्णु की पूजा करते रहे। ऐसा करने से प्रहलाद के पिता हिरण्यकश्यप नाराज हो गये और उनको एक अलग कमरे में रखा और बहुत सताया किन्तु हर बार भगवान विष्णु प्रहलाद की मदद करते थे और बचा लेते थे। अंत में हार कर हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को जला कर मारने का निर्णय लिया। प्रहलाद जलने से बच गये और उसके पश्चात भगवान विष्णु ने हिरण्यकश्यप का भी अंत कर डाला। यह कहानी मुझे अच्छी लगती है क्योंकि इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हर व्यक्ति को अपना धर्म का पालन करने और अपने ईश्वर की पूजा करने की स्वतंत्रता है।

किर्तना रामास्वामी:

किर्तना ११ वर्ष की हैं और छठवीं कक्षा में पढ़ती हैं। किर्तना को किताबें पढना, चित्रकारी करना एवं नृत्य का शौक है।

मुझे दिवाली का त्यौहार मनाना बहुत पसंद है क्योंकि दिवाली के दिन मेरे घर में चारों तरफ ख़ुशी का वातावरण होता है। मेरी माँ सुबह से ही बहुत सारे पकवान, जैसे हलवा पूरी और मिठाइयाँ जैसे कि लड्डू, गुलाबजामुन बनाती हैं। मैं अपनी माँ की हर कार्य में मदद करती हूँ। घर आँगन में हम बहुत सारे दिए जलाते हैं। अड़ोस पड़ोस के लोग भी दिए जलाते हैं और सभी के घर चमकते दिखाई देते हैं। दिवाली के दिन मैं और मेरी बहन नए कपड़े पहनते हैं। मुझे सलवार कुर्ता पहनना अच्छा लगता है। सुबह सुबह हम सभी मन्दिर जाते हैं। जिस बात कि मुझे सबसे ज्यादा ख़ुशी मिलती है वह यह कि इस दिन कोई भी दुखी नहीं दिखाई देता है।

मीरा बालाजी :

मीरा ११ वर्ष की हैं और छठवीं कक्षा में पढ़ती हैI मीरा को किताबें पढ़ना, लिखना, गाना गाने का शौक हैI

मुझे त्यौहार बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि त्यौहार का मतलब है बहुत मौज मस्ती और खुशियाँ मनाना। त्यौहार के दिन हम अपने रिश्तेदारों से मिलते हैं। घर में बहुत सारा रुचिकर खाना बनाया जाता है। मेरी बहन और मैं घर सजाने में अपने पिताजी की मदद करते हैं। हम सब नए कपड़े पहनते हैं। शाम को हम सब मंदिर जाते हैं। जलसे में नाच गाना भी होता है। मेरी मासी भारत से हमारे लिए तोहफे भी भेजती है। हम लोगों का यहाँ अमेरिका में रहने का बहुत फायदा है क्योंकि हमें भारतीय और अमरीकी दोनों त्यौहारों को बड़ी धूम धाम से मनाने का अवसर मिलता है।

नलिनी जैन :

नलिनी १२ वर्ष की हैं और सातवीं कक्षा में पढ़ती हैI नलिनी को कला, चित्रकारी और बेकिंग का शौक हैI

मुझे भारत के सभी त्यौहार मनाना बहुत पसंद है पर दिवाली और होली मेरे मनपसंद त्यौहार हैं। त्यौहार के दिन पूरा परिवार साथ में होता है। दिवाली के दिन हम सभी भाई बहन मिलकर नए-नए कपड़े पहन कर मंदिर जाते हैं। मंदिर में हम पूजा और आरती करते हैं और फिर घर आकर साथ में खाना खाकर हम पूरा दिन मस्ती करते हैं। शाम को हम सभी घर में आरती करते हैं और फिर हम खूब मिठाइयां खाते हैं। फिर हम सभी पड़ोसियों के घर जाकर उन्हें दिवाली की शुभकामनाएं देते हैं। फिर हम छोटे-छोटे पटाखे चलाते हैं। इसी तरह मुझे होली का त्यौहार भी बहुत पसंद है। होली को रंगों का त्यौहार कहा जाता है। होली के दिन भी पूरा परिवार और हमारे सभी मित्र मिलकर रंग बिरंगे गुलाल से होली खेलते हैं। इसलिए मुझे भारत के सभी त्यौहार बहुत पसंद हैं।

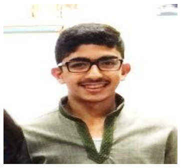

निहाल भोजवानी :

निहाल १२ वर्ष के हैं और सातवीं कक्षा में पढ़ते हैंI निहाल को किताबें पढना, लिखना, बास्केट बाल और फुटबाल खेलने का शौक है।

मुझे त्यौहार मनाना बहुत पसंद है। सभी त्यौहार मुझे अच्छे लगते हैं क्योंकि सभी त्यौहार पर मेरा पूरा परिवार एक साथ समय बिताता है और मेरे घर बहुत सारे अतिथि आते हैं। जब भी घर में चहल पहल होती है, मेरे आस-पास बहुत सारे लोग होते हैं या हंगामा होता है तब मुझे बहुत ख़ुशी मिलती है। मेरी माँ घर को सजाती हैं। मैं अपनी माँ को दिए जलाने में मदद करता हूँ क्योंकि रंगबिरंगे दीपक मुझको बहुत अच्छे लगते हैं। मेरी माँ अच्छे अच्छे पकवान बनाती हैं। मुझे मसालेदार चीजें खाना बहुत पसंद है ख़ास तौर पर चाट। घर के बड़े सदस्य मुझे उपहार देते हैं। लीगो बनाना मेरा मनपसंद क्रियाकलाप है।

सिमरन बिडये :

सिमरन ११ वर्ष की हैं और छठवीं कक्षा में पढ़ती हैंI सिमरन को कत्थक नृत्य, टेनिस खेलना और संगीत सुनने का शौक है।

भारत देश में पूरे साल तरह तरह के त्यौहार मनाए जाते हैं। यहाँ अमरिका में बसे भारतीय लोग भी अपनी संस्कृति का पालन करते हुए पूरे वर्ष त्यौहार मनाते हैं। मकर संक्रांति से त्यौहार का सिलसिला शुरू होकर दीपावली के बाद रुकता है। मुझे दीपावली का त्यौहार सबसे ज्यादा पसंद है। यह त्यौहार दीपों का त्यौहार माना जाता है। लोग अपने घरों को दिए से सजाते हैं और कंदील लगाते हैं। रंग बिरंगी रंगोली से घर सुशोभित करते हैं। पूरे घर में मुँह में पानी भर देने वाली मिठाइयों तथा नमकीन की खशबू आती है। महाराष्ट्र के लोग इस त्यौहार को पूरे चार दिनों तक मनाते हैं । घर के सदस्य नए कपड़े पहनकर मित्रों तथा रिश्तेदारों का स्वागत करते हैं। एक-दूसरे को गले लगाकर बधाईयाँ देते हैं। शाम को लक्ष्मी पूजन के बाद चारों तरफ पटाकों की धूम मच जाती है। दिवाली के दो दिन बाद मनाई जाने वाली भाई-दूज मुझे बहुत पसंद है। इस दिन मेरा भाई मुझे उपहार देता है। सभी लोंगों में खुशियाँ बाँटने वाला, दीयों से माहोल बदलनेवाला यह दिवाली का त्यौहार मुझे सबसे ज्यादा पसंद है।

यशी श्रीवास्तव :

यशी आठवीं कक्षा में पढ़ती हैंI यशी को संगीत, गाना गाने और चित्रकारी का शौक हैI

जब मेरे घर में साफ़ सफ़ाई शुरू हो जाती है तब मुझे पता चल जाता है कि दीपावली का त्यौहार आने वाला है। मुझे दीपावली का त्यौहार सबसे ज्यादा पसंद है। दीपावली रौशनी का त्यौहार है और इस त्यौहार के दौरान मुझे घर सजाना अच्छा लगता है। दीपावली पर मैं अपने घर के बाहर अलग अलग रंगों से रंगोली बनाती हूँ। मैं और मेरी बहन पूजा की थाली सजाते हैं। मेरे पापा पूरे घर में दिये रखते हैं। मैं हर तरह की मिठाई थाली में रखती हूँ। इस अवसर पर हम लोग घर के बाहर झालर लगाते हैं। शाम को हम लोग लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा करते हैं। पूजा करने के बाद हमलोग पटाखे चलाते हैं। फिर हम लोग मिठाई, लावा और लाई खाते हैं। दिवाली का त्यौहार मुझे बहुत प्रिय है।

वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो - दिवाली उत्सव

वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला में हर वर्ष दिवाली बहुत धूमधाम से मनाई जाती है। स्वयंसेवक, छात्र और अभिभावक सभी मिलकर दिवाली मनाते हैं।

इस वर्ष भी दिवाली बड़े धूमधाम से मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना और लक्ष्मी जी की आरती से हुई। उसके बाद छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया। इसमें कुछ छात्रों ने नृत्य और गानों के साथ-साथ भजन भी गाए। छोटे-बड़ों सभी ने ढोल और भारतीय गानों पर नृत्य में भाग लिया।

स्वयंसेवक और अभिभावकों ने मिलकर अलग -अलग तरह का खाना और मिठाईयाँ बनाकर त्योहार का आनंद और दुगना किया। सभी ने मिलकर भोजन और मिठाईयों का स्वाद लिया और एक दूसरे को दिवाली की शुभकामनाएँ दीं।

कक्षाओं में भी दिवाली मनाई गई। प्रथमा-२ कक्षा में छात्रों ने आकाश-कंदील, रंगोली और मिठाई की थाली बनाई। मध्यमा-२ कक्षा में छात्रों ने दिवाली की बंदनवार और झालर बनाई। शिक्षिकाओं ने कक्षा को दीये और रंगोली से सजाया और दिवाली की कहानी सुनाई। छात्रों ने बताया कि वे अपने घरों में दिवाली कैसे मानते हैं।

इस वर्ष पहली बार वेस्ट विंडसर-प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला में “फूड ड्राइव” का आयोजन भी किया गया था। हमारी पाठशाला के छात्र-स्वयंसेवकों ने मिलकर इस फूड ड्राइव का आयोजन किया। छात्रों ने अपने घरों से फूड कैन, सीरिअल बॉक्सेस, जूस बॉक्सेस तथा पास्ता बॉक्सेस लाकर फूड ड्राइव में जमा किये। स्वयंसेवकों ने मिलकर फूड ड्राइव का सारा सामान प्लेंसबोरो पैंट्री में जमा कर दिया।

हमें बहुत गर्व है कि हमारे विद्यालय में सभी शिक्षक-शिक्षिकाएँ, स्वयंसेवक, छात्र और अभिभावक मिलकर हमारी भारतीय परम्परा को जीवंत रखते हुए साथ-साथ त्योहार मानते है और इसके साथ ही अपनी कम्युनिटी की मदद भी करते हैं।

संज्योत ताटके

प्रथमा-२ शिक्षिका

साड़ी

कपिला माने

मैं कपिला माने ईस्ट ब्रन्सविक पाठशाला उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। इस साल मैं हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक हो जाऊँगी। कनिष्ठ से लेकर उच्चस्तर-२ का यह लंबा सफर अविस्मरणीय था। यहाँ की कक्षा, महोत्सव और कर्मभूमि की यादें हमेशा ताज़ा रहेंगी। आगे चलकर पिछले सालों के स्नातक बच्चों की तरह मैं भी "स्वयंसेवक" बनकर हिंदी यू.एस.ए. के साथ रहना चाहूँगी। दिवाली के अवसर पर ईस्ट ब्रन्सविक की पाठशाला में मंच पर अपनी "साड़ी" के बारें में विस्तार से कहीं हुई बातें इस कर्मभूमि के अंक में लिखना चाहती हूँ।

आज मुझे साड़ी में देखकर आप अचंभित होंगे। जी हाँ! आज यहाँ मुझे साड़ी के बारें में जितनी भी जानकारी मिली है, वह आप के साथ बाँटना चाहती हूँ।

साड़ी भारतीय स्त्रियों का मुख्य परिधान/पोशाक माना जाता है। यह पांच से नौ यार्ड/गज तक लंबा कपड़ा होता है, ब्लाउज या चोली के साथ पहना जाता है। भारत के लगभग सभी प्रान्तों में साड़ी का हर रोज़ पहराव/पहनावा होता है। आज के फैशन के दौर में इसे आधुनिक तरीके से पहना जाता है। बड़े-बड़े होटलों में, पाठशालाओं में, एअर-होस्टेस, दफ्तरों में महिलाएं, भारतीय संस्कृती का प्रतीक "साड़ी", गणवेश के रूप में अपना चुकी हैं। इस पोशाक को विश्व की प्रसिद्ध नृत्यांगनाएँ एवं हालीवुड की अभिनेत्रियाँ अपनी कला द्वारा बहुत सुंदर ढंग से प्रदर्शित करती हैं।

साड़ी पहनने के प्रकार, प्रान्त की संस्कृति, वातावरण और रुचियों पर आधारित हैं। मुख्य प्रांतों में पहनी जाने वाली साड़ियों के तरीक़े कुछ इस प्रकार है। महाराष्ट्र की कास्टा, तमिलनाडू की मडिसार, आंध्र प्रदेश की निवि (जो की अभी सारे भारत में ज्यादा तर महिलाएँ पहनना पसंद कर रही हैं), बंगाली, ओडीआई, नेपाली, गुजराती, राजस्थानी, कर्नाटक की कोडागु, आसाम की मेखेला, मणिपुरी, खासी, मल्याली आदि प्रकार हैं। दक्षिण भारत की साड़ियों में कांजीवरम साड़ी पटोला साड़ी और हकोबा मुख्य हैं। मध्य प्रदेश की चंदेरी, उत्तर प्रदेश की तांची, जामदानी जामावार महाराष्ट्र की पैठानी, आसाम की मूंगा रेशम, उड़ीसा की बोमकई, राजस्थान की बंधेज, गुजरात की पटौला, बिहार की तसर, छतीसगढ़ी और झारखंडी कोसा रेशम, दिल्ली की रेशमी साड़ियाँ एवं पश्चिम बंगाल की बालूछरी तथा कांथा टंगैल आदि प्रसिद्ध साड़ियाँ हैं।

बेटियाँ

मेरा नाम कीर्ति मंडल है। मैं पिस्कैटवे न्यू जर्सी की प्रथमा-१ की शिक्षिका हूँ। इस कविता का शीर्षक है "बेटियाँ"। इस कविता की प्रेरणा मेरी बेटी सृष्टि है।

मैं नन्ही सी जान
क्या जानूँ क्या होती हैं बेटियाँ?
पर माँ कहती है
पिता का अभिमान,
माँ की परछाई होती हैं बेटियाँ
पैदा होती जिस आँगन में
उस घर पर एहसान होती हैं बेटियाँ

मैं नन्ही सी जान
क्या जानूँ क्या होती हैं बेटियाँ?
बाप के गुस्से पर जो लगा दे ताला
खिलखिलाहट से जो घर में भर दे उजाला
उस बाप की जान
और आँगन की शान होती हैं बेटियाँ
ये होती हैं चिड़ियों जैसी
जिसे आज यहां
कल वहां उड़ जाना है
माँ बाप के पास तो बस
दो पल का ही रह जाना है

मैं नन्ही सी जान
क्या जानूँ क्या होती हैं बेटियाँ?
और नहीं जानना है मुझे
क्या होती हैं बेटियाँ?
में तो बस माँ के हाथ से
दो निवाले खाना चाहती हूँ
बाबा के संग
कुछ देर खेलना चाहती हूँ
दादा जी की छड़ी पकड़ कर
उनकी लाठी बनना चाहती हूँ
दादी के आंचल में छुपकर
गुड्डे गुड़िया की
कहानी सुनना चाहती हूँ
भैया के संग होली दिवाली राखी पर
लड़ते खेलते
खूब हँसना-हसाना चाहती हूँ
सखियों के संग मिलकर
कागज़ की कश्ती बनना चाहती हूँ
माँ थक जाए तो उसका
हाथ बटाना चाहती हूँ
बाबा के सपनो में पंख लगा कर
मैं भी अफसर बनना चाहती हूँ

नहीं जानना है मुझे
क्या होती हैं बेटियाँ?
जाने क्यों कहते हैं लोग
पराई होती हैं बेटियां
बेटी से याद आया मुझे भी माँ कहती है बेटी
क्या मैं हूँ वो जो कहलाती है पराई?
क्या ये बाबा मेरे नहीं?
क्या बेटा होती तो माँ मेरी होती?
क्या सच में जाना होगा मुझे
छोड़ ये घर ये आँगन दूर कहीं??
नहीं नहीं जानना है मुझे
क्या होती हैं बेटियाँ
मैं तो बस मम्मी पापा की
परी बन कर रहना चाहती हूँ
मैं नन्ही सी जान
क्या जानूँ क्या होती है बेटियाँ ?

पिस्कैटवे प्रथमा-१

कीर्ति मण्डल

हमने हमेशा से खेल-खेल में सीखने को महत्व दिया है। इसका उदाहरण ये चित्र हैं जिसमें हमने बच्चों को गिनती सिखाई और उसे याद रखने के लिए उनसे ऐसे खिलौने बनवाये जिसे वे रोज़ खेलते समय उपयोग कर सकें और ये हिन्दी की गिनती उन्हें खेल-खेल में ऐसे याद हो जाये जिसे वे चाह कर भी भुला न सकें।

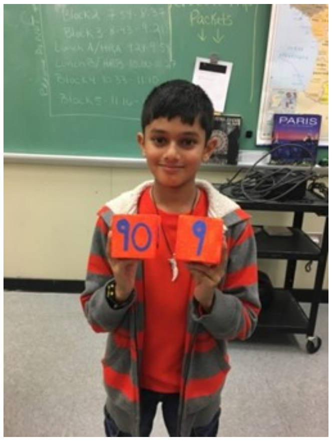

इस साल दिवाली के शुभ अवसर को हमने एक अनोखे अंदाज़ में मनाया। दिवाली के महत्व को समझाते हुए हमने उन्हें परिवार के साथ मिलकर त्यौहार मनाने का महत्व समझाया और इस को समझने के लिए हमने एक रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसमें सिर्फ वही बच्चे भाग ले सकते थे जिनके परिवार में से कोई उनके साथ हो। हमने उन्हें बताया की दिवाली पर सब अपने घर रंगोली से सजाते हैं इसलिए यह आयोजन किया गया है। सभी बच्चों ने सहपरिवार इसमें हिस्सा लिया और इस त्यौहार का आनंद उठाया। दिवाली के शुभ अवसर पर जहाँ हमने एक तरफ बच्चों को रंगोली प्रतियोगिता के माध्यम से इस त्यौहार का महत्व और परिवार और परंपरा सिखाई, वहीँ दूसरी ओर हमने उन्हें इस त्यौहार को मनाने का एक और पहलू सिखाया - पटाखे। हमने बच्चों से पटाखे बनाने को कहा जिसे बनाने में उन्हें खूब आनंद आया।

चैरी हिल पाठशाला - मध्यमा-१

मेरा नाम दीपाली जैन है। मैं पिछले छः वर्षों से चैरी हिल पाठशाला से जुड़ी हूँ और पाँच वर्षों से मध्यमा-१ के छात्रों को हिंदी पढ़ा रही हूँ। इस वर्ष श्रीमती शिवी गुप्ता जी के साथ बच्चों को पढ़ाने में बहुत आनंद आ रहा है। इस बार विद्यार्थियों ने मध्यमा-१ में पढ़ाए गए त्यौहार और शब्दावली से प्रेरित होकर बहुत मनोरंजक कहानियाँ लिखी हैं, जिन्हें उन्होंने बहुत रचनात्मक तरीकों से प्रस्तुत किया है। बच्चों ने इसमें 'आओ सीखें शब्द' किताब की शब्दावली से सम्बंधित चित्रों और स्वयं बनाये गए चित्रों का भी प्रयोग किया है। उनके इस प्रयास पर हमें अत्यंत हर्ष और गर्व है।

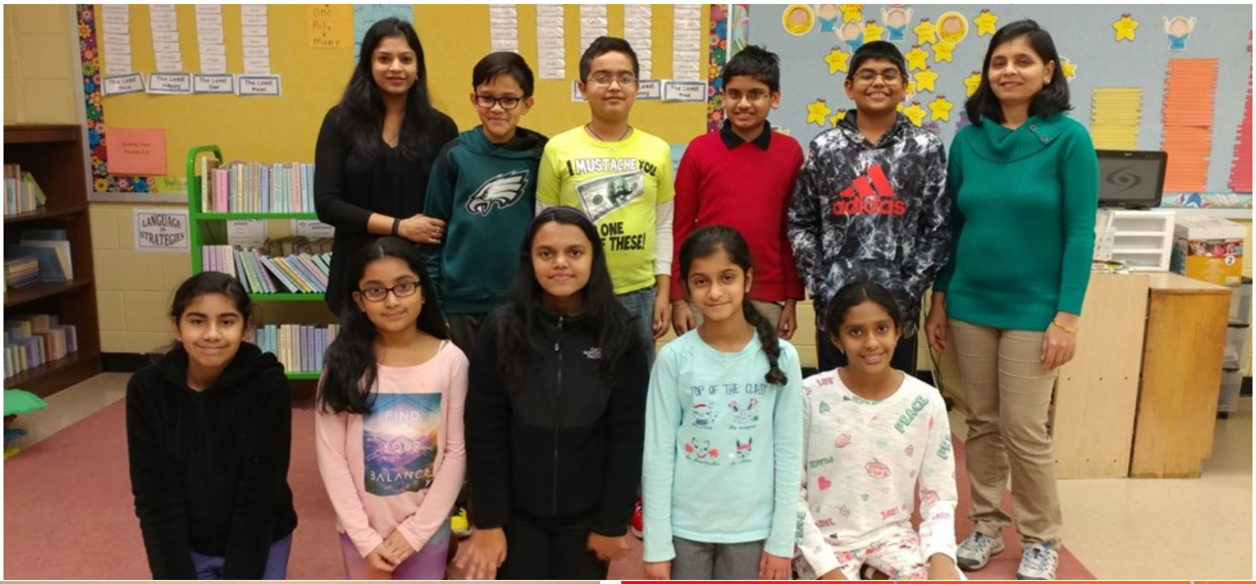

एक दिन, एक कहानी

ईशान सात बजे उठ गया। उसने घड़ी और चश्मा पहना। उसके बाद वह हाथ और मुँह धोकर और स्नान कर के तरोताज़ा हो गया। नाश्ते के बाद वह पाठशाला गया। उसकी पाठशाला में उसकी गणित की परीक्षा थी। घर आकर उसने मछली और चावल खाया।
उसके बाद उसने गृह कार्य किया और गाना सुना।
उसकी माँ ने उसे आलू लेकर आने के लिए कहा। उनके पास सात डॉलर बचे थे। उससे उसकी मिठाई ख़रीदी।
आठ बजे उसने रात का खाना खाया। खाने में पूड़ी और सब्ज़ी खाई। नौ बजे सो गया।

अगले दिन तो फिर नई कहानी है।

ईशान प्रभाकर

रमा की दिवाली (सारा सोनी)

मेरा नाम रमा है। आज दिवाली है। चाची, मामी और दादी जी आए। मैंने घर में दीपक जलाए। पुजारी आए और तुलसी लाए। मुझे गुड़िया, किताब और रुपये मिले। मैंने पटाखे और फुलझड़ी चलाई। मैंने पनीर, खिचड़ी, अचार, आलू और पूड़ी खाई। मैंने चमचम, खीर और बर्फी खाई। मुझे दिवाली पसंद है।

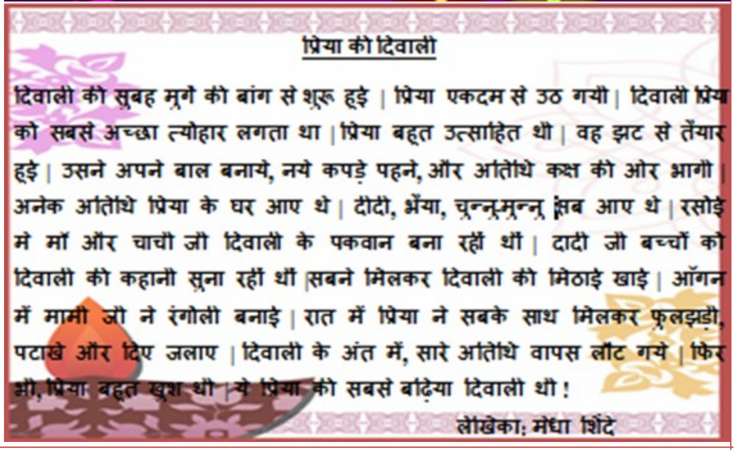

प्रिया की दिवाली

दिवाली की सुबह मुर्गे की बांग से शुरू हुइ | प्रिया एकदम से उठ गयी | दिवाली प्रिया को सबसे अच्छा त्योहार लगता था | प्रिया बहुत उत्साहित थी | वह झट से तैयार हुइ | उसने अपने बाल बनाये, नये कपड़े पहने, और अतिथि कक्ष की ओर भागी | अनेक अतिथि प्रिया के घर आए थे | दीदी, भैया, चुन्नू-मुन्नू सब आए थे | रसोई मे माँ और चाची जी दिवाली के पकवान बना रहीं थीं | दादी जी बच्चों को दिवाली की कहानी सुना रहीं थीं | सबने मिलकर दिवाली की मिठाइ खाइ | आँगन में मामी जी ने रंगोली बनाइ | रात में प्रिया ने सबके साथ मिलकर फुलझड़ी, पटाखे और दिए जलाए | दिवाली के अंत में, सारे अतिथि वापस लौट गये | फिर भी, प्रिया बहुत खुश थी | ये प्रिया की सबसे बढ़िया दिवाली थी !

लेखिका: मेधा शिंदे

दिवाली का मज़ा (अवनी मलिक)

मेरे मामी, चाची, नानी, दादी, मामू, चाचू, नानु और दादू आज मेरे नए घर आ रहे हैं। दीदी आज दुकान जाकर लीची, आलू और दूध लायी। दीदी ने पूड़ी, खीर, पनीर और जलेबी बनायी। जब अतिथि घर आए, हम झटपट ऊपर दौड़े और चूड़ी पहनी। फिर हमने दिवाली की कहानी सुनी। हमने अतिथियों के लिए पानी भरा। हम ने गाने सुने और डमरू बजाया। हम ने खाना खाया। दिवाली के दिन अतिथि हमारे घर पर रुके और हमें बहुत मज़ा आया।

गाँव की यात्रा (अद्वेत वासन)

एक लड़का अपनी दीदी के साथ गाँव गया। हर दिन वे बहुत सुबह जागते थे। बकरियों को चारा खिलाते थे। सुबह सवेरे उनकी चाची गाय का ताज़ा दूध उनको पिलाती थीं। खेत के पास एक नदी थी। नदी में बहुत मछलियाँ थीं। नदी का पानी कभी-कभी हीरे की तरह दिखता था। सूरज डूबने के समय वे बाग़ में खेलते थे और झूला झूलते थे। उन दोनों को बहुत आनंद आता था।

त्योहार (ऋतु कुलकर्णी)

भारत में हालाकि बहुत सारे त्योहार है जैसे दीपावली, दशहरा,होली ,मकर संक्रांति, पोंगल,आदी । दीपावली, भारत में हिन्दूओं द्वारा मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है।
दीपावली के तीन दिन पहले हम अपने घर को रोशनी से सजाते हैं ।रात को यह रोशनी अति खूबसूरत दिखती है ।
दीपावली के दो दिन पहले हम हमारा छोटा आंगन सजाते हैं । संध्या के समय घर-आंगन जगमगा उठते हैं। दीपावली के एक दिन पहले हम दुकान जाकर घर के बच्चों के लिए गाड़ी, घड़ी, कपड़े, अंगूठी जैसे उपहार लेते हैं ।
दीपावली के दिन विभिन्न प्रकार के व्यंजन बनाते हैं जैसे की समोसे, कचौड़ी, जलेबी, परांठे, पूड़ी, चावल इत्यादि ।

उस दिन रात हमारे घर बहुत अतिथि आते हैं। रात्रि में पटाखे चलाए जाते हैं। दीपावली की बधाइयों के आदान-प्रदान का सिलसिला चल पड़ता है।

रवि और उसकी दुकान - ईशा कालेकरी

एक दिन रवि ने एक दुकान खरीदने का फैसला किया। उसकी दुकान में फल, सब्जियाँ, और कई अन्य चीज़ें थीं। एक दिन सूर्योदय के बाद रवि की बहन उसकी दुकान आई। रवि की बहन चतुर थी। वह किशमिश और मूली खरीदना चाहती थी। रवि ने उसे बताया कि वे चीज़ें गलियारे तीन में रखी हैं।रवि की बहन ने देखा की उसकी दुकान धूल से भरी है और इसलिए वहाँ लोग उससे सामान खरीदने नहीं आते। उसने रवि को झाड़ू से दुकान साफ करने को कहा। रवि ने झाड़ू लेकर दुकान साफ की। अब उसकी दुकान साफ है। सफाई के बाद रवि की दुकान पर बहुत लोग सामान खरीदने आए।

समीर की परीक्षा (आदि सेल्वकुमर)

समीर की कई रुचियाँ थीं। उसे फुटबॉल खेलना और पुल के ऊपर चलना पसंद था। उसे झील पर कहानी कहना और खीर खाना पसंद था। लेकिन उसे किताबें पढ़ना, काम करना या दुकान जाना पसंद नहीं था। उसकी माता ने उससे कहा कि आलस अच्छा नहीं है परंतु उसने उनकी बात नहीं सुनी। एक दिन, जब सूरज उगा, समीर नीली कमीज़ पहनकर पाठशाला के लिए गया। चिड़ियाँ चहक नहीं रहीं थी और आकाश में बादल नहीं थे। यह दिन समीर के लिये अच्छा नहीं था।

समीर गणित कक्षा में बैठा हुआ था और मिठाई खाने के बारे में सोच रहा था। बूढ़ी शिक्षिका लिखित परीक्षा के परिणाम वापस दे रही थी। समीर ने अपने परिणाम को देखा। वह चौंक गया। उसके कागज पर काले रंग में एक शून्य था। खाने के समय, समीर के साथी परीक्षा के परिणाम के बारे में बात कर रहे थे। लेकिन, समीर चिंतित था। एक और परीक्षा अगले सप्ताह के लिए निर्धारित की गयी। जब वह घर गया, वह अपने कमरे में चला गया और दरवाजा बंद कर दिया। उसने सोचा और अंत में फैसला किया की वह परीक्षा की तैयारी अच्छे से करेगा।

अगले सप्ताह वह बेसब्री से परीक्षा के परिणाम का इंतजार कर रहा था। इस बार उसे सौ में से सौ अंक मिले । समीर बहुत खुश था।

गीता की गुड़िया ~ नित्या बुसन्नगारि

गीता चल कर दुकान गई । उसको गुड़िया और नीबू खरीदने थे। दोनो चीजों का दाम सात रूपये था। उसके पास बस तीन रूपये थे। गीता और पैसे लाना भूल गई थी। गीता ने दुकान मे दीदी को देखा। दीदी ने गीता को चार रूपये दिये। गीता ने दोनो चीजें खरीदीं। रात हो गई। तारे निकल आए । गीता घर जाकर सो गयी। शुभरात्री।

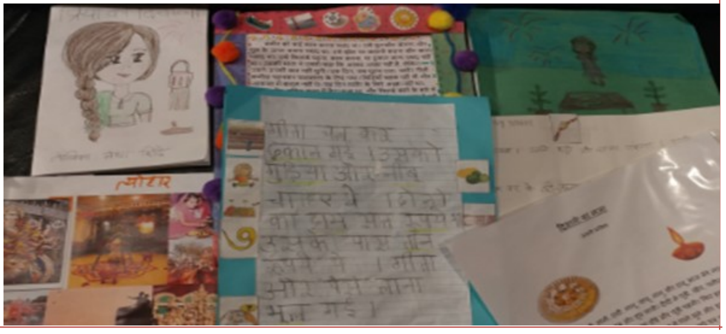

दीपावली : अच्छाई की बुराई पर विजय का त्यौहार !

नमस्कार, मैं, इंदु श्रीवास्तव, साउथ ब्रंस्विक हिंदी पाठशाला में पिछले ४ सालों से मध्यमा-१ के बच्चों को हिंदी मात्रा की शिक्षा दे रही हूँ। इस वर्ष शिवानी मित्तल जी कक्षा सहशिक्षिका और निखिला छात्र स्वयंसेवक हैं। गत नवम्बर माह में कक्षा के विद्यार्थियों ने मनपसंद भारतीय त्यौहार की चर्चा की थी और सर्दियों की छुट्टियों में “आ, इ, ई, उ, ऊ” तक की मात्रा तक सीखे शब्दों का उपयोग कर एक प्रस्तुति तैयार की थी। उनके लेखन और चित्रण को यहाँ प्रदर्शित करते हुए हमें अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है।

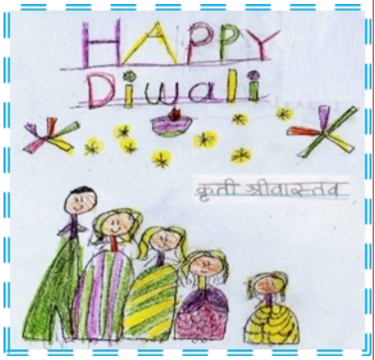

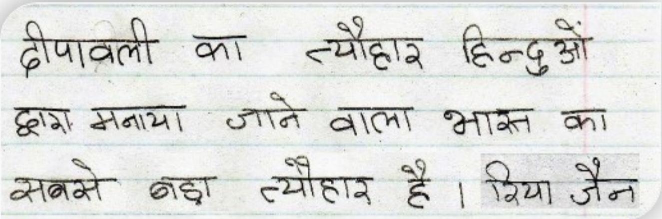

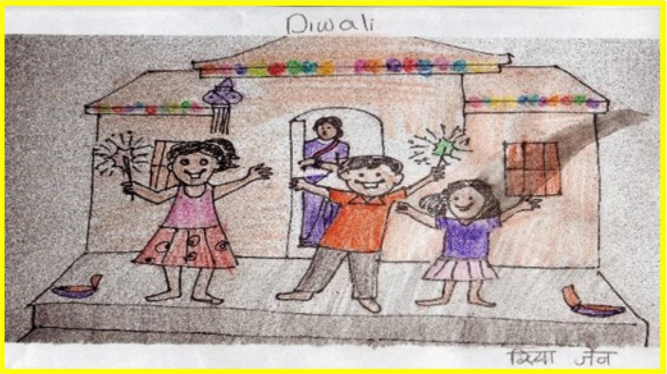

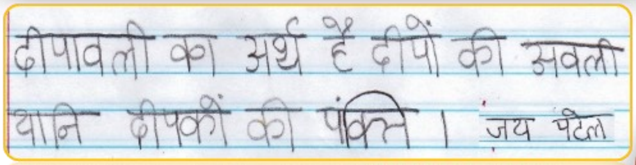

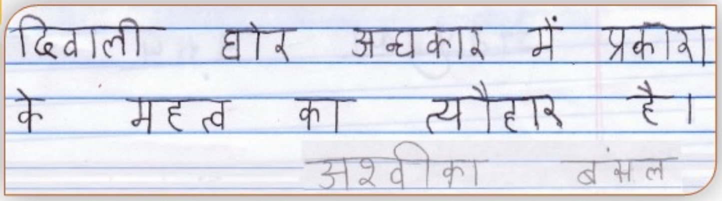

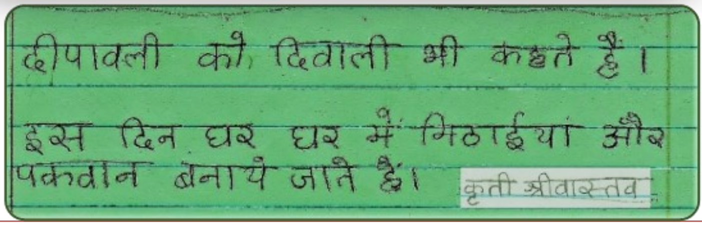

सभी जन पहले घर की सफाई करते हैं और शाम को नए कपडे पहनकर पूजा उपासना करते हैं। सत्यता शर्मा

अधिकतर मीहलाएँ इस दिन सुंदर वस्त्र लहंगा या साड़ी पहनती हैं। अक्षिता भसीन

दिवाली के दिन पुरुष भी कुरता और पजामा पहन कर पूजा करते हैं। आद्या जैन

इस दिन गणेश जी, लक्ष्मी जी और कई जगह बुद्ध भगवान की पूजा होती है। अबीर पटेल

इस दिन भगवान राम, अपनी पत्नी सीता एवं लक्ष्मण भाई के साथ १४ वर्ष का वनवास बिताकर अयोध्या लौटे थे। लिरिका खन्ना

दिवाली की रात को बहुत से दीपक जलाये जाते हैं।
कुछ लोग फुलझड़ी और पटाखे भी फोड़ते हैं। सइशा धाम

तभी से दिवाली को दीपोत्सव के रूप में मनाया जाता है। सभी लोग मिठाई, नमकीन और फल प्रसाद में चढ़ाते और खाते हैं। शार्दुल कुलकर्णी

दिवाली के दिन सभी अपने परिजनों और मित्रों से भी मिलते हैं, और दिवाली की शुभकामानायें देते हैं। श्रुति अय्यर

हम सभी को उल्लास से भरपूर दिवाली का त्यौहार बहुत अच्छा लगता है। रिया गुप्ता

दीपावली का त्यौहार अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। श्रीराम सुन्दरम

साऊथ ब्रंस्विक – मध्यमा-१

पुनीत महेश्वरी, अदीती महेश्वरी, पृथवी ओकडे

दशहरा - कृशा शाह

दशहरे के दिन भगवान राम ने रावण का वध कर माता सीता को छुड़वाया था। इस दिन असत्य पर सत्य की जीत हुई थी। इसे विजय दशमी भी कहते हैं।

गणेश चतुर्थी - मोहित शाह

गणेश चतुर्थी पर हम भगवान गणेश जी का जन्मदिन मनाते हैं और पूजा करते हैं। गणेश जी की मूर्ति लाते हैं और सजाते हैं। १ से १० दिन पूजा करते हैं। मोदक का भोग लगाते हैं। मुझे गणेश चतुर्थी का त्यौहार पसंद है।

धनतेरस - ट्विषा जोशी

यह हिन्दुओं का प्रसिद्ध त्यौहार है तथा इसी दिन से दिवाली के त्यौहार का प्रारम्भ होता है। इस दिन धन की पूजा करते हैं।

गणगौर - तनीशा किनकर

गणगौर का त्यौहार पूरे राजस्थान में सबसे रंगीन रूप में मनाते हैं। गणगौर चैत्र महीने में आता है। इस त्यौहार में १६ दिनों तक शिव पार्वती की पूजा करते हैं।

राखी - शैली ठक्कर

राखी भाई बहन का सबसे प्यारा त्यौहार है। इस त्यौहार पर बहन अपने भाई की दाहिनी कलाई पर राखी बांधती है।

साऊथ ब्रंस्विक – मध्यमा-१

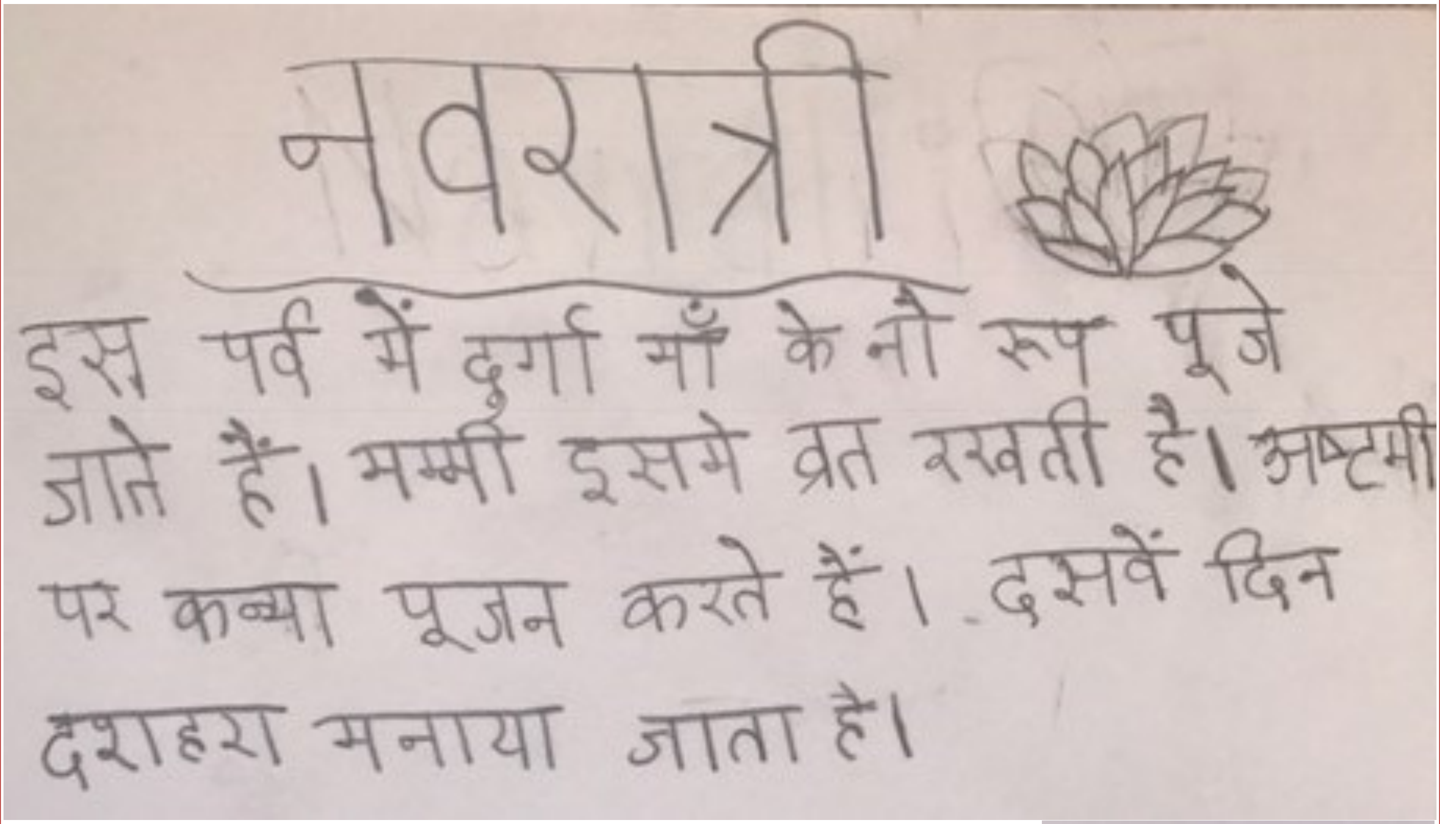

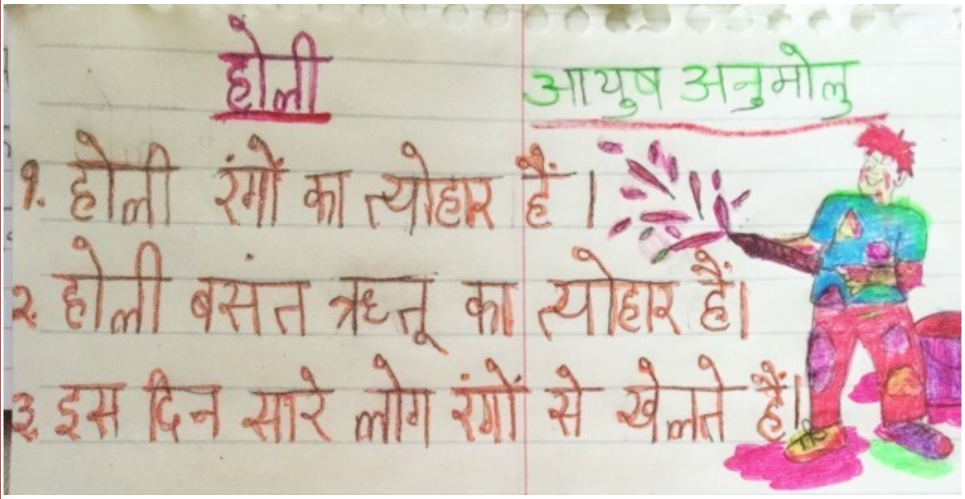

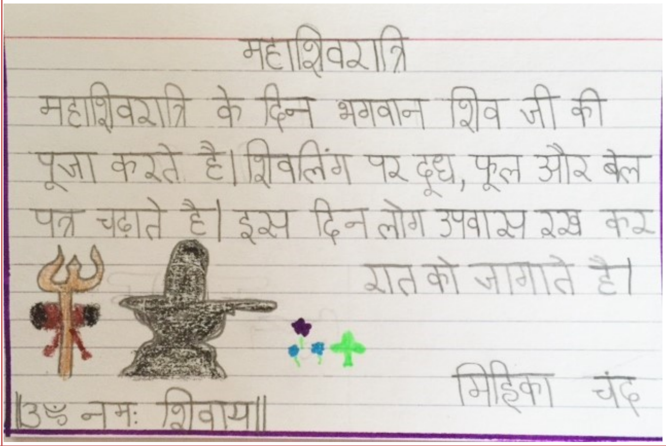

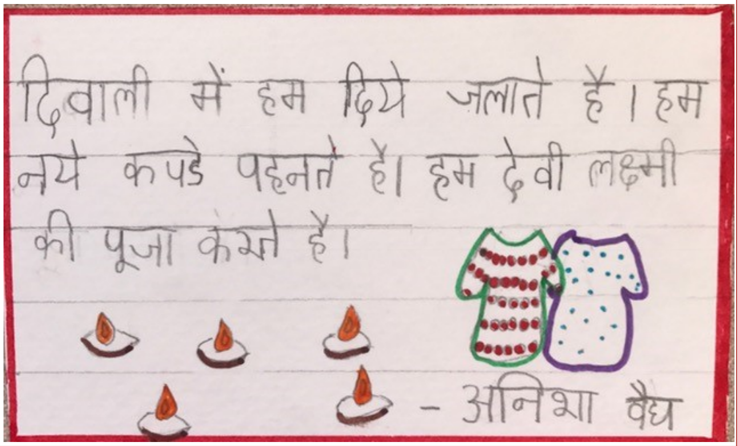

मोनरो मध्यमा-१ पाठशाला

डॉ रश्मि गुर्रम एवं तेजल सरकार

मेरा नाम डॉ रश्मि गुर्रम है। मैंने कैमिस्ट्री में डॉक्टरेट की है। मैं मध्यमा-१ की अध्यापिका हूँ। मुझे पढ़ाना बहुत पसंद है। मैं भारत में सीनियर लेक्चरर के पद पर कार्यरत थी। वर्तमान में सीनियर कैमिस्ट के पद पर कार्यरत हूँ। मेरी कक्षा के बच्चों ने अपने मनपसंद त्यौहार का संक्षेप में वर्णन किया है। मेरे साथ मेरी सह अध्यापिका भी है। उनका नाम तेजल सरकार है।

रक्षाबंधन

मेरा नाम वेदांत है। मुझे रक्षाबंधन बहुत अच्छा लगता है, जिसे हम राखी भी कहते हैं। यह अगस्त के महीने में मनाया जाता है, जिसे हिंदी में श्रावण मास कहते हैं। यह हिंदुओं के प्रमुख त्यौहार में से एक है। यह त्यौहार भाइयों और बहनों के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को तिलक लगाती हैं और हाथ में राखी बांधती हैं। भाई अपनी बहनों को उपहार देते हैं और रक्षा का वचन देते हैं। इस दिन घर में कई तरह के पकवान बनते हैं। राखी के दिन मैं अपने परिवार के साथ मंदिर जाता हूँ। मेरी बड़ी बहिन है। वो मुझे राखी बांधती है। जब वह मुझे राखी बांधती है तब मुझे बहुत अच्छा लगता है।

दशहरा

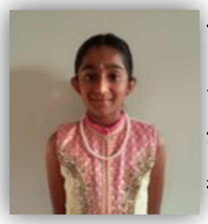

मेरा नाम प्रियंका वीरा नागेस्वरन है। मेरा पसंदीदा त्यौहार दशहरा है। इस दिन भगवान् श्री राम ने रावण का वध किया था। इससे बुराई पर अच्छाई की जीत हुई। दशहरा भारत का एक बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह भारत के सभी राज्यों में मनाया जाता है। दशहरा के दिन मैं और मेरा परिवार पपियानी उध्यान जाते हैं। वहां पर लोग रंग बिरंगे पोषाक पहन कर आते हैं। हम रामलीला और भारतीय नृत्य का आनंद लेते हैं। कुछ समय बाद रावण का पुतला जलाया जाता है। रावण दहन देखने के बाद हम अपने मनपसंद पकवानों का आनंद लेते हैं। इस तरह हम अमेरिका में भारतीय त्यौहार मनाकर भारतीय संस्कृति से जुड़े रहते हैं।

होली

मेरा नाम अनन्या चौधरी है। मैं मध्यमा-१ की छात्रा हूँ। मैं आपको अपने पिछले साल के होली का अनुभव बताना चाहती हूँ। मैं पिछले वर्ष अपने माता पिता और बड़ी बहन के साथ भारत गई थी। भारत बहुत सुंदर देश है। होली के दिन मेरी माँ, चाची जी और दादी जी सभी लोग मिलकर बहुत सारे पकवान बना रहे थे। मेरा मनपसंद दहीवडा भी था। फिर हमलोग सब बच्चे छत पर चले गए। वहाँ बड़ी सी बाल्टी में रंग भरकर रखा था। मैं अमेरिका से अपना वाटर गन ले गई थी, उससे मैंने सभी लोगों के ऊपर रंग डालना शुरू कर दिया। मुझे ये देखकर आश्चर्य हुआ कि कोई भी नाराज नहीं हो रहा था मेरी माँ भी नहीं। दोपहर में नहाने के बाद शाम को फिर से सभी लोगो ने गुलाल के साथ होली खेली। बहुत सारे लोग आये। हम लोग भी पडोसी के घर गए। बहुत सारे पकवान खाये। बहुत सारे पकवान खाये। फिर मैंने अपनी माँ से कहा होली मेरा मनपसंद त्यौहार है। अब मैं हर वर्ष यहाँ आउंगी।

नवरात्रि

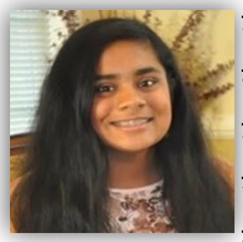

मेरा नाम तन्वी पटेल है। मैं आपको नवरात्री के बारे में बताना चाहती हूँ। यह हिंदुओं का बहुत ही महत्वपूर्ण त्यौहार है। गुजरात में यह त्यौहार बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। नवरात्री नौ दिनों तक मनाया जाता है। इन दिनों में माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। यह माना जाता है कि इन दिनों में माँ दुर्गा ने महिंसासुर राक्षस का वध किया था और बुराई के ऊपर सच्चाई की विजय हुई थी। इसी जीत की ख़ुशी में नवरात्री मनाई जाती है। यह त्यौहार नौ दिनों तक माँ की आरती तथा गरबा-रास खेल के मनाया जाता है। इन दिनों में कन्या पूजा भी की जाती है। नवरात्री के दसवें दिन दशहरा मनाया जाता है। नवरात्री के दिनों में सभी लोग नया सामान खरीदते हैं तथा नए कपड़े पहनते हैं।

दुर्गा पूजा

मेरा नाम श्रेयोशी घोष है। हम लोग भारत के बंगाल राज्य से हैं। हमारे परिवार में दुर्गा पूजा का बहुत महत्व है। दुर्गा पूजा भारत के सभी राज्यों में मनाये जाने वाले प्रमुख त्यौहार में से एक है। दुर्गा पूजा मुख्यतः बंगाल में बड़े धूम धाम से मनाई जाती है। दुर्गा पूजा अक्टूबर या नवम्बर के महीने में होती है। हम लोग पूरे परिवार समेत पूजा में भाग लेते हैं। दुर्गा पूजा का उत्सव चार दिन तक चलता है। ये चार दिन हम लोग बहुत मजा करते हैं। नए कपडे पहन कर मंडप में जाते हैं। हम लोग मित्रों के साथ सारा दिन मंडप में घूमते तथा नाच गाना करते हैं। हमारे परिवार में यह त्यौहार बड़े धूम धाम से मनाया जाता है। माँ दुर्गा शक्ति की देवी कही जाती हैं। भारत में इस दिन विध्यालय में अवकाश होता है।

गणेश-चतुर्थी

मेरा नाम श्रेया कोनकल है। भारतीय परिवारों में गणेश चतुर्थी का बहुत महत्व है। यह त्यौहार चौदह दिनों तक मनाया जाता है। इसमें हम चौदह दिनों तक भगवान गणेश की पूजा तथा आरती करते हैं। यह पूजा तथा आरती सभी परिवार के सदस्यों तथा मित्रों के साथ की जाती है। इस त्यौहार में हम कई प्रकार की मिठाइयाँ तथा प्रसाद बनाते हैं। मिठाई के साथ हम परिवार में प्यार भी बाँटते हैं। मेरे घर में मेरी माँ मोदक और लड्डू बनाती हैं। गणेशजी को विनायक कहा जाता है। हम गणेश चतुर्थी के दिन सबके घर में जाकर भगवान गणेश के दर्शन करते हैं। मंदिर में गणेश जी का उत्सव होता है। चौदहवें दिन हम भगवान गणेश को नदी में विसर्जित करते हैं। विघ्नेश्वर सभी विघ्नों को दूर करते हैं और हम बच्चों को विध्या और बुद्धि देते हैं। मुझे गणेश चतुर्थी बहुत अच्छी लगती है।

दिवाली

शिखा अग्रवाल

मेरा नाम शिखा अग्रवाल है। मैं पिस्काटवे हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ती हूँ। मैं तेरह साल की हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी कक्षा में जाना बहुत पसंद है। मेरे वहाँ बहुत सारे मित्र हैं और हम सब हिन्दी में बात करते हैं। हिन्दी के अलावा मुझे तैराकी बहुत पसंद है। मैं हर हफ्ते तैराकी स्पर्धा में जाती हूँ।

कहते हैं कि दिवाली के दिन राम जी वनवास पूरा करके अयोध्या लौटे थे। इस ख़ुशी में सब लोग अपने घर में दिए जलाते हैं। हर साल, कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन हम दिवाली मनाते हैं। यह हम लोगों का सबसे बड़ा त्यौहार है। दिवाली के पहले हम अपने घर की सफाई करते हैं और सजाते हैं। मैं और मेरे पिताजी घर की छत पर लाईट्स लगाते हैं। फिर हम मम्मी के साथ बहुत सारी मिठाइयाँ बनाते हैं। ये सारी मिठाई पूजा में रखते हैं। मैं और मेरी बहन भारत से लाये हुए नये कपड़े पहनते हैं। जब सब लोग आ जाते हैं, हम पूजा शुरू करते हैं। दिवाली में हम गणेश जी और लक्ष्मी जी की पूजा करते हैं। इस दिन मेरी माँ बहुत सारे पकवान भी पकाती हैं। पूजा के बाद हम सब भोजन और बहुत सारी मिठाई खाते हैं। खाना खाने के बाद हम सब बाहर जा कर पटाखे जलाते हैं। सब के साथ पटाखे जलाने में बहुत मज़ा आता है। मझे सबसे ज्यादा मज़ा अनार जलाने में आता है। मैं तीन-चार एक साथ रख कर जलाती हूँ। लेकिन दिवाली, पटाखे और खाने के बारे में नहीं है। दिवाली का उद्देश्य यह है: अपने परिवार और मित्रों के साथ समय बिताओ और खुश रहो। मुझे दिवाली का त्यौहार बहुत पसंद है।

भारत के त्यौहार

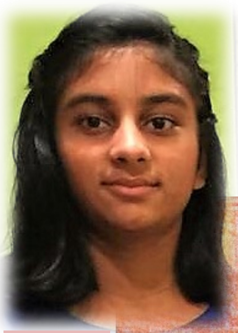

मेरा नाम ईशा श्रीवास्तव है। मैं साउथ ब्रंस्विक हिन्दी पाठशाला की उच्च स्तर-एक कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं ग्यारह साल की हूँ। मुझे चित्रकारी में बहुत रुचि है। इस चित्र में भारत के सभी प्रदेश के त्यौहार का वर्णन किया गया है।

बदला

रोमा वैसे तो सातवीं कक्षा की छात्रा हैं, पर हिंदी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ में पढ़ती हैं। ये पिछले ८ सालों से हिंदी यू.एस.ए. (चैरी हिल) की विद्यार्थी रही हैं, और हिंदी पढ़ने में इनकी बहुत रुचि है। इन्हें पियानो बजाना पसंद है, और इनका प्रिय खेल टेनिस है। रोमा को कहानी की किताबें पढ़ने का बेहद शौक है, और ये कहानी एवं छोटी-छोटी कविताएँ भी लिखती हैं। इन्हें कविता पाठ प्रतियोगिता में काफी रूचि है, इन्होंने हर साल हिंदी महोत्सव में भाग लिया है।

अध्यापिका: हमारी कक्षा की एक विद्यार्थी को विज्ञान में पूरे राज्य में सबसे अधिक अंक मिले हैं। उसका नाम अंजली सिंह है।

अंजली: मैं? अध्यापिका: जी हाँ, तुम। यहाँ आकर अपनी ट्राफी ले लो।

क्लास के सभी बच्चे खुश होकर ताली बजाते हैं, सिवाय प्रिया के, जिसने आज तक हर एक साल यह ट्राफी जीती थी।

प्रिया ***(अपने आप से)***: मैं कैसे हार सकती हूँ? अंजली को यह नही जीतना चाहिए था। मुझे उससे बदला लेना होगा। किन्तु कैसे?

दो-तीन दिन बाद प्रिया देखती है कि अंजली का गणित टेस्ट पेपर अध्यापिका ने मेज पर रखा है।

प्रिया ***(अपने आप से)***: मैं ऐसा करती हूँ कि अंजली के पेपर में उत्तरों को बदल देती हूँ। उसे पता चलना जरुरी है कि कक्षा में सबसे तेज विद्यार्थी कौन है।

प्रिया जल्दी-जल्दी उत्तरों को बदल देती है, तभी उसे पदचाप सुनाई देती है।

अध्यापिका: प्रिया, क्या हो रहा है? तुम क्या कर रही हो?

प्रिया: कुछ भी तो नहीं। मैं अपना पेंसिल बाक्स भूल गयी थी। वही लेने आई थी।

अध्यापिका: ओह। एक सेकंड के लिये मुझे लगा कि कहीं तुम अंजली के पेपर पर तो कुछ नहीं लिख रही । मुझे मालूम है कि तुम विज्ञान की ट्राफी न जीतने के कारण दुखी हो।

प्रिया: ***(चुप रही)***

अध्यापिका: मुझे खुद पर विश्वास नहीं हो रहा है कि मैंने तुम्हारे बारे मे ऐसा सोचा। तुम्हारे जैसी अच्छी लड़की ऐसा कैसे कर सकती है?

प्रिया: धन्यवाद, टीचर। मुझे जाना है, देर हो रही है।

प्रिया तेजी से बाहर चली जाती है

कुछ दिनों बाद

अंजली (गणित का टेस्ट मिलने पर): हे भगवान! ये कैसे हो गया?

प्रिया: क्या हो गया?

अंजली: मैं गणित की परीक्षा मे फेल हो गई।

प्रिया: ऐसा कैसे हो सकता है?

अंजली सुबक-सुबक कर रोने लगती है। प्रिया को यह देखकर बहुत बुरा लगता है और उसे अपनी गलती का अहसास होता है।

प्रिया: अंजली, मै तुमसे कुछ कहना चाहती हूँ। तुम्हारे ट्राफी जीतने पर मुझे बहुत दु:ख हुआ। मैंने बदला लेने के लिये गणित पेपर के सारे उत्तर बदल डाले। मुझे माफ कर दो।

अंजली: क्या? तुम ऐसा कैसे कर सकती हो? मैंने तो तुम्हें अपनी सहेली माना था। मैं तुमसे कभी बात नहीं करना चाहती।

शिक्षा: बदला लेना कभी भी उत्तम तरीका नहीं है। उससे हम बहुत सारी चीजें खो देते हैं।

शिक्षा एक आशीर्वाद

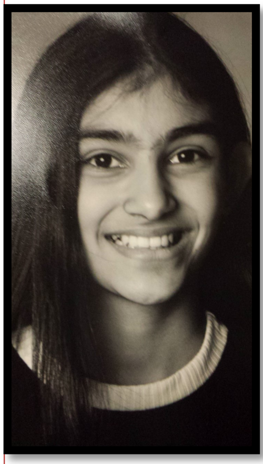

मेरा नाम प्रीति लोहटिया। मैं तेरह साल की हूँ और आठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं चैरी हिल हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर २ की छात्रा हूँ। अपने खाली समय में मुझे नृत्य करना बहुत अच्छा लगता है। पाठशाला में मेरे प्रिय विषय विज्ञान और स्पेनिश हैं। मुझे दुनिया की भाषाओं को सीखने में आनंद आता है। मैं ट्रैक और फील्ड तथा स्कूल नाटक में भी हूँ। छठी, सातवीं, और आठवीं कक्षा में मैंने कोरस में भाग लिया। पाठशाला में मैं उच्च कठिन गणित ले रही हूँ। स्कूल में शिक्षक बहुत काम देते हैं। हाई स्कूल में मैं टेनिस टीम में हिस्सा लूँगी।

स्कूल जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस दुनिया में बहुत से बच्चे अपनी मुश्किल परिस्थितियों के कारण स्कूल नहीं जा पा रहे हैं। स्कूल हमें जानकार बनने में मदद करता है और पढ़ने और लिखने में सक्षम बनाता है। सीखने के अलावा, स्कूल हमें दूसरों के साथ संवाद करने और नए लोगों से मिलने में मदद करता है। लैंगिक असमानता या गरीबी जैसी समस्याओं के दुर्भाग्य से बहुत से बच्चों स्कूल जाने में असमर्थ हैं। लोग सब कुछ चाहते हैं और अपनी संपत्ति के लिए आभारी नहीं हैं। हम कहते हैं कि स्कूल बहुत ज्यादा काम है, या बहुत मुश्किल है, लेकिन स्कूल हमें हमारे भविष्य के लिए तैयार करने में सहायता करता है। लोग नए कपड़े, स्मार्टफोन और कार खरीदना जारी रखेंगे। शायद हमारी दुनिया कभी नहीं बदलेगी, लेकिन हमें अपने आशीर्वादों की गिनती करनी चाहिए। स्कूल जाना सबसे बड़ा आशीर्वाद है।

हमारे आदर्श

उच्चतर-१, साऊथ ब्रंस्विक

मेरा नाम नीतू जैन है और मैं पिछले ४ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। मेरी दोनों बेटियाँ भी हिंदी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में पढ़ती हैं। मैंने अपनी शिक्षा भारत के ग्वालियर नामक शहर से पूरी की है। हिंदी भाषा मेरी प्रिय भाषा है। मैं हमेशा अपने बच्चों को हिंदी बोलने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ ताकि वे अपने दादा, दादी, नाना और नानी के साथ वार्तालाप कर सकें। मैं अपनी कक्षा के बच्चों को भी हमेशा हिंदी बोलने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ। हिंदी यू.एस.ए. में पढ़ाने का मेरा अनुभव बहुत ही अच्छा रहा है। मैं अपने आप को बहुत ही सौभाग्यशाली समझती हूँ कि हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से मैं अपनी हिंदी भाषा का ज्ञान आने वाली पीढ़ी को दे पा रही हूँ। इस लेख के माध्यम से मेरी कक्षा के कुछ विद्यार्थियों ने अपने आदर्श व्यक्तियों के बारे में लिखा है।

मेरे आदर्श - रोजर फेडरर

मेरे आदर्श रोजर फेडरर हैं। फेडरर का जन्म स्विट्जरलैंड में हुआ था। वे एक बेहतरीन और लोकप्रिय टेनिस खिलाड़ी हैं। फेडरर अब तक १७ ग्रैंड स्लैम जीत चुके हैं। उनका सबसे अधिक ग्रैंड स्लैम जीतने का विश्व रिकार्ड है। वे टेनिस एकाग्रता और ठंडे दिमाग से खेलते हैं। वे एक बहुत ही बहुमुखी टेनिस खिलाड़ी हैं। रोजर फेडरर की उम्र ३५ साल है और वह अभी भी एक चैंपियन है। मैं रोजर फेडरर जैसा अच्छा और उत्तम टेनिस खिलाड़ी बनना चाहता हूँ। **श्रेयस मेनन**

मेरी आदर्श - मरी क्युरी

मेरी आदर्श वैज्ञानिक मरी क्युरी हैं। वे बहुत कठिनाइयों को झेलकर एक कामयाब वैज्ञानिक बनीं। मरी क्युरी का जन्म पोलैंड के वारसा शहर में हुआ था। बहुत कठिनाइयों का सामना करते हुए और खूब मेहनत कर उन्होंने विश्वविद्यालय तक अपनी पढ़ाई पूरी की। पढ़ाई खत्म करने के बाद मरी एक प्रयोगशाला मे काम करने लगीं। कुछ वैज्ञानिकों ने मरी का मजाक उड़ाया क्योंकि वह एक औरत थी। मरी को दो बार नोबल पुरस्कार मिला। पहला नोबल पुरस्कार उन्हे भौतिक विज्ञान और दूसरा नोबल पुरस्कार रसायन विज्ञान में रेडियम और पोलोनियम तत्व को खोजने के लिए मिला। मरी क्युरी हमारे लिए एक प्रेरणा स्रोत है जो बडी कठिनाइयों का सामना करते हुए नोबल पुरस्कार प्राप्त करने वाली महिला बनी।

-त्रिषा रेड्डी

मेरी आदर्श - मदर टेरीसा

मेरी आदर्श मदर टेरीसा है। मदर टेरीसा मेरी आदर्श है क्योंकि उन्होनें बहुत से महान काम किये हैं। वह एक रोमन कैथोलिक नन थी जिन्होंने दुनिया भर के गरीबों की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया। 1979 में मदर टेरीसा को नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया और 1980 में भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। भविष्य में मैं मदर टेरीसा जैसे बनना चाहती हूँ और बहुत से लोगों की मदद करना चाहती हूँ। **-दिया शाह**

मेरे आदर्श - मेरे पिताजी

मेरे आदर्श मेरे पिताजी हैं। वे बहुत मेहनती हैं और मुझे मेहनत करने का महत्व समझाते हैं। उनसे ही मुझे सीख मिली कि "कड़ी मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है"। वे बीस साल से यहाँ हैं और अपनी लगन और मेहनत से काम कर रहे हैं। वह मुझे बहुत प्यार करते हैं। मुझे नये-नये खेल सिखाते हैं। उनके साथ साइकल चलाना और गोल्फ खेलना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझे मेरे पिताजी पर बहुत गर्व है।

- अनिक मुंगी

मेरे आदर्श - मेरे पिताजी

हम सब किसी न किसी की राह पर चलना चाहते हैं। मैं अपने पिताजी की राह पर चलना चाहता हूँ। वह मेरे आदर्श व्यक्ति बहुत सारे कारणों से हैं। सबसे पहले वे बहुत मेहनती हैं। जब उनको बहुत काम होता है, तब भी वह जल्द से जल्द काम खत्म करके परिवार के साथ समय बिताते हैं। दूसरा कारण वे सबकी मदद करते हैं। जब मुझे होमवर्क नही समझ आता है, तब वे मुझे मदद करते हैं। उसी तरह जब भी मेरी मां को खाना बनाने में मदद चाहिए, मेरे पिताजी उनकी मदद करते हैं। अंत में वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। वे सबके साथ अच्छे से व्यवहार करते हैं। ऊपर लिखे कारणों की वजह से मेरे पिताजी मेरे आदर्श व्यक्ति हैं।

-अंश राना

मेरी आदर्श - मैडम मरी क्युरी

मेरी आदर्श वैज्ञानिक मरी क्युरी है। उन्होंने रेडियम की खोज की थी जो बहुत सी बीमारियों के उपचार के काम आता है। मैडम मरी क्यूरी को रेडियम की खोज करने के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवन में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। मैं भी मैडम मरी क्यूरी की तरह हर कठिनाई को पार करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहती हूँ। इसलिए मैडम मरी क्यूरी मेरी आदर्श व्यक्ति हैं।

-स्वेता कार्तिकेयन

मेरे आदर्श - कोबी ब्रायंट

मेरे आदर्श कोबी ब्रायंट हैं क्योंकि वे एक बहुत ही सकारात्मक सोच के व्यक्ति हैं। कोबी ब्रायंट एक बहुत ही उम्दा बास्केट बॉल खिलाडी हैं। उन्होंने २० साल तक बास्केटबॉल का खेल खेला है। उन्होंने बहुत छोटी उम्र से ही बास्केटबॉल खेलना शुरू कर दिया था। मैं भी उनके जैसा ही महान बास्केट बॉल खिलाडी बनाना चाहता हूँ।

-लोहित बोदीपाटी

मेरे आदर्श – महात्मा गांधी जी

गांधी जी का जन्म २ अक्टूबर १८६९ में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। उनको भारत के राष्ट्रपिता के नाम से जाना जाता है। उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों का विरोध किया। गांधी जी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से आजादी दिलायी। गांधी जी ने सत्य का पालन किया और बहुत सादगी भरा जीवन जिया। गांधीजी ने अपने ऊपर हमला करने वाले नाथूराम गोडसे को भी मरते समय माफ़ कर दिया और विश्व के लोगों के मन में अमर हो गए। इन्ही कारणों के लिए, गांधी जी मेरे आदर्श व्यक्ति हैं।

- धनन्जय गुरुमूर्ति

मेरी आदर्श – मेरी माँ

मेरी माँ मेरी आदर्श व्यक्ति हैं। मैं किसी भी बारे में उनसे बात कर सकता हूँ। वे बहुत प्यारी और बहुत मेहनती हैं। वे मेरे लिए कुछ भी कर सकती हैं। मेरी मां मेरी सबसे बड़ी दोस्त भी हैं। यही कारण है कि मेरी मां मेरी आदर्श हैं। **- देव गाँधी**

नृत्य परिचय

मेरा नाम श्रेया भरद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रन्स्विक हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की कक्षा में पढ़ती हूँ।

हम सभी जानते हैं कि भारत एक प्राचीन देश है, और नृत्य वहाँ की सभ्यता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। हर प्रदेश का अपना प्रमुख नृत्य होता है। भारत में छः मुख्य नृत्य प्रसिद्ध हैं: भरतनाट्यम - दक्षिण भारत, कत्थक - उत्तर भारत, कथकली- केरल, ओड़िसी - उड़ीसा, मणिपुरी - पूर्वोत्तर, कुचीपुडी - आंध्र प्रदेश के प्रसद्ध नृत्य हैं। मुझे भरतनाट्यम बहुत पसंद है और मैं भरतनाट्यम पाँच वर्षो से सीख रही हूँ।

भरतनाट्यम सबसे प्राचीन नर्त्य है जो दक्षिण भारत से विकसित हुआ है। इस के द्वारा हम भगवान की आराधना करते हैं। भरतनाट्यम को सबसे प्राचीन नृत्य माना जाता है। इस नृत्य में बहुत अड्वू यानि स्टेप्स होते हैं, जिसमें आपको अपने पैर तलम् के साथ चलाने होते हैं। पैर के साथ-साथ आपको अपने हाथ भी चलाने पड़ते हैं। हर अड्वू में अलग हाथ-पैर के मेल हैं। आपका पहला डांस अलारिप्पू होता है और फिर जतिस्वरम होता है। आखिर में आरंगात्रम होता है, जिसमे अपनी पसंद के पाँच गानों पर नृत्य प्रस्तुत करते हैं। भरतनाट्यम की वेशभूषा भी बहुत सुंदर होती है, इस नृत्य में हम सिर से पाँव तक तैयार होते हैं। सर पर गजरा, माथे पर बिंदी, आँखों में काजल तथा पैर में आलता लगाते हैं। जब मैं डांस क्लास में जाती हूँ, हम सबसे पहले ईश्वर से आशीर्वाद लेते हैं और फिर अभ्यास करते हैं। मुझे भरतनाट्यम अच्छा लगता है, क्यूंकि मैं जहाँ भी जाती हूँ, मैं भारतीय संस्कृति को अपने टैलेंट द्वारा दिखा सकती हूँ। मैंने एक वर्ष हिंदी महोत्सव में भरतनाट्यम के द्वारा गणेश जी की आरती प्रस्तुत की थी। मुझे भरतनाट्यम बहुत पसंद है!

बचपन

ईशा शर्मा - मध्यमा-३, वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला

बचपन में खुशियाँ ही खुशियाँ होती हैं।
न सुबह की, न शाम की खबर होती है।
थक कर आना स्कूल से, पर खेलना फिर भी अच्छा लगता है।
माँ की प्यारी-प्यारी कहानियाँ रात को सोने से पहले सुनना अच्छा लगता है।
बचपन का हर एक पल खुशियों से भर देना चाहिए।
मुझे मेरे बचपन के दोस्तों का साथ हमेशा चाहिए।
बचपन का यह सफर हम कभी भूल नहीं पायेंगे।
क्योंकि बचपन के ये दिन वापस नही आयेंगे।

गणेश उत्सव

रोहन शर्मा- मध्यमा-३

जैसा कि शीर्षक से विदित होता है, गणेश उत्सव में गणेश जी की पूजा अर्चना की जाती है। इसकी शुरुआत भारत के महाराष्ट्र राज्य में छत्रपति शिवाजी महाराज ने की थी, किन्तु उनके बाद बाल गंगाधर तिलक ने इस उत्सव को फिर से समाज को एक साथ लाने के लिए शुरु किया। यह उत्सव दस दिनों तक भारत के अनेक राज्यों में मनाया जाता है। मेरा परिवार भी इसे मनाता है। गणेश चतुर्थी से यह पर्व शुरु होता है और इस दिन हम गणेश जी की मूर्ति को अपने घर लाते हैं। मूर्ति की स्थापना करते हैं और झाँकी सजाते हैं। परिवार और मित्रों के साथ रोज सुबह और शाम को गणेशजी की आरती की जाती है। मोदक या लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाया जाता है, जो गणेशजी के साथ-साथ बच्चों को भी बहुत पसंद होता है। घरों के अलावा गणेश मंडलों द्वारा भी बड़ी-बड़ी मूर्तियों की स्थापना की जाती है और कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

इन दस दिनों तक घरों, मोहल्लों व मंदिरों में बहुत चहल-पहल रहती है। मैं अपने सभी दोस्तों के साथ हर दिन शाम को सात बजे तबला और मंजीरों के साथ गणेश जी के भजन और आरती करता हूँ। हम सभी बच्चों को पूजा के बाद जोर से, 'गणपति बप्पा मौरया' बोलने में बहुत मजा आता है। मेरी मम्मी गणेशजी के सामने रंगों और फूलों से सुन्दर रंगोली बनाती हैं। इन दस दिनों में गणेशजी मुझे हमारे परिवार के एक सदस्य की तरह लगने लगते हैं।

दस दिनों के बाद गणेशजी को विसर्जित करने का समय आता है। भारत में पहले समुद्र, नदियों व कुओं में विसर्जन किया जाता था, किंतु अब पर्यावरण को बचाने के लिए भारत और यहाँ अमेरिका में भी मिट्टी के गणेश जी बनाये जाते हैं। बर्तन में पानी भरकर विसर्जन किया जाता है। गणेशजी के जाने के बाद घर में बड़ा सूनापन हो जाता है। हम उनके अगले वर्ष फिर से आने का इंतजार करते हैं।

शिक्षा का महत्व

मेरा नाम तेजस भारद्वाज है। मैं मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे हिंदी सीखना बहुत अच्छा लगता है।

घर शिक्षा प्राप्त करने का पहला स्थान होता है। सभी के जीवन में माता पिता पहले शिक्षक होते हैं। शिक्षा सर्वश्रेष्ठ धन है। इसे कोई चुरा नहीं सकता। दूसरों को देने से यह सदैव बढ़ता है। विदेश में शिक्षा ही सबसे अच्छा मित्र होती है। शिक्षा से हमे आत्मविश्वास तथा उन्नति प्राप्त होती है। हमारा ज्ञान भी बढ़ता है। हमे अपने सभी प्रश्नों के उत्तर शिक्षा द्वारा ही प्राप्त होते हैं। शिक्षित होने से हमारी सोच विकसित होती है और समाज बदलने लगता है। समाज के बदलने से देश का विकास शुरू होता है। इसीलिए हम सबको शिक्षित होना आवश्यक है।

हम हिन्दी क्यों सीख रहे हैं

एडिसन हिन्दी पाठशाला – उच्चस्तर-१

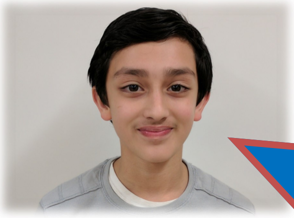

मनन राजपूत

मुझे हिन्दी कक्षा इसलिए पसंद है क्योंकि उसमें मैं हिन्दी के नए शब्द सीखता हूँ। कुछ वर्ष पहले मेरा हिन्दी शब्द ज्ञान कमजोर था, लेकिन जबसे मैं हिन्दी कक्षा जाने लगा हूँ मेरा शब्द ज्ञान निरंतर बढ़ता जा रहा है। शब्द ज्ञान के साथ-साथ मेरा हिन्दी हिन्दी व्याकरण भी सुधरा है। अब मैं घर में सब से हिन्दी में बात करा सकता हूँ।

गौरवी अवस्थी

मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मैं हिन्दी इसलिए सीख रही हूँ ताकि मैं भारत में लोगों से बात कर सकूँ। हिन्दी सीखकर मैं अपने परिवार से भी बात कर सकती हूँ। हिन्दी सीखने से हम हिन्दी के समाचार पत्र भी पढ़ सकते हैं और भारत के समाचार समझ सकते हैं।

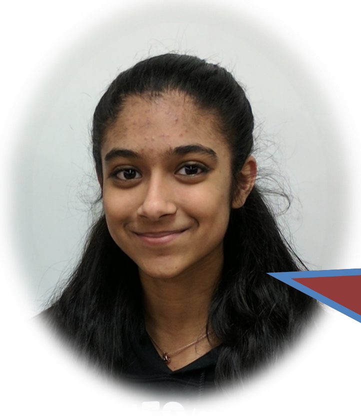

शैलजा सैनी

हिन्दी कक्षा में आकर हिन्दी पढ़ना मुझे बहुत दिलचस्प लगता है। हिन्दी मेरी मातृ भाषा है और मेरा मानना है कि सभी को अपनी मातृ भाषा में पढ़ना और लिखना आना चाहिए। मेरे सभी मित्र भी हिन्दी सीख रहे हैं। जब मैं हिन्दी पढ़ती हूँ तो मेरे माता-पिता भी प्रसन्न होते हैं। मैं हिन्दी सीखकर हिन्दी सिखाना भी चाहती हूँ।

अनन्त राठौर

मैं बहुत लंबे समय से हिन्दी कक्षा जा रहा हूँ। हिन्दी पाठशाला बहुत ही मजेदार है। मुझे हिन्दी कक्षा में जाना अच्छा लगता है क्योंकि वहाँ मैं वहाँ बहुत कुछ सीखता हूँ और नए लोगों से मिलता हूँ।

विष्णु मुरली

भारत एक बड़ा देश है। दुनिया के अनेक देशों में भारतीय बसे हैं। मैं हिन्दी सीख रहा हूँ ताकि मैं जब इन देशों में जाऊँ तो वहाँ बसे भारतीयों से बात कर सकूँ। मैं यह भी समझता हूँ कि एक भारतीय के लिए हिन्दी पढ़ना एक कर्तव्य जैसा है।

शेफाली अवस्थी

मैं हिन्दी इसलिए सीख रही हूँ ताकि मैं भारत में लोगों से बात कर सकूँ और वहाँ के यात्री सूचना और समाचार पत्र पढ़ सकूँ। हिन्दी पाठशाला जाने से मैं एक और भाषा सीख गई हूँ। अब मुझे हिन्दी, अंग्रेजी और स्पेनिश बोलनी, पढ़नी और लिखनी आती है।

सोमेश्वर रमेश बाबू

मैं हिन्दी इसलिए सीख रहा हूँ क्योंकि यह भारत की राष्ट्रभाषा है। हिन्दी सीखने में बहुत ही रोचक है। हिन्दी, अमेरिका में भारतीयों के बीच बातचीत की एक आम भाषा है। अगर मैं हिन्दी सीखता हूँ तो भारत में जाकर लोगों से सही ढंग से बात करने में सक्षम हो जाऊँगा। मेरे माता पिता भी चाहते हैं कि मैं हिन्दी सीखूँ। मुझे भी हिन्दी सीखने में बहुत रुचि है।

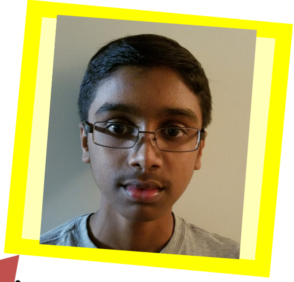

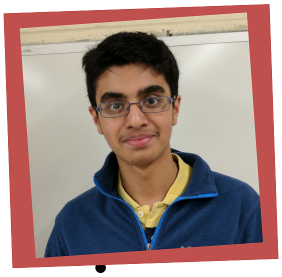

आर्नव घारसे

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसलिए हमें हिन्दी सीखनी चाहिए। जो लोग अंग्रेजी नहीं बोल सकते हम उनसे हिन्दी में बातचीत कर सकते हैं जैसे मेरे नाना-नानी और दादा-दादी।

एडिसन पाठशाला उच्च स्तर-२

त्यौहार

मेरा नाम सारांश सैनी है और मैं उच्चस्तर-२ का विध्यार्थी हूँ। मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला में पढ़ता हूँ। इस लेख में मैं त्यौहार के बारे में लिखूँगा और बताऊँगा कि ये हमारे जीवन में क्यों बहुत आवश्यक और बहुमूल्य होते हैं।

जब त्यौहार आते हैं, मस्ती और खुशियाँ लाते हैं। हमारे देश में बहुत सारे त्यौहार होते हैं, और सब अलग-अलग होते हैं। अगर इन सब में समानता है तो यह कि ये सब के घर में खुशियाँ लाते हैं। परिवार के सदस्य चाहे कितनी दूर हों, पर त्यौहार के समय सब इक्कठे हो जाते हैं।

त्यौहार सब को संस्कृति के बारे में भी सिखाते हैं। बच्चे माता-पिता से पूछते हैं कि, "यह त्यौहार क्यों मनाते है?", और माता-पिता को भारतीय संस्कृति और धर्म के बारे में बताने का अवसर मिलता है। ऐसा करने से आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान मिलता है।

त्यौहार सम्बन्धों को मज़बूत बनाता है और ज्ञान देता है। हर एक में अलग तरह के जश्न होते हैं और अलग-अलग कारणों से मनाये जाते हैं, पर सभी भारत की शान को बढ़ाते हैं।

मेरा सर्वश्रेष्ट अनुभव

मेरा नाम नेत्रा अय्यर है। मैं जॉन प स्टीवेंस हाई स्कूल मैं पढ़ती हूँ। मैं नवी कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे किताबें पढ़ना और वायोलिन बजाना अच्छा लगता है। मैं आजकल प्राचीन यूनानी देवताओं के बारे में पढ़ रही हूँ। मुझे हैरी पॉटर की किताबें भी अच्छी लगती हैं। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ।

मेरी हिंदी कक्षा के सर्वश्रेष्ट अनुभवों में से एक अनुभव हिंदी महोत्सव २०१६ का है। उस वर्ष मैं एक नाटक में थी। वह एक हास्य नाटक था। उस नाटक में एक भारतीय लड़की भारत जाती है। वह रिश्तेदारों से मिलती है, स्वादिष्ट खाना खाती है, भारतीय सभ्यता के बारे में सीखती है और बहुत मजा करती है। मेरा पात्र उस भारतीय लड़की का था। मैं अंग्रेजी और हिंदी मिलाकर बोल रही थी। मैंने कई नयी बातें सीखीं। मुझे विभिन्न रिश्तों के नाम, कुछ मुहावरे, और चलचित्र के प्रसिद्ध संवादों का ज्ञान मिला। सारे अभ्यास बहुत मजेदार थे क्योंकि इस नाटक में मेरे मित्र भी थे। मेरे हिंदी ज्ञान की वृद्धि हुई। नाटक के पहले हम लोग बहुत चिंतित थे परंतु हमें इनाम मिला। मेरी इच्छा यही है कि हम फिर से एक नाटक करें।

भारत यात्रा

मेरा नाम हर्षिता जैन है। मैं J.P. Stevens High School में ग्याहरवी कक्षा में पढती हूँ। मुझे गाना, बजाना और बाहर खेलना अच्छा लगता है। पिछले चार साल से मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला जा रही हूँ।

गर्मियों की छुट्टियों में मैं भारत गयी थी। परिवार के साथ मैं अनेक जगह देखने गयी थी। अपनी यात्रा के दौरान मैं बहुत सारे राज्यों से गुज़री, जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, और दिल्ली, जो भारत की राजधानी है। दिल्ली में भारत की कई मुख्य इमारते हैं- जब मैं दिल्ली में थी, मैंने इन सारे स्मारकों को देखा।

ऐसा एक स्मारक लाल किला था। हमें अंदर जाने को नहीं मिला, पर बाहर से किला लुभावना था। बस में भी एक तरफ से दूसरी तरफ जाने के लिए दस मिनट लगे। जैसा कि उसका नाम है, किले का रंग लाल था। उसमें अनगिनत खिड़कियाँ थीं और सूरज की किरणों में वह बहुत सुंदर दिख रहा था।

दूसरे दिन आगरा में हम ताज महल देखने गए थे। ताज महल सन् १६४८ में मुगल सम्राट शाहजहान ने अपनी पत्नी मुमताज के लिये बनाया था। वह विश्व के सात अजूबों में से एक है। ताज महल चारों ओर से सफ़ेद नहीं है; वास्तव में उसकी दीवारों में रंगीन कीमती पत्थर भी हैं। ऐसा एक क़ीमती पत्थर लाल रंग का है और वह चाँदनी में चमकता है। सैर के बाद परिवार के साथ इस अनोखे स्मारक के सामने मैंने तस्वीरें खीचीं।

संक्षेप में, मेरी भारत की यात्रा बहुत विशेष थी क्योंकि मुझे लाल किला और ताज महल जैसी इमारतों को देखने का अवसर मिला। मैं आशा करती हूँ की मैं जल्द ही फिर से भारत जा सकूँगी।

अमेरिका (न्यू जर्सी) में दशहरा समारोह

मेरा नाम पूर्वा बोम्मिरेड्डी है। मैं साउथ प्लेन-फील्ड में आठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ में पढ़ रही हूँ। मेरा शौक वायोलिन बजाना, टेनिस खेलना, पुस्तक पढ़ना तथा गीत गाना है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की बहुत आभारी हूँ, क्योंकि मैं हिंदी बोलने, पढ़ने, समझने और लिखने के साथ-साथ हिंदी कितनी मधुर और प्रभावशाली भाषा है भी समझ पायी।

हर साल हम अमेरिका में दशहरे का त्यौहार मनाते हैं। इस अवसर पर पापयानी झील के किनारे एक बड़ा मेला होता है। इस मेले में रंग-बिरंगे कपड़ों की दुकानें, खाने-पीने की दुकानें और बच्चों की खेल-तमाशे की गतिविधियाँ भी होती हैं। एक बड़े मंच पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इसी मंच पर शाम को रामलीला नाटक का प्रदर्शन होता है। रामलीला के बाद रावण का पुतला जलाया जाता है। यह बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। उसके पश्चात आतिशबाज़ी भी होती है। मैं हर साल अपने परिवार और मित्रों के साथ इस शानदार दशहरा उत्सव में जाती हूँ। मैं अगले दशहरे के त्यौहार का इंतज़ार कर रही हूँ।

रक्षाबंधन

मेरा नाम श्रेया जैन है। मैं तेरह साल की हूँ। मैं आठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। यह मेरा हिंदी यू. एस. ए. में आखरी साल है। मेरे परिवार में मेरी माँ, पिताजी और मेरा भाई है। मुझे तैरना और स्केटिंग करना बहुत अच्छा लगता है।

हर साल मैं और मेरा भाई ऋषभ, रक्षाबंधन का त्यौहार मानते हैं। रक्षाबंधन या राखी एक ऐसा त्यौहार है, जिसे भाई-बहन एक साथ मनाते हैं। अपना प्यार दिखाने के लिए लड़कियाँ अपने भाइयों के हाथ पर राखी बांधती हैं। मैं और मेरा परिवार सुबह एक साथ बैठ कर पूजा करते हैं। फिर मैं अपने भाई को टीका लगाती हूँ और उसे अपनी और दूसरी राखियाँ बांधती हूँ, जो मेरी चचेरी और ममेरी बहने उसके लिए भेजती हैं। उसका सारा हाथ राखी से भर जाता है। राखी बांधने के बाद मैं उसे मिठाई खिलती हूँ। उसके बाद वह मेरे पैर भी छूता है। मेरा भाई मुझे फिर बहुत सारे उपहार देता है, जो मुझे हमेशा बहुत अच्छे लगते हैं। पिछले साल मैंने अपने भाई को चमक वाली राखी बाँधी थी। मेरे पिताजी हमेशा हमारी फोटो भी खीचते हैं। हम सभी बहुत सारी मिठाई खाते हैं। मुझे रक्षाबंधन का त्यौहार बहुत ही अच्छा लगता है।

होली

मेरा नाम ऋजुल जैन है। मैं आठवीं श्रेणी में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी पाठशाला में नौ वर्षों से आ रहा हूँ। मुझे तरह-तरह के चित्र बनाना, फ़ुटबॉल खेलना और पढ़ना बहुत पसंद हैं। मुझे हिंदी पाठशाला में बहुत सारी चीज़ें देखने और सीखने को मिलती हैं। हम स्कूल में विभिन्न भारतीय त्यौहार को मनाते हैं। हम स्कूल में दिवाली होली आदि त्यौहार मनाते हैं। होली पर हम एक दूसरे पर रंग डालते है और मिठाई खाते हैं।

हिंदुओं के द्वारा दिवाली की तरह ही होली भी व्यापक तौर पर मनाया जाने वाला त्यौहार है। ये वसंत ऋतु के फागुन महीने में आता है, जिसे वसंत ऋतु की भी शुरुआत माना जाता है। हर साल होली को मनाने की वजह इसका इतिहास और महत्व भी है। बहुत साल पहले हिरण्यकश्यप नाम के एक दुष्ट भाई की एक दुष्ट बहन थी, होलिका, जो अपने भाई के पुत्र प्रहलाद को अपनी गोद में बिठा कर जलाना चाहती थी। प्रहलाद भगवान विष्णु के भक्त थे, जिन्होंने आग से प्रहलाद को बचाया और उसी आग में होलिका को राख कर दिया। तभी से हिन्दु धर्म के लोग शैतानी शक्ति के खिलाफ, अच्छाई के विजय के रुप में हर साल होली का त्यौहार मनाते हैं। इस दिन लकड़ी की होलिका बनाकर जलाया जाता है तथा प्रातःकाल रंग-बिरंगे, विभिन्न रंगों से एक दूसरे को रंग कर रंगों का त्यौहार मनाते हैं। इस दौरान सभी मिलकर ढोलक, हारमोनियम तथा करताल की धुन पर धार्मिक और फागुन गीत गाते हैं। इस दिन हमलोग खासतौर से बनी गुजिया, पापड़, हलवा, पानी-पूरी तथा दही-बड़े आदि खाते हैं। मुझे होली बहुत पसंद है।

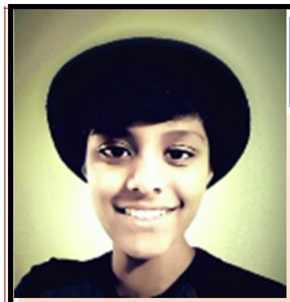

गर्मी की छुट्टियाँ

मेरा नाम अभिनव आर्य है। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं बारह साल का हूँ। मैं नौ साल से हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी पढ़ रहा हूँ। मेरा मनपसंद काम किताबें पढ़ना है। मुझे गर्मी की छुट्टियाँ बहुत अच्छी लगाती हैं। मैं हर दिन अपने दोस्तों के साथ बाहर खेलने जाता हूँ। कभी-कभी हम सब फुटबाल खेलते हैं और कभी-कभी लुकाछिपी खेलते हैं। हम सब टीम बना कर खेलते हैं और हर बार नई टीम बनाते हैं। मुझे अपने मित्रों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है, इसलिए मैं हर दिन बाहर जाता हूँ। गर्मी की छुट्टियों में मैं वीडियो गेम भी खेलता हूँ। संगणक पर मैं दूसरे लोगों के साथ भी खेल सकता हूँ, चाहे वे जहाँ पर भी रहते हों। स्काइप का प्रयोग कर के मैं सब के साथ बात भी कर सकता हूँ। लेकिन मेरी छुट्टियों में सिर्फ मज़ा ही नहीं होता है। मुझे थोड़ा सा काम भी करना होता है। मैं अपने मस्तिष्क को तेज रखना चाहता हूँ। मेरी कोई न कोई क्लास होती रहती है और उन क्लास में गृह कार्य मिलता है। वे ६-७ घंटे की होती हैं और मुझे बहुत सारा काम मिलता है। हर सप्ताह कोई अन्य क्लास होती है। इन क्लास में मेरे अध्यापक बहुत मज़ेदार हैं। वे सारे मेरे साथ मज़ाक करते हैं और मुझे कभी-कभी चुटकुले सुनाते हैं। गर्मी की छुट्टियों में मैं बहुत कुछ करता हूँ लेकिन मैं फिर भी घर में ऊब जाता हूँ। गर्मी के छुट्टियों में बहुत कुछ कर सकता हूँ। यह एक मस्ती वाला समय है। ग्रीष्म ऋतु मेरी मन पसंद ऋतु है।

राजस्थान

मेरा नाम नमी जैन है। मैं आठवीं कक्षा में पड़ती हूँ। मेरी पाठशाला का नाम Woodrow Wilson Middle School है। मेरे परिवार में मेरी माताजी, मेरे पिताजी, और मेरा एक भाई भी है। मेरा भाई तीसरी कक्षा में है। अपने खाली समय में मैं चित्र बनाती हूँ। मुझे नान और पनीर की सब्ज़ी बहुत अच्छी लगती है।

राजस्थान राजाओं के देश के रूप में जाना जाता है। इस देश में सिंधु घाटी के कुछ हिस्से रहे थे। इस धरती पर राजपूतों ने मुसलमान राजाओं को हराकर राजस्थान को प्रसिद्ध कर दिया। राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। मारवाड़ी, मेवाड़ी, हिंदी, हरयाणवी, पंजाबी, गुजराती तथा कई और भाषाएँ भी बोली जाती हैं। राजस्थान में बहुत मरुस्थल हैं, इसलिये वह रेगिस्तान भी कहलाता है। राजस्थान में बहुत महल और ऐतिहासिक स्थल भी हैं। मेवाड़ में चित्तौरगढ़ और उदयपुर के महल बहुत नामवर हैं। हवा महल, जल महल, रामबाघ महल, तथा कई और भी महल देखने लायक हैं।

राजस्थानी गीत में वह राग और ध्वनि है, जो किसी और गीत में नहीं है। यह गीत राजस्थानी लोग आग के चारों ओर बैठते हुए गाते हैं। जब आप भारत जाएँगे, तब राजस्थान जाना मत भूलियेगा।

भारतीय त्यौहार

मेरा नाम आदित्य शेलके है, और मैं बारह साल का हूँ। मैं सातवी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे तैरना, गणित, गिटार बजाना, और टेबल टेनिस खेलना अच्छा लगता है। मुझे पनीर, आलू, और सब्ज़ियाँ अच्छी लगती हैं। मैं एडिसन की हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-२ का विद्यार्थी हूँ।

भारत त्यौहार का देश है। यहाँ बहुत सारे त्यौहार मनाए जाते हैं, जैसे होली, दिवाली, नवरात्रि, गणेश चतुर्थी, रक्षा बन्धन, भाई दूज, शिवरात्रि, कृष्ण जन्माष्टमी और मकर संक्रांति। इसके अलावा भारत में रहने वाले पंजाबी लोग बैसाखी, मुस्लिम लोग ईद और भारत के दक्षिण भाग में रहने वाले लोग पोंगल बड़े ज़ोर शोर से मनाते हैं।

वैसे तो मुझे सारे त्यौहार पसंद है, पर मेरे मनपसंद त्यौहार होली और दिवाली हैं। होली की शुरुआत हुई थी जब राजा हिरण्यकश्यप ने अपने लोगों को आदेश दिया था कि उसको एक भगवान माने। सभी लोग उसकी बात मानने लगे, पर उसका बेटा प्रहलाद सिर्फ़ विष्णु भगवान में विश्वास करता था। इसलिये राजा ने अपने बेटे को मारने का प्रयत्न किया। एक दिन राजा हिरण्यकश्यप की बहन होलिका ने कहा, "कोई भी मुझे जला नहीं सकता", और वह प्रहलाद को मारने के लिये उसके साथ आग में बैठ गई। जब आग बुझी, राजा हिरण्यकश्यप ने देखा कि होलिका मर गई थी और प्रहलाद जीवित था।

इस ख़ुशी को मनाने के लिये हम होलिका दहन के दूसरे दिन रंगों से खेलते हैं। हम सब ग़ुब्बारे और पिचकारी में रंग भरकर एक दूसरे के ऊपर डालते हैं। इस मज़ेदार खेल के बाद हम स्वादिष्ट मिठाइयाँ भी खाते हैं।

वैसे ही मुझे दिवाली का त्यौहार भी बहुत पसंद है। दिवाली को "रोशनी का त्यौहार" कहते हैं। इस दिन भगवान राम चौदह साल के वनवास के बाद अयोध्या वापिस आए थे, तो लोगों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया। मैं दिवाली पर अपने परिवार के साथ मंदिर जाता हूँ, शाम को हम नए कपड़े पहनकर लक्ष्मी पूजन करते हैं, बहुत सारे दीये जलाते हैं, पूजा के बाद फटाके जलाते हैं, और मिठाइयाँ खाते हैं।

जब तक हम खुद पर विश्वास नहीं करते तब तक हम भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।

स्वामी विवेकानंद

मेरी हिंदी यात्रा

मेरा नाम अनुषा गुप्ता है। मैं छठवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं बास्किंग रिज में रहती हूँ और पिछले छः साल से एडिसन हिन्दी पाठशाला में हिन्दी सीख रही हूँ। अभी मैं ऊच्च स्तर-२ में पढ़ रही हूँ। मुझे किताब पढ़ना, फुटबॉल खेलना, वायोलिन बजाना और तैरना बहुत अच्छा लगता है। मैंने मम्मी के सहयोग से कई कवितायें लिखी हैं। मेरी दो कवितायें "भाषा" और "हिन्द देश - हिंदी यू.एस.ए." कर्मभूमि में छापी गयी थीं। यह मेरी तीसरी कविता यहाँ प्रस्तुत है।

आ आ इ ई ...क ख ग घ ...
बचपन से सीखती आयी।
माँ भईया अर्णव को सिखाती थी
तभी से मैं सयानी बनती आयी।

प्रथमा एक में मोनिका जी और रंजना जी मिली
सीखी हमने वर्णमाला और गिनती एक से बीस।
सारे व्यंजन और स्वर से
शुरू हुए शब्दों के ढेर।

प्रथमा दो में मिली अनुभा जी
सीखें दो , तीन , चार अक्षरो के शब्द।
गिनती आगे बढ़ी इक्कीस से पचास
और याद किये कई शब्दो के ढेर।

मध्यमा एक में मिली मम्मी ज्योति गुप्ता
सीखी हमने सारी मात्राएँ और मात्राओं के पैंतरे।
अनुस्वार , चंद्रबिंदु , विसर्ग , गिनती एकावन से पच्छत्तर
और कई शब्दों के ढेर।

मध्यमा दो में भेंट हुयी मुक्ता जी से
सीखा हमने संयुक्त अक्षर शब्द , र की रेफ , र की पदेन ।
वाक्यो की सरंचना शुरू हुयी , गिनती छिहत्तर से सौ
और शब्दों के ढेर।

मध्यमा तीन में व्याकरण प्रवेशिका लेकर अनुजा जी आयीं
संज्ञा , सर्वनाम , लिंग , वचन इत्यादि सिखायीं।
बड़े अंक , दिनों और महीनो के नाम
और शब्दो के ढेर।

उच्चस्तर एक में और ज्यादा व्याकरण सिखाया सुशील जी ने
वाक्यों की संरचना - सुधार, जीता हमने द्वितीय पदक जैपरडी में।
अनेक शब्दो के एक शब्द , विलोम , पर्यायवाची इत्यादि
और शब्दों के ढेर।

उच्चस्तर दो सम्भाला लक्ष्मण जी ने
पढ़ा हमने "प्यारा दोस्त " और "भूतु "।
ज्ञान भरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे
हुई शुरू लेखन अभ्यास, थमे शब्दों के ढेर।

लिखा हमने लेख और कवितायेँ कर्मभूमि में
मनाए दिवाली और सभी त्यौहार मिलकर।
मिले और बनाये बहुत सारे मित्र पाठशाला में
किया हमने कविता पाठ और महोत्सव खुलकर।

कोटि कोटि धन्यवाद मात - पिता को
सभी शिक्षक - शिक्षिकाओं और हिंदी यू एस ए को।
सम्पूर्ण हुई मेरी हिंदी शिक्षा
परंतु आगे है अभी लंबी यात्रा।

भारत का ध्वज

मेरा नाम अमेय वेंकटानारायन है। मै दसवी का छात्र हूँ। मेरी पाठशाला का नाम मिडलसेक्स काउंटी अकादमी है। मुझे फुटबाल खेलना और पियानो बजाना बहुत पसंद है। रोबोटिक्स मेरा जुनून है। रोबोटिक्स की प्रतियोगिता में मेरी टीम ने बहुत सारे इनाम जीते हैं।

भारत के ध्वज को तिरंगा कहते हैं। १५ अगस्त, १९४७ को स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री, श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने लाल किले पर गर्व से फहराया था। इसमें तीन रंग हैं, नारंगी, सफेद, और हरा। इसके बीच में नीले रंग का अशोक चक्र है। इस चक्र मे २४ तीलियाँ हैं। नारंगी रंग देश के साहस और शक्ति का प्रतीक है, सफेद रंग शांति और हरा रंग समृद्धि और भूमि की पवित्रता का प्रतीक है। चक्र का नीला रंग आकाश और समुद्र के रंग का प्रतिनिधित्व करता है। यह ध्वज खादी से बनाया जाता है। भारत के ध्वज का प्रस्ताव महात्मा गांधी जी ने १९२१ में नैशनल कांग्रेस के सामने रखा। ध्वज की संरचना पिंगाली वंकैया ने की थी। यह ध्वज भारत का राष्ट्रीय गौरव है। यह भारतीय लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक है।

मेरी फ्लोरिडा यात्रा

मेरा नाम जान्हवी अहिरे है। मैं सातवी कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरी पाठशाला का नाम वुडरो विल्सन मिडिल स्कूल है। मेरे परिवार में चार लोग हैं, मेरे पिताजी, माताजी और मेरी बड़ी बहन। मेरा मन पसंद खेल फुटबॉल (सॉकर) है।

हम इस साल फ्लोरिडा घूमने गए थे। हमारे साथ एक और परिवार भी था। हम कार से गये थे। १८ घंटे का सफर था। पहले हम मियामी गए, वहाँ पर मैंने और मेरी बड़ी बहन ने स्नोर्केलिंग की। उसके बाद हम समुद्र तट पर गए। फिर उसके बाद हम की-वेस्ट गए। वहाँ अमेरिका का क्यूबा पॉइँट देखा और वहाँ से हम ओरलांडो पहुँचे। वहाँ हम लोग एक घर में ६ दिन के लिए रहे थे। हम एक दिन नासा गए थे। हमने अंतरिक्ष के बारे में बहुत कुछ सीखा। यूनिवर्सल में बहुत सारी राईड थीं। लंबी कतार में खड़े होने के बाद हम सब बड़ी राइड में बैठे। इसके बाद हम डिसनी गए। वहाँ बहुत सारे पार्क थे। फ्रोज़न राईड भी बहुत अच्छी थी। वहाँ की सारी राइड मुझे बहुत अच्छी लगी। ऐसे घूमते-घूमते हमारी छुट्टियाँ खत्म हो गईं, और हम घर वापस आ गये। ये दस दिन बहुत अविस्मरणीय थे।

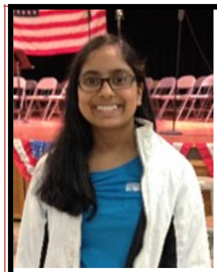

रंगीत संगीत

मेरा नाम नेहा निचक़वड़े है। मै आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं कोलोनिआ पाठशाला में पढ़ती हूँ। मुझे संगीत पसंद है, इसलिये मैंने यह कविता लिखी। मै पीपनी और पियानो बजाती हूँ।

संगीत होता हैं रंगीन,
प्रेक्षकों को करे मलीन,
सा से शुरु होता सा रे ग म,
सब का दिल बहलाता मध्यमा।

हर टप्पे को गिनती ऊँगलीयाँ,
तभी लहराती पंक्तियाँ,
कभी होते पैरों में टप्पे,
उससे मिलता सा रे ग म पा।

जैसे कोरा होता केनवस कलाकार का,
वैसे ही ख़ाली होता है संगीत संगीतकार का,
सा रे ग म भरता उसमें संगीत,
उसी में होते प्रेक्षक रंगीत।

संक्रामक लय,
साथ ले चल लय,
क्या बात है!
ये संगीत मुझे पूरा करती, ये रंगीत संगीत।

ध्यान एवं योग

मेरा नाम देव दोशी है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-२ का विद्यार्थी हूँ। मेरी माता योग सिखाती हैं। मैं जब देखता हूँ, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। आज मैं ध्यान और योग के फायदे बताने जा रहा हूँ।

योग और ध्यान हमारी भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं। शरीर और मन दोनों के स्वास्थ्य के लिये ध्यान और योग का प्रयोग उत्तम है। सुबह-शाम पांच-दस मिनट ओंकार करने से मन को शांति एवम ताजगी मिलती है। सुबह उठ कर स्नान करने के बाद, सूर्यदेव को जल चढ़ाना बहुत अच्छा और पवित्र है। उसके बाद जब सूर्य नमस्कार का योग करते हैं, तो पूरा दिन अच्छा जाता है। तो आओ हमारी संकृति और आगे बढ़ायें।

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमूले सरस्वती।

कर मध्ये तू गोविन्द, प्रभाते कर दर्शनं।

चेस्टरफ़ील्ड पाठशाला उच्च स्तर-१

लोहड़ी

मेरा नाम रिया मनचंदा है और मैं ग्यारह साल की हूँ। मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ और मेरा पसंदीदा विषय गणित है। मेरा मनपसंद रंग मैजेंटा है और मेरा एक भाई है जिसका नाम रिषभ है। मैं पंजाबी हूँ और हम लोहड़ी का त्यौहार मनाते हैं।

जनवरी में लोहड़ी का त्यौहार मनाया जाता है। लोहड़ी से कुछ दिन पहले ही बच्चे लोहड़ी के लोकगीत गाकर दाने, लकड़ी और उपले इकट्ठे करते हैं। रात में खुले स्थान में परिवार और आस-पड़ोस के लोग मिलकर आग के किनारे घेरा बना कर बैठते हैं और लोहड़ी के गाने गाते हैं।

'लोहड़ी' पंजाबी लोगों के एक प्रसिद्ध त्यौहार है। यह विशेष रूप से उत्तर भारत के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू में मनाया जाता है। यह जनवरी के १३वें दिन मनाया जाता है। लोहड़ी त्यौहार सर्दियों के उच्चतम बिंदु का निशान है।

आग के चारो ओर बैठकर लोग आग सेंकते हैं व रेवड़ी, खील, गजक, मक्का खाने का आनंद लेते हैं। जिस घर में नई शादी हुई हो या बच्चा हुआ हो उन्हें विशेष तौर पर बधाई दी जाती है। प्राय: घर मे नववधू या बच्चे की पहली लोहड़ी बहुत विशेष होती है।

लोहड़ी को पहले तिलोड़ी कहा जाता था। यह भी कहा जाता है कि संत कबीर की पत्नी लोई की याद में यह पर्व मनाया जाता है, इसीलिए इसे लोई भी कहा जाता है।

मानवी गुप्ता

होली

होली रंगों का त्यौहार है जिसे हर साल फागुन के महीने (मार्च) में बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। यह त्यौहार हमें एक दूसरे के साथ मिलकर रहने की सीख देता है। इसमें लोग आपस में मिलते है, गले लगते हैं और एक दूसरे को रंग और गुलाल लगाते हैं। इस दौरान सभी मिलकर गीत गाते हैं और नाचते हैं। अमेरिका में होली के समय ठंडा मौसम होता है इसलिए हम बाहर बहुत समय तक नहीं खेलते लेकिन दोस्तों के साथ गुलाल से खेलने में बहुत मजा आता है। इस दिन हम लोग खासतौर से बने गुझिया, पापड़, हलवा, पानी-पूरी तथा दही-बड़े आदि खाते है।

होली उत्सव के एक दिन पहले होलिका दहन किया जाता है। हम होलिका दहन के लिए दुर्गा मंदिर जाते हैं, जहाँ पर होलिका दहन किया जाता है और बहुत लोग पूजा करने आते हैं। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत के रुप में मनाया जाता है।

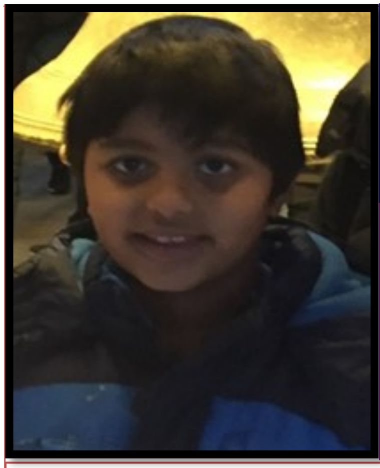

मेरा प्रिय पर्व

मेरा नाम सक्षम भारद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रुन्सविक हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। इस वर्ष मैं अपनी हिंदी पाठ्य पुस्तक में संयुक्त शब्द पढ़ रहा हूँ। इन्ही शब्दों की मदद से मैं अपने प्रिय त्यौहार के बारे में बताना चाहता हूँ। मेरी माता जी भी हिंदी स्कूल में पढ़ाती हैं।

मुझे होली बहुत अच्छी लगती है। होली एक प्रसिद्ध त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। पहले दिन होलिका जलाई जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते हैं। दूसरे दिन लोग एक दूसरे पर रंग, गुलाल फेंकते हैं। इस दिन भारत में छुट्टी होती है। इस पर्व पर हम सब रिश्तेदारों को बधाई देते हैं। होली पर हम प्यार से गले मिलते हैं और स्वादिस्ट व्यंजन बनाते हैं। हम घर पर शक्कर और घी से अनेक प्रकार के मिष्ठान भी बनाते हैं। जो भी इस दिन होली मिलने आता है, हम उसका स्वागत करते हैं। होली पर अमेरिका में कई जगह उत्सव होते है, और कई कार्यक्रम भी होते हैं। होली हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैं होली

खेलकर बहुत प्रसन्न होता हूँ।

क्या आप बता सकते है इस लेख में कितने संयुक्त शब्द हैं?

पंद्रह अगस्त

मेरा नाम नितांता गर्ग है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में सात साल से पढ़ रही हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. की विल्टन पाठशाला में पढ़ती हूँ। मैं उच्च स्तर-२ की विद्यार्थी हूँ और मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है।

पन्द्रह अगस्त भारत देश का स्वतंत्रता दिवस है। इस शुभ अवसर पर उन्हत्तर साल पहले अंग्रेज़ों ने भारत को छोड़ दिया और हमें आज़ादी मिली। जब मैं पिछले साल भारत गई तो मुझे एक बहुत अच्छा झंडा उत्सव देखने को मिला। उस उत्सव में सब लोगों ने सफ़ेद कपड़े पहने हुए थे। हम सब ने जन-गण-मन भी गाया और तिरंगा भी लहराया। उस उत्सव में भारत के सभी नौजवानों को भी सम्मानित किया गया था। सब ने मिठाई भी बाँटी। उस दिन भारत में सब लोग जब कहीं भी जाते हैं तो सफ़ेद कपड़े पहन कर जाते हैं। नई दिल्ली में एक बहुत बड़ा उत्सव होता है। सब देखने के लिए उत्साहित रहते हैं। नरेंद्र मोदी जी ने बहुत सुंदर झंडा वंदन किया। उस दिन लाल क़िले को भी सजाया गया था।

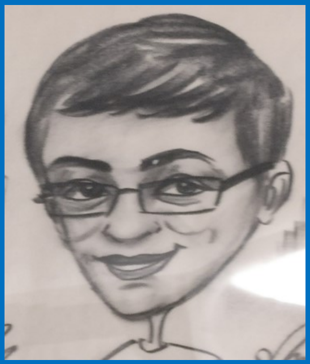

समय यान

मेरा नाम दीप बनेर्जी है। मैं स्टैमफोर्ड के न्यूफील्ड प्राथमिक स्कूल की ५ वीं कक्षा का छात्र हूँ। मुझे सॉकर एवं माईनक्राफ्ट खेलना, भूगोल, विज्ञान पढ़ना और कला पसंद है। गोभी मनचूरियन मेरा सबसे प्रिय पकवान है। मेरी अँग्रेज़ी कविता "टाइम मशीन" को मेरे माता पिता, दोस्तों और टीचरों ने काफ़ी सराहा था। कविता का हिन्दी रूपांतर कर्मभूमि पत्रिका के ज़रिए आपके समक्ष है। आशा करता हूँ आप को पसंद आएगा।

सोचता हूँ मैं, अगर समय यान होता मेरे पास।
दुनिया घूम आता कर विग्यान पे वास।

सबसे पहले जाता मोज़ार्ट के घर।
धुन मे उसके नाचता इधर उधर।
इतना बरा संगीतकार!
एक पल ना जाने देता बेकार।

मेरा अगला पढ़ाव अब्राहम लिंकन के नाम।
अमरीका में गृहयुद्ध, अफ्रीकी गुलाम।
लगाते थे लोग मनुश्य के दाम।
समय यान से कर आता उन दुश्टों का काम तमाम।

उड़ पहुँचता फिर मैं ग्वालियर के गढ़।
अठरा सौ सत्तावन, भारतीय निडर।
रानी झासी, नाना साहिब, बहादुर शाह के साथ,
अँग्रेज़ों को लगा आता मैं भी दो हाथ।

दक्षिण अफ्रीका होता मेरा अगला ठिकाना
रंग भेद का था वो बुरा ज़माना।
गाँधी जी को निका फेंका ट्रेन से किसी कारण के बिन!
नही भुला सकता मैं अपमान का वो दिन।

साल दो हज़ार एक सितंबर की वो सुबह।
सुहाना दिन था, ना थी चिंता की कोई वजह।
पहला विमान आया, दूसरा भी वहीं टकराया।
हिंसा का ऐसा तांडव, यमराज भी घबराया।

विश्व शांति, भाईचारा कर मान में ठान।
इसी संदेश के साथ समाप्त करता हूँ- समय यान की उड़ान।

-

दीप बनेर्जी (हिन्दी में अनुवाद वर्णक बनेर्जी)

◆ ◆

अरहान

मैं हिन्दी कक्षा में जाता हूँ, क्योंकि मैं हिंदी भाषा सीखना चाहता हूँ। हिंदी कक्षा में हमें भारत के त्यौहार के बारे में पता चलता है। मेरे दादा-दादी और नाना-नानी भारत में रहते हैं, मैं उनसे हिंदी में बात कर सकता हूँ। जब मैं भारत जाता हूँ तो अपने ममेरे और फूफेरे भाइयों से हिंदी में बात कर सकता हूँ।

अरहान यादव - मध्यमा-२, विल्टन हिन्दी पाठशाला

UNION COUNTY PEDIATRICS GROUP

817 RAHWAY AVE
ELIZABETH, NJ 07202
908-353-5750

102 JAMES STREET SUITE 303
EDISON, NJ 08820
732-662-3300

PEDIATRIC OFFICE

ACCEPTING PATIENTS FROM NEWBORN TO 21 YEARS

PROCEDURES DONE IN THE OFFICE

EKG, PFT, HEARING TEST, TYAMPOGRAM, BLOOD TEST

CALL FOR APPOINTMENT

मेरा प्रिय खेल क्रिकेट

मेरा नाम अविकल्प श्रीवास्तव है। मैं एडिसन पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरे प्रिय शौक क्रिकेट खेलना, पुस्तक पढ़ना तथा चित्रकारी करना हैं।

मुझे सभी खेल पसंद हैं, पर क्रिकेट मेरा प्रिय खेल है। आज क्रिकेट को खेलों का राजा माना जाता है। क्रिकेट पूरे विश्व में समान रूप से प्रसिद्ध है। भारत में तो लोग क्रिकेट के दीवाने हैं। क्रिकेट में दो टीमें होती हैं जिसमें ग्यारह ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इसमें दो अंपायर भी मैदान पर रहते हैं। खेलने के लिये विकेट, बैट और गेंद के साथ साथ घुटनों पर बाँधने के लिये पैड, हाथों के दस्ताने और सिर पर टोपी या हैलमेट की भी जरूरत होती है।

सिक्का जीतने के बाद टीम का कप्तान विकेट के आधार पर निर्णय लेता है कि पहले गेंदबाजी की जाये या बल्लेबाजी। क्रिकेट में मैच पांच दिन के होते हैं। आजकल एकदिवसीय क्रिकेट का युग है। इसमें निर्णय होना निश्चित होता है। इसमें दोनों टीमों द्वारा पचास पचास ओवर खेले जाते हैं।

मैं भी बड़ा होकर अपने देश की टीम में खेलना चाहता हूँ। क्रिकेट मेरा शौक है, मैं इसमें अपना भविष्य बनाना चाहता हूँ।

व्यक्ति की पहचान उसके कपड़ों से नहीं अपितु उसके चरित्र से आंकी जाती है।

महात्मा गांधी

मेरी रुचि: वायोलिन

नमस्कार, मेरा नाम रवीश मेहता है। मैं चौदह साल का हूँ और नौवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। इस साल मैं ईस्ट ब्रंस्विक की हिंदी पाठशाला से सात साल की पढ़ाई के बाद स्नातक हो जाऊँगा।

जब मैं दस साल का था, तब से मैं वायोलिन बजाता आया हूँ। वायोलिन बजाना मेरी सबसे प्रिय रुचि है क्योंकि वायोलिन सीखने की क्रिया से बहुत सारी और बातों की सीख मिलती है। वायोलिन बजाने में कुशलता हासिल करना और नई धुन सीखना आसान नहीं है, इसके लिये बहुत काम करना पड़ता है। मैंने वायोलिन सीखने के लिए बहुत परिश्रम किया है और अब मैं सुरीली धुन बजा लेता हूँ।

वायोलिन सीखते हुए मैं संगीत का इतिहास सीख रहा हूँ। मैंने यूरोप का इतिहास और वहाँ के संगीतकारों के इतिहास के बारे में भी सीखा है। इतने साल की मेहनत से मैं अपने जीवन में अब मेहनती बन गया हूँ और मेरे व्यक्तित्व का भी विकास हुआ है। इन कारणों से मुझे लगता है कि संगीत की तरह दुनिया में कोई और चीज़ नहीं है। संगीत और वायोलिन के माध्यम से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

सम्राट अशोक

मेरा नाम ऐशानि कपिल है। मैं सातवीं कक्षा की छात्रा हूँ। मुझे टेनिस खेलना बहुत पसंद है। मुझे कराटे भी आता है तथा उसमें मैं ब्लेकबेल्ट हूँ। मुझे अंग्रज़ी के साथ-साथ हिंदी तथा फ्रेंच भी आती है। मुझे गणित बहुत अच्छा लगता है परंतु विज्ञान मुझे सबसे ज़्यादा पसंद है। मेरा सपना अंतरिक्ष वैज्ञानिक बनने का है।

अशोक मौर्य वंश का एक महान राजा था। अशोक ने लगभग सम्पूर्ण भारत पर २६८ बी.सी. से २३२ बी.सी. तक शासन किया। उसका राज्य अफ़ग़ानिस्तान के हिंदूकुश से लेकर आज के बांग्लादेश तक फैला हुआ था। उसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी। २६० बीसी में अशोक ने अपने जीवन का सबसे मुश्किल युद्ध कलिंग के विरुध लड़ा। इस युद्ध में एक लाख से अधिक सैनिक मारे गए तथा इतने ही घायल हुए।

इससे अशोक का ह्रदय परिवर्तन हो गया। अशोक ने बौद्ध धर्म को अपना लिया तथा जन सेवा के कार्य करने लगा। उसने जनता के लिए जलाशय बनवाए और चिकित्सालय बनवाए। शांति प्रतीक अशोक स्तंभो का निर्माण करवाया। आज भारत के तिरंगे में अशोक चक्र है तथा सरकारी कागज़ पर अशोक स्तंभ का अंकन होता है। ये सभी अशोक की महानता के प्रतीक हैं।

जिस व्यक्ति ने कभी गलती नहीं कि उसने कभी कुछ नया करने की कोशिश नहीं की।

अल्बर्ट आइंस्टीन

लेन्नी - नोट्रे डेम के चौकीदार

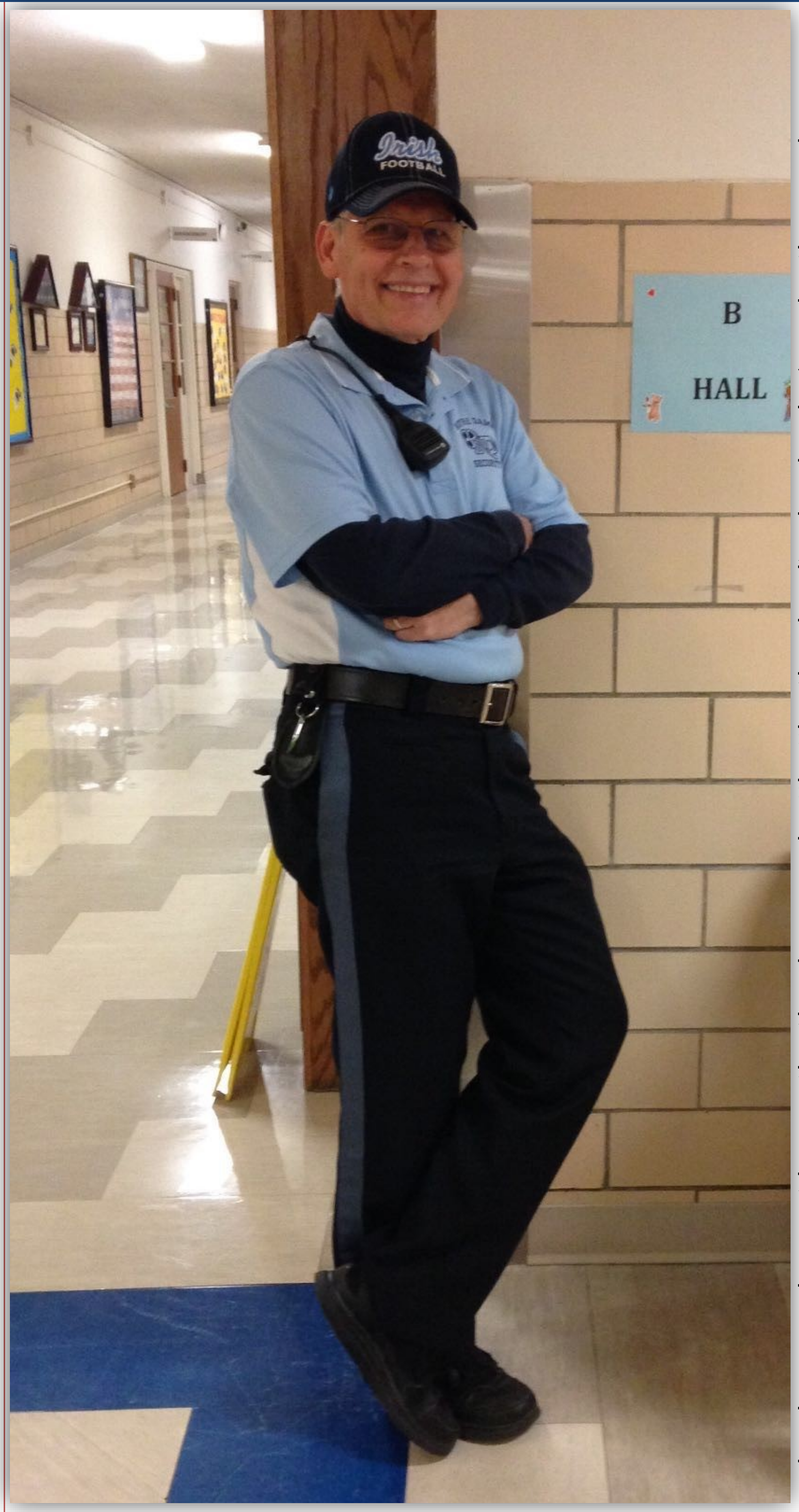

नोट्रे डेम हाई स्कूल (Notre Dame high school) में हर शुक्रवार शाम को हिन्दी यू.एस.ए. लॉरेंसेविल के बच्चे पढ़ने आते हैं। शुक्रवार शाम को अगर आप स्कूल में कदम रखेंगे तो आपको पूरे दिल से मुस्कुराते हुए, सभी का स्वागत करते हुए एक इंसान मिलेंगे। वे कोई और नहीं, नोट्रे डेम (Notre Dame) के चौकीदार यानी कि सिक्युरिटी गार्ड (Security guard), लियोनार्ड ब्रजिन्स्की (Leonard Brazinsky) हैं, जिन्हें सभी लेन्नी (Lenny) के नाम से जानते हैं। वे स्कूल में हमारी सुरक्षा का ध्यान रखते हैं। वे हमारे लिए कक्षा का प्रबंध करते हैं। कभी हम राह भटकते हैं तो हमारी सहायता करते हैं। इसलिए इस साल दिवाली पर हमने उनका इंटरव्यू लिया। आइए, हमारे साथ आप भी इन्हें जान लीजिये।

लेन्नी ने अपना बचपन जर्सी सिटी, न्यू जर्सी (Jersey City, NJ) में बिताया। वे हाई स्कूल में टेनिस, चेस और फेंसिंग (fencing) में रूचि रखते थे। दिलचस्प बात यह है कि लेखा शास्त्र (accounting) में मेजर करने के लिए उन्होंने सेंट पीटर्स कॉलेज (St. Peters College) में शाम की ६-१० की क्लास में दाखिला लिया।

उन्होंने न्यू यॉर्क सिटी (NYC) में प्रोजेक्ट अकाउंटेंट की नौकरी की, जिसके दौरान हॉलैंड टनल के छत के बजट पर काम किया।

हॉलैंड टनल का यह प्रोजेक्ट एक साल के अंदर पूरा किया गया, जिस पर ४ करोड़ (40 million) खर्च हुआ। उसके बाद उन्होंने पोर्ट अथॉरिटी ऑफ़ न्यू यॉर्क एवं न्यू जर्सी में काम किया। वहाँ से रिटायर होने के बाद ऐसे ही मन बहलाने के लिए नोट्रे डेम (Notre Dame) में सिक्योरिटी गार्ड की नौकरी कर ली।

उनके बारे में कुछ चटपटी बातें --

१. वे न्यू यॉर्क जायंट्स (NY Giants) के प्रशंसक (fan) हैं।

२. उन्हें कंट्री म्यूज़िक का शौक है।

३. वे खाने में इटालियन पसंद करते हैं - बेक्ड ज़ीटी और मीटबॉल ।

४. उन्होंने मात्र अनुभव के लिए एक बार अपने पुलिस दोस्त से कह कर अपने आप को जेल में रात भर के लिए बंद करा लिया। उन्हें यह अनुभव बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

५. रंगों में नीला रंग उनका सबसे प्यार रंग है।

उनसे बात करके हमें यह अहसास हुआ कि वे जितने हँसमुख हैं उतने ही दिलचस्प इंसान भी हैं। वे हमें पहले भी अच्छे लगते थे, पर इंटरव्यू के बाद हमारे मन में उनके लिए इज़्ज़त और बड़ गई।

पराज गोयल, अर्नव अगरवाल, नंदिनी शर्मा, आयुष शास्त्री, आरुषि आत्रेय A-२, लॉरैंसेविल

आ-२ के बच्चों का परिचय

पराज गोयल --- क्लास का सबसे चुलबुला लड़का। इनके क्लास में होने से क्लास में जान होती है। हमेशा खिलखिला कर, हँसता हुआ बच्चा है पराज।

अर्नव अग्रवाल - यह पराज का पक्का साथी है। उसकी हरकतों की आग को हवा देता और उस आग की धीमी धीमी आंच में ख़ुशी से सिकता है।

नंदिनी शर्मा - प्यारा सा चेहरा, बातों में जोश, मुस्काता हुआ चेहरा - यह है नंदिनी। यह उन बच्चों में से है जिसे हिंदी स्कूल आना अच्छा लगता है। जहाँ जाती है वहां बच्चों से आसानी से दोस्ती कर लेती है।

आरुषि आत्रेय - हमारे क्लास की टेनिस प्रशंसक, सहमी सहमी आवाज में बात करना - यह आरुषि की पहचान है। कुछ भी कहने से पहले दो बार सोच कर बात करती है।

आयुष अग्रवाल -- यह हमारे क्लास का सबसे शांत बच्चा है। जब सभी बच्चे बातों में डूबे होते हैं यह अपने काम में मग्न रहता है। एक बार पूछो तो तुरंत हाथ उठाने वालों में आयुष हमेशा रहता है।

महानता कभी न गिरने में नहीं बल्कि हर बार गिरकर उठ जाने में है

मेरा नाम अदिति चौधरी है। मैं तेरह साल की हूँ और आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं मोनरो हिंदी पाठशाला की उच्चस्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे चित्र बनाने और पढ़ने में रूचि है। मैं बड़ी होकर विश्व भ्रमण पर जाना चाहती हूँ, क्योंकि मैं हर जगह की संस्कृति के बारे में जानना चाहती हूँ।

भारत के त्योहार

सोलहवें हिन्दी महोत्सव पर

हिन्दी यू.एस.ए. को हार्दिक शुभकामनाएँ

SAI CPA Services

SAI CPA SERVICES

We Specialize In

- Accounting & Bookkeeping
- Sales Tax & Payroll tax
- Business startup services
- Income Tax Preparation for Individual & Business
- IRS problems & Representations
- Payroll Services
- Developing & Implementing Business models
- Non-profit Taxes & 501C(3) approvals
- Financial Statement preparation & Attestation

Ajay Kumar, CPA

5 Villa Farms Cir, Monroe Township, NJ 08831

Phone: 908-380-6876

Fax: 908-368-8638

akumar@saicpaservices.com

www.saicpaservices.com

जन्माष्टमी का त्यौहार

गौरवी एवं शैफाली अवस्थी - एडिसन उच्चस्तर-१

नमस्ते। मेरा नाम रूपा है। आज मैं बहुत खुश हूँ क्योंकि आज कृष्ण जन्माष्टमी है। कृष्ण जन्माष्टमी के दिन कृष्ण भगवान का जन्म हुआ था।

हर साल, मैं और मेरा परिवार इस दिन एक विशेष पूजा करते हैं। आज हम सब के पास बहुत काम होता है।

आज हमको कई नियमो का पालन करना पड़ता है। सर्व प्रथम, हमको एक विशेष व्रत करना पड़ता है। इसमें हम अन्न नही खाते हैं और फलों का आहार करते हैं। हम पूरे दिन ऐसे रहते हैं। लेकिन रात में हम सब साथ में बारह बजे पूजा करते हैं और पंचामृत और पंजिरी खाते हैं।

आज मैंने अपनी मम्मी की मदद की जब वह पंचामृत बना रहीं थीं। पंचामृत में दूध, दही, शक्कर, शहद, घी, और पाँच मेवा: चिरोंजी, मखाने, छुवारे, बादाम, और नारियल, और गंगा जल डाले जाते हैं।

जैसे की भारत में जन्माष्टमी के दिन झांकी सजाई जाती है, यहाँ हम वैसा तो नही करते हैं, लेकिन, हम कृष्ण जी की छोटी सी मुर्ति को खीरे में बैठाते हैं।

फिर हम रात में बारह बजे उनके जन्म को मनाने के लिये, हमने मुर्ति को खीरे से निकाल कर पंचामृत में नहलाते हैं। इसके बाद, उनके

श्रृंगार करते हैं। इसके बाद हम इन्हें छोटे से झूले में झूला झूलाते हैं।

इसके बाद हम पूजा और आरती करते हैं। हम फिर आँटे से बनी पंजीरी और पंचामृत का भोग लगाते हैं। अब हम इन दोनों को खाते हैं। मेरा सबसे प्रिय प्रसाद पंचामृत है क्योंकि मुझे दूध और दही बहुत पसंद है।

मुझे कृष्ण जन्माष्टमी बहुत पसंद है क्योंकि हम सब बहुत देर तक जगते हैं और पूरा परिवार साथ-साथ पूजा करता हैं।

चेरीहिल स्कूल के कनिष्ठ-१ के विद्यार्थी अर्नव सेठी और रिया कलिकिरि ने खेल-खेल में सीखी गिनती। इस परियोजना से इन्होंने रंग, जानवरों के नाम तथा साधारण जीवन में काम आने वाले सरल शब्द सीखे। इन्होंने बड़ी ही रुचि के साथ अपने अपने कोलाज बनाए और बहुत ही उत्सुकता के साथ कक्षा में प्रस्तुत किए। इस कार्य में इन्होंने बहुत कुछ सीखा और सबको बहुत आनंद आया।

हिंदी यू.एस.ए.
एक संयुक्त त्यौहार

मुक्ता कापसे

मैं हिंदी यू.एस.ए. के मोनरो स्कूल में प्रथमा-२ की अध्यापिका हूँ। यहाँ ४ साल से सुनीता गुलाटी जी के मार्गदर्शन में पढ़ा रही हूँ। मेरी क्लास के कुछ बच्चों ने “मेरी थालियाँ” और “कैलेंडर” के क्रिया कलाप किये।

त्यौहार को अंग्रेजी में हम फेस्टिवल कहते हैं। अब हम विदेश में बसे हैं और इसलिए प्रवासी कहलाते हैं। यहाँ सबसे ज्यादा अगर हम भारतीय किसी बात को दिल में बसाये हुए सालों याद करते है तो वे हैं हमारे भारतीय त्यौहार!!

आजकल की तनाव भरी जिंदगी में त्यौहार भी अपना अस्तित्व खोते जा रहे हैं। आधुनिकताओं के नाम पर या सहूलियतों के नाम पर रस्मों की प्रधानताएं बदलती जा रही हैं। वक़्त के साथ त्यौहार की आवश्यकताएं बदलती जा रही हैं।

भारत देश में कई सारे त्यौहार हैं। हर त्यौहार का अपना एक महत्व है, विशेषता हैं, कोई खास दिन, कोई खास वजह ... मगर सोचा जाये तो सारे त्यौहार फिर वो भारतीय हों या अमेरिकन, खुशियां मनाने के तरीके होते हैं। अपनों के साथ, मित्रों के साथ ख़ुशी में बिताये समय का नाम ही तो त्यौहार है। अनजानों से पहचान, परायों को अपनाना, अपनी परेशानी को कुछ समय के लिए भुला कर सबके साथ खुशियां बाँटना ही त्यौहार है।

इसलिए आज मैं यहाँ किसी खास उत्सव की बात न करते हुए हमारे हिंदी यू.एस.ए. की बात करना चाहती हूँ। हर शुक्रवार की शाम सात बजे बच्चों के साथ समय बिताना जैसे एक रस्म सी बन गयी है। नन्हे बच्चों के साथ उनके नजरिये को बाँटते हुए उनको अपनी सोच में ढालने का प्रयास, यही विशेषता है इस रस्म की। सदियों की

परम्पराओं को और संस्कारों की विरासतों को आगे बढ़ाने का यह प्रयास, जैसे अपने आप में एक त्यौहार सा बनता जा रहा है। कितने ही लोगों से जुड़कर, उन्हें जानकर, मित्रता बढाकर, सबके साथ हफ्ते भर की झुनझुनाहट भुलाकर ख़ुशी बटोरने का यह प्रति सप्ताह पाठ, हिंदी यू.एस.ए. के सभी अध्यापकों और अध्यापिकाओं के लिए एक उत्सव सा हो गया है। हमारे कक्षा के छात्र और छात्राओं के क्रियाकलाप की कुछ झलकियां मैं यहाँ आपसे बाँटना चाहूँगी।

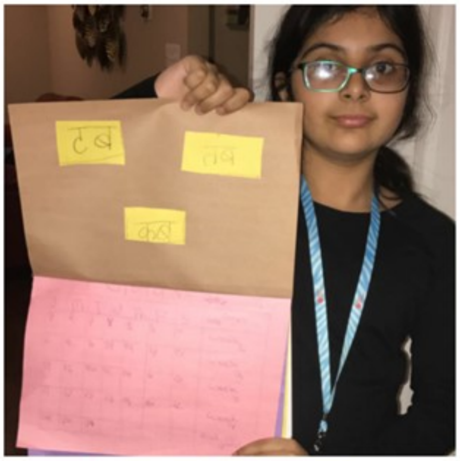

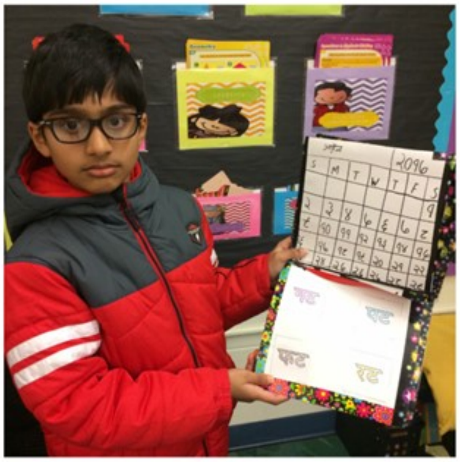
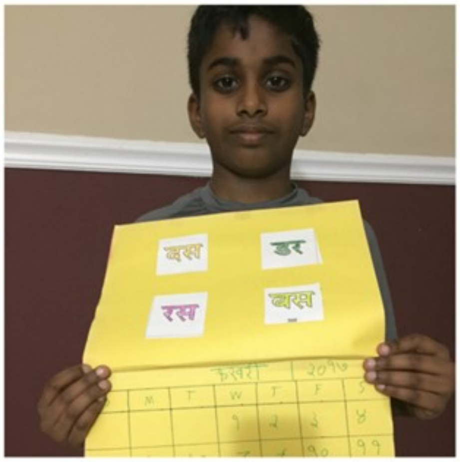
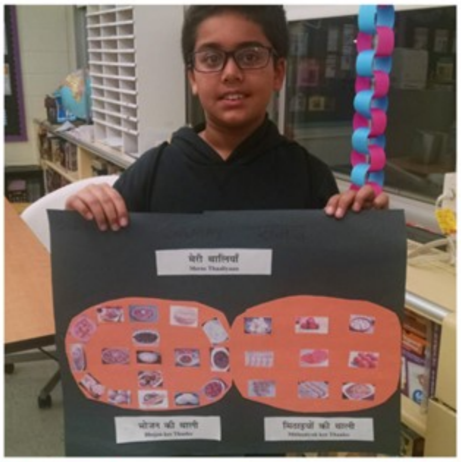
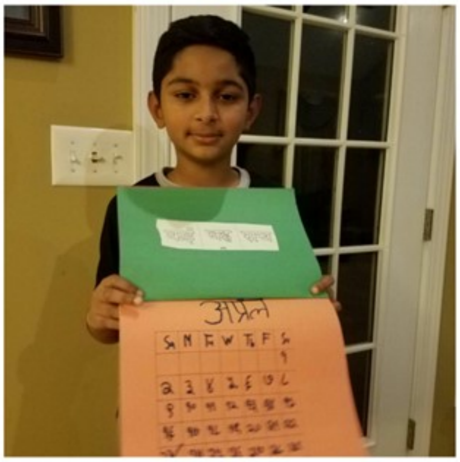
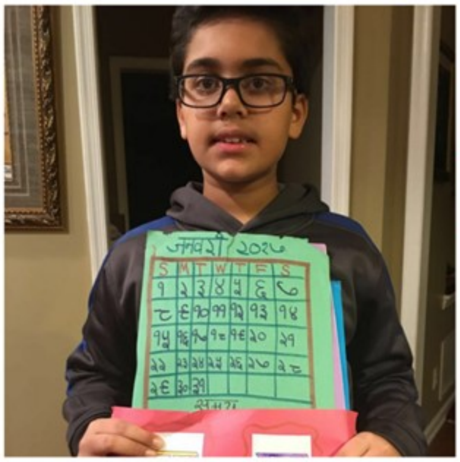
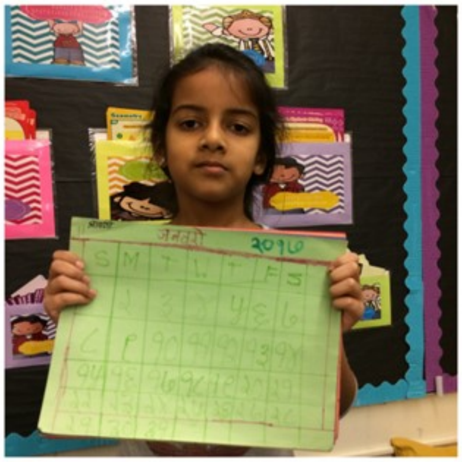

दिवाली

दिवाली रोशनी का त्यौहार है। यह त्यौहार मैं अपने चचेरे भाइयों और दादा-दादी के साथ हर साल मनाता हूँ। हम पहले पूजा करते हैं और दिवाली की कहानी पढ़ते हैं। फिर हम उपहार खोलते हैं और एक दूसरे को कार्ड देते हैं। उसके बाद मेरे चचेरे भाई और मैं एक साथ खेलते हैं। खेलने के बाद हम आतिशबाजी के लिए बाहर जाते हैं। फिर हम अंदर आते हैं और खाना खाते हैं। दिवाली पर हमेशा बहुत मज़ा आता है।

किरण खन्ना - **लॉरेंसविल - प्रथमा १**

चेस्टरफील्ड पाठशाला – प्रथमा-२

मेरा नाम सुमन राठौड़ है और मैं चेस्टरफील्ड पाठशाला में प्रथमा-२ की अध्यापिका हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. से सात सालों से जुड़ी हुई हूँ। मेरे साथ मेरी सहायक शिक्षिका भावना उपाध्याय जी हैं। हम दोनों को ही बच्चों को पढ़ाना अच्छा लगता है और बच्चे भी कुछ नया सीखने के लिए उत्सुक रहते हैं। इस बार हमने दिवाली पर क्राफ़्ट में बच्चों से लालटेन बनवाई और उन्हें दिवाली की सजावट के बारे में जानकारी दी। बच्चों ने बहुत ही उत्साह के साथ काम किया। हमें ख़ुशी है कि हम इस संस्था से जुड़े हुए हैं और आगे भी अपना प्रयास जारी रखेंगे।

राष्ट्रीय त्यौहार - १५ अगस्त और २६ जनवरी

भारत के राष्ट्रीय पर्व हैं हमारे स्वाभिमान की अमिट पहचान।

आज़ादी के वीर शहीदों का राष्ट्र करता वंदन और गुणगान।।

पंद्रह अगस्त को आज़ादी और जनवरी छब्बीस को संविधान।

हर हाल में संभालनी होगी भारत की ये आन बान और शान।।

नॉर्थ ब्रंस्विक पाठशाला

मेरा प्रिय पर्व

नमस्ते, मेरा नाम सक्षम भारद्वाज है। मैं ईस्ट ब्रुन्सविक हिंदी पाठशाला की मध्यमा-२ कक्षा में पढ़ता हूँ। इस वर्ष मैं अपनी हिंदी पाठ्य पुस्तक में संयुक्त शब्द पढ़ रहा हूँ। इन्ही शब्दों की मदद से मैं अपने प्रिय त्यौहार के बारे में बताना चाहता हूँ। मेरी माता जी भी हिंदी स्कूल में पढ़ाती हैं।

मुझे होली बहुत अच्छी लगती है। होली एक प्रसिद्ध त्यौहार है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। पहले दिन होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन, लोग एक दूसरे पर रंग, गुलाल फेंकते हैं। इस दिन भारत में छुट्टी होती है। इस पर्व पर हम सब रिश्तेदारों को बधाई देते हैं। होली पर हम प्यार से गले मिलते हैं, और स्वादिस्ट व्यंजन बनाते हैं। हम घर पर शक्कर और घी से अनेक प्रकार के मिष्ठान भी बनाते हैं। जो भी इस दिन होली मिलने आता है, हम उसका स्वागत करते हैं। होली पर कई जगह अमेरिका में उत्सव होते है, और कई कार्यक्रम भी होते हैं। होली हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैं होली खेलकर बहुत प्रसन्न होता हूँ। **(क्या आप बता सकते है इस लेख में कितने संयुक्त शब्द हैं ?)**

बर्फ का दिन

मेरा नाम यक्षा सेठ है। मैं वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मैं इजलीन मिडिल स्कूल में छठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ।

घड़ी में ग्यारह बज गए लेकिन मुझे कुछ भी बर्फ नहीं दिख रही थी। मैंने समाचार में सुना था, कि आज रात को बहुत बर्फ गिरेगी, तो अब तक बर्फ क्यों नहीं गिरी? मुझे समाचार पर भरोसा था इसलिए मैं अपने पलंग पर जाकर सो गयी और सुबह तक इंतजार किया।

सुबह उठकर मैंने पहले खिड़की से बाहर देखा, लेकिन मुझे सब जगह सफेद ही सफेद दिख रहा था। क्या मेरी आँखें खराब हो गई? नही, कल रात का समाचार सही था। घास पर, गाड़ी पर, पेड़ों पर और सड़क पर, सारी जगह सफद ही सफेद था। मैं बहुत खुश थीं। "मैं सारा दिन बर्फ में खँलूगी", मैंने सोचा।

तैयार होकर मैंने कोट पहना और जल्दी बाहर दौड़ी। मैंने अपने बहन को बुलाया और हमने बर्फ में खेलना शुरू किया। हम बर्फ में कूदे, बर्फ के आदमी बनाए और एक दूसरे पर बर्फ की गेंदें बनाकर फेंकीं। हम तब तक खेलते रहे जब तक थक नहीं गए। मुझे यह बर्फ का दिन बहुत अच्छा लगा।

हमारा प्रिए त्यौहार

मेरा नाम उज्जवल राठौड़ है। मैं चेस्टरफ़ील्ड हिंदी पाठशाला के उच्चस्तर-२ में पढ़ता हूँ। मुझे ख़ुशी है कि मैंने हिंदी सीखनी शुरू की। अब मैं हिंदी बोल और लिख सकता हूँ। मुझे पिछले साल हिंदी यू.एस.ए. की तरफ से भारत भ्रमण का अवसर मिला जो मेरे लिए बहुत ही यादगार रहेगा।

मुझे सभी त्यौहार पसन्द हैं, पर दिवाली सबसे ज्यादा। दिवाली पर काफी दिनों पहले से ही घर में सफाई शुरू हो जाती है, वैसे तो यहाँ ज्यादा कुछ मिट्टी नहीं होती, फिर भी मम्मी कहती हैं, “नहीं दिवाली की सफाई जरुरी है। हम भी बचपन में किया करते थे”। फिर मैं उनकी मदद करता हूँ।

दिवाली से कुछ दिनों पहले ही मेरे पापा घर के बाहर रौशनी की लड़िया लगाते हैं, पर मैंने देखा की कुछ भारतीय क्रिसमस पर तो रौशनी करते हैं पर दिवाली पर नहीं। मैं उनको यही कहना चाहूँगा कि हम अपने त्यौहार को भी क्यों न अच्छे से मनाएँ जैसे हम यहाँ के बाकी के त्यौहार को मनाते हैं।

दिवाली पर मम्मी मिठाइयाँ बनाती हैं, वैसे सच बोलूँ, मुझे मीठा ज्यादा पसंद नहीं है, पर क्या करें खानी पड़ती है, क्योंकि मम्मी ने बनायी हैं।

मुझे और मेरी बड़ी बहन को दिवाली पर उपहार भी मिलते हैं। मेरी बहन और मम्मी रंगोली बनाती हैं। शाम को हम सब साथ मिलकर पूजा करते हैं, दीये जलाते हैं। हम लोग बाद में सबको मिठाइयाँ देने जाते हैं और थोड़े पटाखे भी जलाते हैं। मैंने कभी दिवाली भारत में नहीं मनाई, बस एक बार मैं वहाँ की दिवाली भी देखना चाहता हूँ।

नमस्ते, मेरा नाम अपेक्षा सूद है और मैं चेस्टरफ़ील्ड हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ती हूँ।

दिवाली भारत का प्रसिद्ध त्यौहार है। इस त्यौहार को हम सब बहुत धूमधाम से मनाते हैं। हम सब सुबह जल्दी उठकर तैयारी में लग गए। मैंने अपनी माँ के साथ रंगोली बनाने में मदद की। फिर हम सब ने मिलकर शाम को लक्ष्मीमाता की पूजा की। उसके बाद हमने दीये जलाए। हमारा सारा घर दीयों से जग मगा उठा। हमारा घर बहुत अच्छा लग रहा था। उसके बाद हमने बहुत सारी मिठाई खाई। फिर हमने फुलझड़ी चलाई। मैं अभी से अगली दिवाली का इंतजार कर रही हूँ।

नमस्ते, मेरा नाम अदिति विजयवर्गीय है। मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और चैस्टरफील्ड हिन्दी पाठशाला की उच्चस्तर-२ कक्षा में हूँ।

अदिति विजयवर्गिय

हर बार की तरह इस दिवाली का भी मैंने इंतजार किया। इस बार बड़ी दिवाली रविवार के दिन होने से मैंने पूरे दिन त्योहार का आनंद लिया। सुबह उठकर तैयार हो कर हमने हनुमान जी की पूजा की और प्रसाद खाया। फिर पापा के साथ मैंने बाहर लाइट लगाई। दिन के खाने के बाद पापा के साथ इंडियन स्टोर जाकर खरीदारी की जैसे दीये, मिठाई, फल आदि। घर आकर मैंने रंगोली भी बनाई। जो मम्मी, पापा, सब को बहुत पसंद आई। शाम को मम्मी के साथ दीये लगाए। बाद में, हमने भगवान की पूजा की। हमने पटाखे छुड़ाये और मिठाईयाँ खाई। मम्मी ने बहुत सारी चीजें बनाई थी। रात में कुछ परिवार के दोस्त मिलने आए और हमने बहुत सारी बातें की। पूरा दिन बहुत खुशी से बिताया।

सफलता की ख़ुशी मानना अच्छा है पर उससे ज़रूरी है अपनी असफलता से सीख लेना।

बिल गेट्स

हमारे प्रिय त्यौहार

चेस्टरफील्ड हिन्दी पाठशाला, मध्यमा-३

मेरा नाम स्वाति वरडे है। मेरी पसंदीदा छुट्टी **होली** है। होली मार्च के महीने में आती है। यह त्यौहार पूरे भारत में मनाया जाता है। लोग आग भरे गड्ढे का निर्माण करते हैं और उसकी पूजा करते हैं। होली रंगों का त्यौहार भी कहा जाता है। इसलिए लोग इस अवसर पर रंगों के साथ खेलते हैं। इस त्यौहार का मतलब बुराई पर अच्छाई की जीत भी है। यही कारण है कि लोग लकड़ी जला कर उसके चारों और नृत्य करते हैं। अगले दिन सुबह लोगों को रंगों के साथ खेलने का अवसर मिलता है। नीले, हरे, लाल, पीला, सुनहरा, और कई अन्य रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। कभी कभी वे रंगीन पानी के साथ गुब्बारे को भरते हैं और एक दूसरे पर फेंक देते हैं। कोई भी एक दूसरे पर क्रोधित नही होता है और हर कोई इस त्यौहार को मना कर मज़ा करता है। तो, यही वजह है कि मुझे इस त्यौहार से प्यार है।

होली उत्सव - सारा सिंघल

"भारती, होली उत्सव के लिए चलते हैं!" सारा ने कहा। भारती ने सिर हिलाया।" मैं तुम्हारे साथ आऊँगी!" उसने कहा। वे होली उत्सव के लिए एक साथ चले गए। "सारा और भारती आपका स्वागत है!" उनकी माताओं ने एक स्वर में कहा। अचानक, भारती की माँ और सारा की माँ ने उन पर होली के रंग फेक दिए। भारती और सारा जल्दी से अपनी माँ और सहेलियों के पीछे हाथ में अलग अलग होली के रंग लेकर भागी। उनकी सहेलियाँ ज़ोर से चीख़ी और चिल्लाईं जब सारा और भारती ने उन पर होली के रंग फेके। "नहीं रूको, रूको, बंद करो!" वे चिल्लाए। भारती होली के रंग फेकती रही यह सोचकर कि उसकी सहेलियाँ मज़ाक़ कर रही थीं। वे रोने लगीं क्योंकि उनकी आँखों में होली का रंग चला गया था। "बस भारती बस करो! हमारी सहेलियों को चोट लगी है!" सारा ने कहा। उनके माता पिता आकर उन्हें वहाँ से ले गए। "मुझे माफ़ कर दीजिए।" भारती बोली। "कोई बात नहीं। कम से कम हमने मज़े तो किए!" सारा बोली। वे दोनों एक साथ घर चली गईं।

मेरा नाम कुश गाँधी है। आज **दीपावली** है। आज मेरी माता की बहन आयी हैं। मौसी के आने से पहले सजावट, लटकाई और रोशनी लगाई गई। सात बजे हमने रात का खाना खाया। हमने लड्डू, पनीर, पूरी, नान और दाल भी खाया। खाने के बाद खिलौने के उपहार मिले। मैं बेसमेंट में बाकी के खिलौने लेने गया। मैंने दर्शकों के लिए एक बड़ा किला बनाया। दूसरे दिन सुबह नौ बजे हम स्वामीनारायण मंदिर गए। वहाँ हमने पूजा की और भगवन कृष्ण की प्राथना की। मंदिर में हम सब ने एक कुल्फी और पावभाजी खाई। आप सबको भी दिवाली की शुभकामनाएँ।

मेरा नाम संकेत कामथ है। मेरी पसंदीदा छुट्टी **दीवाली** है। आप जब दीवाली सुनते हो तो मन में क्या विचार आते हैं? लाइट्स, मिठाई, या आतिशबाजी। दिवाली बुराई पर अच्छाई की जीत का जश्न मनाने का अवकाश है। अंधकार पर प्रकाश की विजय हो। इस दिन राम ने रावण को मार डाला था, और चौदह साल वनवास ख़तम करके घर वापस लौट आए थे। राज्य के लोगों ने उनके आने के इंतज़ार में रात को दिए जला कर रखे थे। मेरी माँ ने मेरे बालों में तेल डाला था और फिर मैंने गर्म स्नान किया था। मुझे यकीन है कि कई अन्य लोगों ने भी ऐसा किया होगा। लेकिन क्या तुम जानते हो क्यों? शारीरिक और भावनात्मक यह अपने आप को सब बुरी बातें से छुटकारा दिलाता है। बुरी बातों को भूल जाओ, और हर किसी को मिठाई देने जाओ, यहां तक कि अपने दुश्मनों को भी।

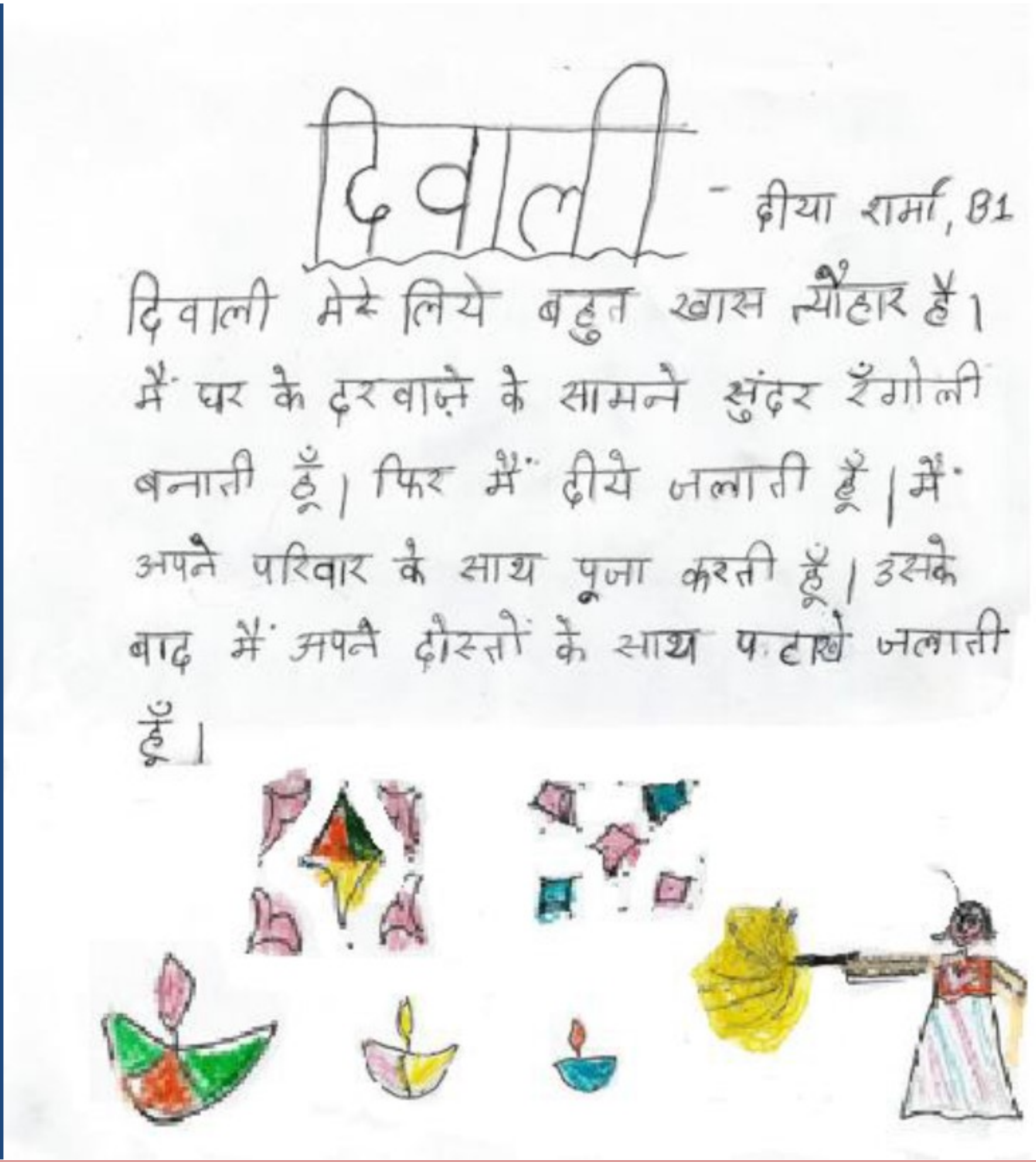

दिवाली - दीया शर्मा, B1

दिवाली मेरे लिये बहुत खास त्यौहार है। मैं घर के दरवाज़े के सामने सुंदर रंगोली बनाती हूँ। फिर मैं दीये जलाती हूँ। मैं अपने परिवार के साथ पूजा करती हूँ। उसके बाद मैं अपने दोस्तों के साथ पटाखे जलाती हूँ।

मेरा नया साल - चैरी हिल हिंदी पाठशाला - कनिष्ठ २

नया साल!! यूँ तो बच्चों को अंग्रेज़ी नव वर्ष “जनवरी १” के बारे में तो बहुत कुछ पता है, परंतु पारंपरिक भारतीय नव वर्ष की जानकारी बहुत कम बच्चों को अवगत होगी। कनिष्ठ-२ के छात्रों का इन भारतीय नव वर्ष के विभिन्न त्यौहारों से और उनके महत्व से परिचय करवाने के लिए हमने “मेरा नया साल” नामक एक अभ्यासपूर्ण प्रस्तुति की। शीतकालीन अवकाश में बच्चों ने नये साल का एक भारतीय त्यौहार चुनकर अपने माता-पिता की सहायता से एक पोस्टर बनाया। इसमें यह त्यौहार “कब”, “कहाँ”, “कैसे” और “क्यों” मनाते हैं इसका विस्तृत विवरण चित्रों के साथ एकत्रित करके कक्षा में सभी विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत किया।

चैत्र नवरात्रि: मध्य/उत्तर/हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तरखंड, छतीसगढ़, झारखंड

कब: चैत्र के प्रथम दिन

कैसे: नौ रात्रि देवी शक्ति की पूजा

होली: मध्य/उत्तर/हिमाचल प्रदेश, हरियाणा तथा देशभर में

कब: फागुन के आखरी दिन

कैसे: होलीकादहन, पूजा व रंगों के साथ

युगाधि: आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तेलंगाना

कब: चैत्र के प्रथम दिन

कैसे: आम के पत्तों का तोरन व पूजा

विशु: केरल

कब: अप्रैल १४

कैसे: “विशुकन्नी” पूजा

गुढी पड़वा: महाराष्ट्र व गोवा

कब: चैत्र के प्रथम दिन

कैसे: घर के द्वार पर “गुढी” लगाकर

बैसाखी: पंजाब

कब: अप्रैल १३/१४

कैसे: खूब नाच-गाकर

थापना: राजस्थान

कब: अप्रैल ८

कैसे: होम-हवन करके

नवरेह: काश्मीर

कब: चैत्र के प्रथम दिन

कैसे: शरीका देवी की पूजा

पुथंडु: तमिलनाडु और पुदुच्चेरी

कब: अप्रैल १४

कैसे: रंगोली एवं दीपक लगाकर

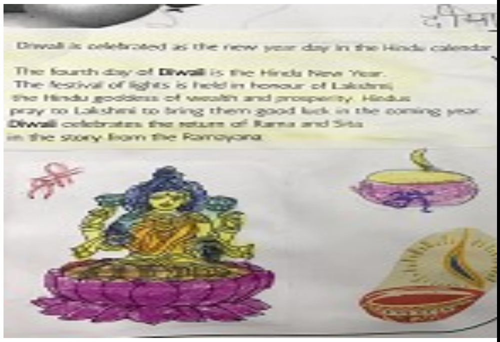

दीपावली: गुजरात

कब: कार्तिक माह की अमावस्या

कैसे: रंगोली, दीये और पटाखों के साथ

रोंगाली बिहु: असम

कब: अप्रैल १४

कैसे: खेत में नए बीज बोकर

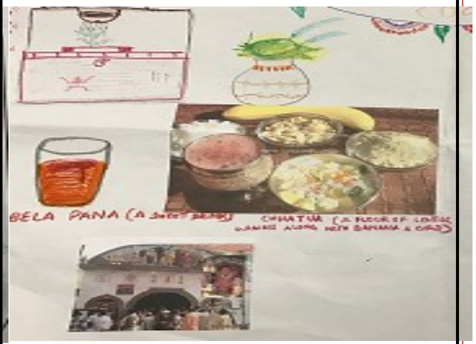

विशुभ संक्रान्ति : ओड़िसा

कब: अप्रैल १४

कैसे: सूर्य पूजा और मिठाइयाँ बाँटकर

सभी त्यौहारों में परंपरागत विधियों के साथ लोग आपस में मेलजोल करते हैं एवं खास पकवान और मिठाइयाँ भी बाँटते है। इतने विविध रूपों में मनाए जाने वाले नए वर्ष तो शायद ही किसी और राष्ट्र में देखने को मिलेंगे। हमारे देश की समृद्ध संस्कृति और विभिन्न परम्पराओं की धरोहर का इन त्यौहारों में बखूबी दर्शन होता है। इन्हें मनाने की विधियाँ भिन्न सही, परंतु इन सभी त्यौहारों का मूल एक है, समस्त भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोए रखना। सभी त्यौहार लोगों को उत्साह, खुशी व भाई-चारे का संदेश देते हैं। बच्चों को भी इस बात का ज्ञान हुआ और भारत के प्रति हमारा प्रेमभाव अधिक सुदृढ़ हो गया।

दीपावली उत्सव

बबीता भारद्वाज - एडिसन कनिष्ठा-२

आई दिवाली आई दिवाली, आई दिवाली रे।
ख़ुशी मनाओ दीप जलाओ, आई दिवाली रे।
ख़ूब चले फुलझड़ी पटाखे, आई दिवाली रे।
सबको बाँटो ख़ूब मिठाई आई दिवाली रे।

इन सुंदर और सरल कविता के माध्यम से दीपावली के विषय में जानकारी देते हुए मैंने अपनी कक्षा में सभी बच्चों से उनकी भी जानकारी और अनुभवों को सुनते हुए चर्चा की। कविता की पंक्तियों का उदेश्य एवं महत्व बताते हुए उन्हें त्यौहार की महत्ता और उससे संबंधित वस्तुओं के नाम भी याद कराए। सभी बच्चों ने अपने भिन्न-भिन्न रिवाजों से दीपावली मनाने के तरीक़ों को बड़े उत्साह से कक्षा में सभी को अवगत कराया। बच्चों ने दीपावली के दीयों के बहुत सुंदर चित्र बनाए।

कक्षा के सभी बच्चे इस अवसर पर सुंदर भारतीय पोशाकें भी पहनकर आए। कक्षा के अंत में सभी को दीपावली की ख़ुशी में मिठाई बाँटी गई जो कि सभी ने बड़े स्वाद से खाई।

दीपावली एक ऐसा त्यौहार है जो कि पूरे भारतवर्ष में बहुत धूमधाम और उल्लास के साथ मनाया जाता है। बच्चे और बड़े सभी का यह प्रिय त्यौहार है।

अमेरिका में हिंदी के माध्यम से यहाँ पर रह रहे सभी भारतीय मूल के बच्चों को भारत की संस्कृति और त्यौहार के बारे में जानकारी देना और उनको भारत की राज भाषा हिंदी की महत्ता को सिखाना ही हम सब शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का उदेश्य है, और आगे भी इस प्रकार से हम सभी इस कार्य को पूर्ण निष्ठा से आगे बढ़ाते जाएँगे।

दीपावली उत्सव

मोनिका जैन और नमिता गुप्ता - होल्मडेल कनिष्ठा-१

हमारी हिंदी पाठशाला में हम सबने दिवाली खूब अच्छे से मनाई। दिवाली की शुभकामना वाले रंग बिरंगे कार्ड्स बनाये।

हमारे बच्चों ने सीखा कि दिवाली के ५ दिन होते हैं। पहले दिन को धनतेरस कहते हैं, दूसरे दिन को छोटी दिवाली कहते हैं, तीसरे दिन दिवाली होती हैं, चौथे दिन को गोवर्धन पूजा होती है, और पाँचवे दिन को भाई दूज कहते हैं। हमारे बच्चों ने अपने घर में भी दीए जलाये और मम्मी और पप्पा को दिवाली की शुभकामना दी। उन्होंने भी घर में धन की पूजा की और बहुत सारी मिठाइयाँ खाईं।

इसी तरह हमारे बच्चों ने सीखा की दिवाली एक बहुत बड़ा त्यौहार हैं। इसे भारत में बहुत जोर शोर से मनाया जाता है। इस दिन श्री रामजी १४ साल के वनवास के बाद अयोध्या वापिस आए थे। इसी ख़ुशी में अयोध्या के लोगों ने पूरे शहर में दीए जलाये थे। तब से आज के दिन सब लोग भारत में ख़ुशी और उल्लास से दिवाली मानते हैं। इस दिन सभी अपने घर में खूब सारे दीए जलाते हैं। लोग इस दिन खूब सारे फटाके जलाते हैं।

'तिरंगा' - हमारी शान

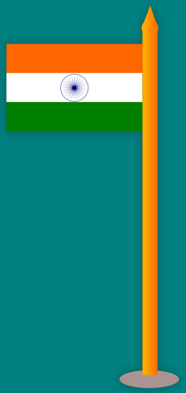

मेरा नाम अदीत्री चौहान है। मैं हिन्दी यू.एस.ए. की साउथ ब्रन्सविक शाखा की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी भाषा और भारतीय तीज-त्यौहार बहुत अच्छे लगते हैं।

करीब सत्तर साल पहले, २२ जुलाई, १९४७ को, भारत ने एक बहुत खास ध्वज को अपनाया। नारंगी, सफेद और हरे रंग की तीन धारियाँ, और बीच में २४ तीलियों का नीला चक्र भारत की शान है। न्यायिक तौर पर, यह ध्वज खादी से बनता है, जो महात्मा गाँधी द्वारा प्रचलित हुआ था। लेकिन इन रंगो का अर्थ क्या है, शायद यह सभी नहीं जानते। नारंगी रंग ताकत और साहस को दर्शाता है और वह हमारे बहादुर सैनिकों के लिए एक श्रद्धांजली है। सफेद रंग शांती और सच्चाई का प्रतीक है तथा नीला चक्र, जिसे अशोक चक्र कहते हैं, न्याय को दर्शाता है। सबसे नीचे हरा रंग होता है जो हरियाली, खुशहाल जीवन और पवित्रता का द्योतक है। इससे हमें ज्ञात होता है कि ये केवल रंग और चित्र नहीं हैं बल्कि इनके कितने गहरे अर्थ हैं। और इसी लिए हमें अपने ध्वज पर बहुत गर्व है।

अधिकारी और वाहन चालक

नेहा जैन – मध्यमा ३, साउथ ब्रंस्विक

कथावाचक: रामपुर नगर में बहुत शांतिपूर्वक दिन चल रहा था। अचानक से वाहन चालक ने पूरे नगर में तमाशा बना दिया।

अधिकारी: अरे रुको तुम इतनी तेज़ गाड़ी नही चला सकते हो।

वाहन-चालक: तुम मुझे नही पकड़ सकते। मुझे पकड़ना नामुमकिन है।

कथावाचक: रामपुर नगर में अधिकारी की ज्यादा कोई सुनता नही था। इसलिए अधिकारी को इस वाहन-चालक को पकड़ना ज़रूरी था। वाहन-चालक छोटी-छोटी गलियों से तेजी से अपनी गाड़ी घुमाते हुएँ और मुस्कुराते हुएँ जा रहा था कि तभी अधिकारी सामने आ खड़ा हुआ। अधिकारी ने वाहन चालक को पकड़ कर नगर के जेल मे बन्द कर दिया।

सीख: हमे गाड़ी धीरे चलानी चाहिये और अधिकारी की बात सुननी चाहिये।

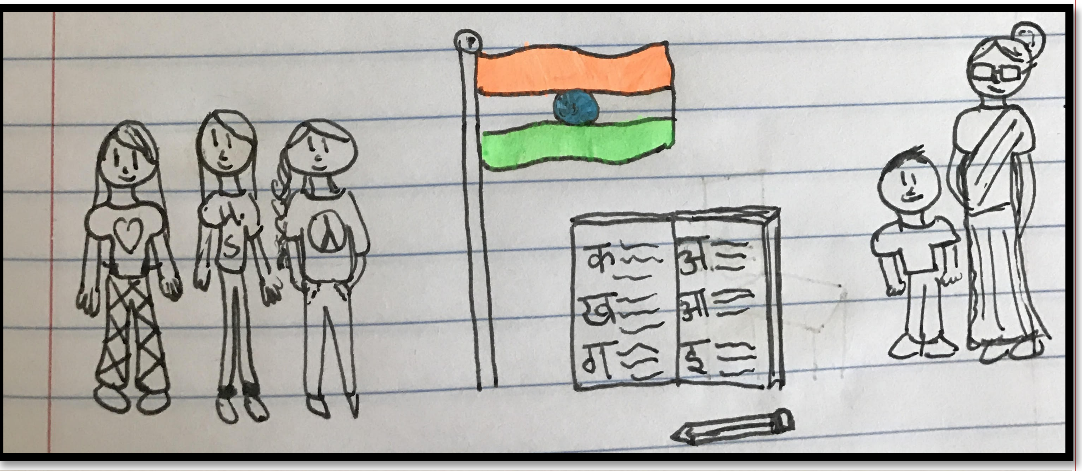

नमस्ते। मेरा नाम आरुषी मल्लाखु है। मैं विल्टन पाठशाला के I-2 कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे हिन्दी पाठशाला जाना बहुत पसन्द है। मैं हिन्दी सीखती हूँ ताकि मैं अपने घरवालों से हिन्दी में बात कर सकूं। मुझे हिन्दी पाठशाला में अपना सहेलिया से मिलना भी बहुत अच्छा लगता है।

दुःख सहने वाला तो आगे चलकर सुखी हो सकता है, मगर दुःख देने वाला कभी सुखी नहीं हो सकता

LOKA is a school in Bihar, North India - this special school gives students the complete holistic education they need for the world today! All the basics are covered as well as classes in Art and Social Activities...like building Solar powered lamps to study by! Sanskrit, Yoga and Meditation, Social Awareness and more. The Community has an organic farm growing fruits and vegetables, herbs, pulses, and rice. Local village people are hired to build classroom furniture, knit sweaters and sew uniforms for the students, to work on the farm, etc. LOKA aspires to Sustainability on all counts, instilling a love for Nature and the beauty of Village Life.

Making this New Year at LOKA another Bright & Beautiful one requires our support - there are many important and wonderful programs to Fund: Sponsorship for new students, uniforms, school supplies, books, art projects, yoga and meditation/personal presentation/communication classes, Fruits on Fridays and more!

Those who have donated to LOKA say how happy they feel to see their contributions at work; even small amounts such as $10 or $20 go far in India. LOKA posts pictures on their FaceBook page regularly so we can follow along and see how the initiatives we fund come to life! It is a Great Feeling to Support these students, to feel connected to this Village and School and Community and group of wonderful dedicated people in Bihar. A contribution to LOKA contributes to an important Whole…Please join in as you can, Share with others, and enjoy investing what you can into the Bright Future being created!

Here is how you can contribute in any amount that you can:

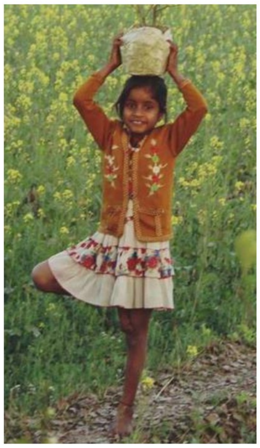

Education Sponsorship (10 students are currently in need) - **$360 per student**
covers one whole year, 6 days per week from 8 am to 6 pm

School Clothes (consists of two uniforms, shoes, gym outfit) - **$43/per set**
the children feel very good about themselves in their school uniforms - and everyone becomes an equal too. Local tailors are employed to make all these items!

Yoga Teacher - **$300/month or $3600/year**
students receive classes in Yoga and Meditation and personal presentation/communication skills.
the children really blossom with the inclusion of their Yoga practice and studies.

School Books and Supplies - $43 per student/per year

Fruits on Friday - $51/month for 80 students or $12.75/week for 80 students
this too, becomes a learning experience for the students who manage the money, shop for the fruits in season, wash and prepare them and distribute to everyone. when there is extra they share the bounty with elders in the village.

LOKA welcomes and appreciates your support - if you would like to donate any amount please do so at Paypal (family/friend option) at lokafoundation@gmail.com
Or contact USA ambassadors: Sandeep (917) 941-1091 or Netu (201) 628-4664
100% of your donation goes directly to LOKA, visit them at:
https://www.facebook.com/lokalocus/

Watch the Introductory Video: https://www.youtube.com/watch?v=pLqobjDnu-Q

LOKA

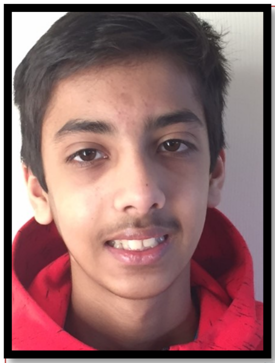

अनुशासन

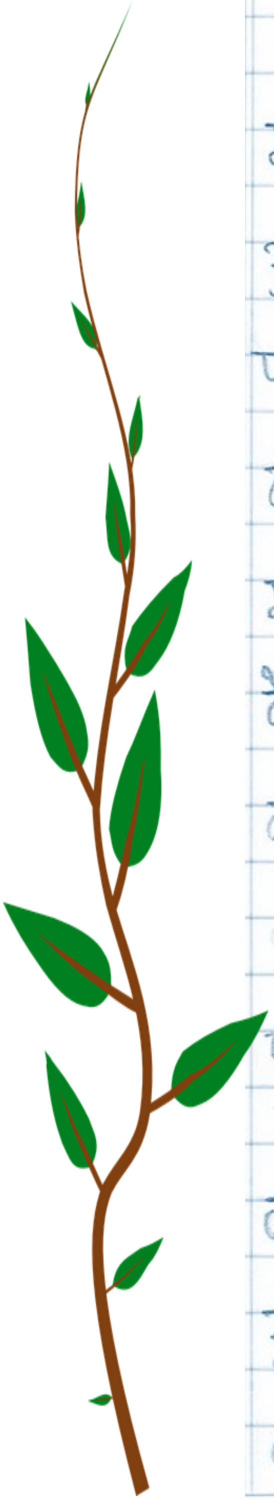

मेरा नाम श्रेय जोशी है। मैं वेस्टफील्ड हिन्दी स्कूल में उच्च स्तर-1 का छात्र हूँ। मैं 12 वर्ष का हूँ और रोबाटिक्स एंव शतरंज खेलना मुझे बहुत पसंद है। आज मैं आपको जीवन में अनुशासन का महत्त्व बताऊँगा। अनुशासन का अर्थ है "नियम में बंधकर चलना"। समय, स्थान तथा स्थिति के अनुकूल रहकर सामान्य नियमों का पालन करना ही अनुशासन है। अनुशासन द्वारा ही व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ती कर समाज में प्रतिष्ठा पाता है।

अनुशासन हीनता अपराध, झगड़े ईर्ष्या आदि भावनाओ को जन्म देती है और हमारी उन्नति में बाधा बनती है। अतः सादे और विवेकपूर्ण जीवन के लिए अनुशासन बहुत जरूरी है।

नमस्ते।

मेरा नाम यश्वी परिख है। मैं प्रथमा-२ ईस्ट ब्रंस्विक पाठशाला में पढ़ती हूँ। मैं ६ साल की हूँ। मुझे ड्रॉयिंग और क्राफ़्ट करना बहुत पसंद है। मैंने अपना नाम यह पोस्टर में Perler beads का उपयोग करके हिन्दी में लिखा है।

मुझे हिन्दी पढ़ना, बोलना और लिखना अच्छा लगता है।

मेरा नाम दीपाली जैन है। मैं पाँच वर्षों से चैरीहिल हिंदी पाठशाला के मध्यमा-१ के छात्रों को पढ़ा रही हूँ। मुझे अपने खाली समय में चित्रकारी करना पसंद है। मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ कि मुझे कर्मभूमि पत्रिका में अपने चित्र प्रस्तुत करने का अवसर मिला।

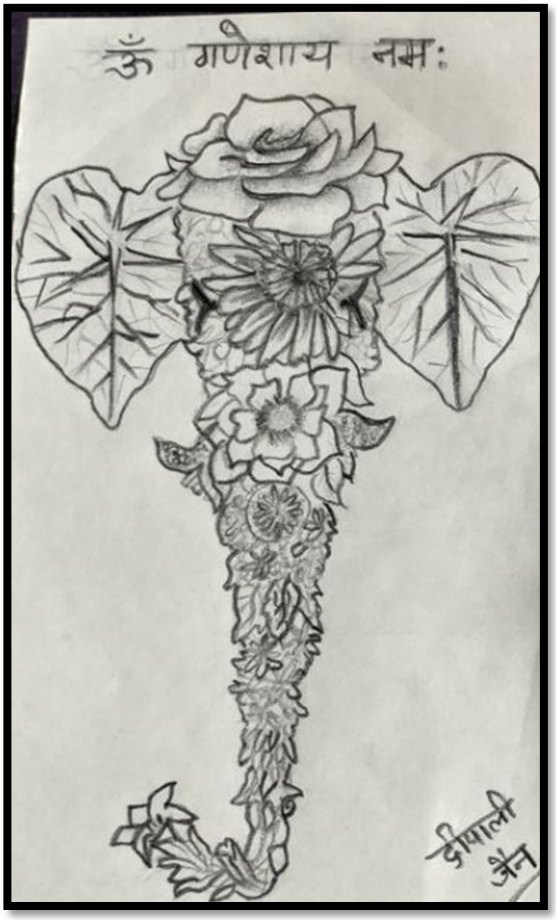

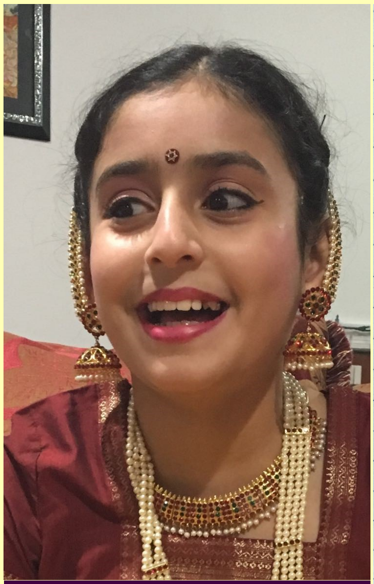

शिवाली पठानिया

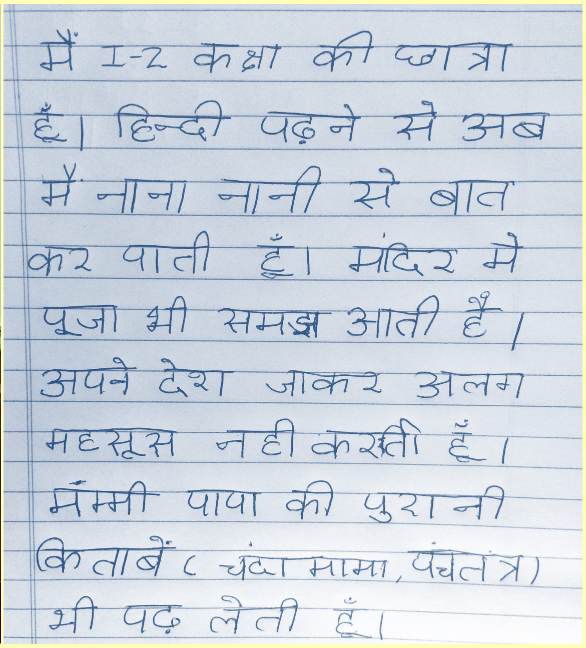

मैं I-2 कक्षा की छात्रा
हूँ। हिन्दी पढ़ने से अब
मैं नाना नानी से बात
कर पाती हूँ। मंदिर मे
पुजा भी समझ आती है।
अपने देश जाकर अलग
महसूस नही करती हूँ।
मम्मी पापा की पुरानी
किताबें (चंदा मामा, पंचतंत्र)
भी पढ़ लेती हूँ।

I'll help you protect what matters most.

You've built your dreams through hard work. As your Allstate Agent, I'll work hard to protect the good life you've made and the good that's still to come. Call for a complimentary protection review today.

Behal & Brown Associates LLC
Dinesh Behal
732-823-9012
143 US Hwy. 1 Unit 9
Metuchen, NJ 08840
dbehal@allstate.com

Allstate®
You're in good hands.
Auto Home Life Retirement

© 2014 Allstate Insurance Co.

मेरा नाम चेतना मल्लारपु है। मैं पिछले सात वर्षों से हिंदी यू.स.ए. से जुड़ी हूँ और दो वर्षों से विल्टन पाठशाला की सह-संचालिका हूँ। साथ ही इस वर्ष मध्यमा-३ कक्षा की अध्यापिका भी हूँ। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी अपनी पाठशाला में हम सब ने मिलकर दिवाली मनाई और होली भी। कर्मभूमि के लिए मेरी छात्रा की ओर से यह एक भेंट है।

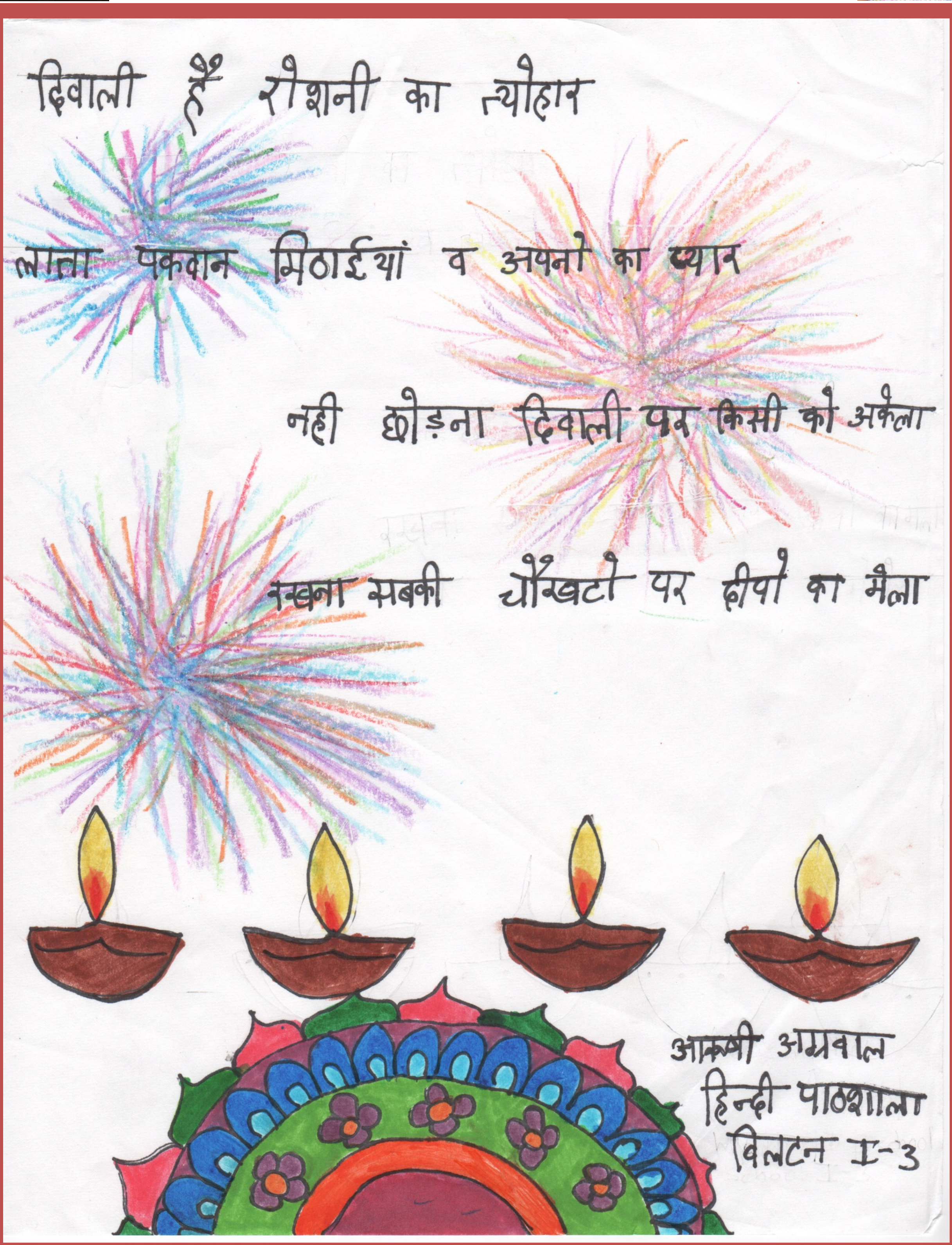

मेरा नाम अनन्या श्रीवास्तव है।
मैं आठ वर्ष की हूँ। मैं एडिसन पाठशाला
की प्रथमा-२ कक्षा में पढ़ती हूँ।
मुझे कला और चित्रकारी मे रुचि है।

पहेली

एक जल की थी रानी,
जीवन जिसका था पानी।
पीली, नीली, लाल, हरी थी
नाम बताओ तैर रही थी?

साउथ ब्रंस्विक पाठशाला कनिष्ठा-१

नमस्ते - मेरा नाम प्रिया मेनन है। मैं साऊथ ब्रुन्सविक हिंदी पाठशाला से पिछले ९ वर्षों से जुड़ी हुई हूँ। शुरुआत मैंने प्रथम-२ स्तर को पढ़ाने से की थी किन्तु अभी मैं कनिष्ठा-१ को पढ़ाती हूँ। मुझे कनिष्ठा -१ को पढ़ाने में काफी आनन्द आता है। मुझे छोटे बच्चों से काफी लगाव है। बच्चे भी मुझसे जल्दी हिल-मिल जाते हैं। मेरा ऐसा मानना है कि ४-५ साल के बच्चों को पढ़ाने के लिए हमें उनकी भाषा में बात करना आना चाहिए। मेरा बेटा स्नातक होकर अभी स्वयंसेवक के रूप में कार्यरत है और मेरी बेटी उच्चस्तर-२ में पढ़ रही है।

मेरे साथ जीशा मेनन जी बच्चों को पढ़ाने में मदद करती हैं। इस वर्ष हमारी कक्षा में १४ विद्यार्थी हैं। ये सभी बच्चे बड़ी बेसब्री से शुक्रवार का इन्तजार करते हैं। मौसम चाहे कैसा भी हो या इनके घर में कोई भी त्यौहार हो पर मेरी कक्षा के बच्चे कभी अनुपस्थित नहीं होते, बल्कि कक्षा में आने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। हर शुक्रवार की शाम हमारी पूरे सप्ताह की सबसे मनोरंजक शाम होती है। हम कक्षा में साल भर तरह-तरह के क्रिया कलाप करते हैं। बच्चों को चित्र बनाने या उनमें रंग भरने में काफी आनन्द आता है, इसीलिए हम हर दिन कोई न कोई चित्रकारी जरूर करते हैं और उसके माध्यम से बच्चों का शिक्षण करते हैं।

हमने नवरात्रि के बारे में विस्तार से बातचीत की और बच्चों ने रास और गरबा के चित्र बनाये। दिवाली के दौरान हमने रंगोली का इस्तेमाल करके ॐ बनाया और दिये से सजाया। भारतीय गणतंत्र दिवस के दिन बच्चों ने तिरंगे झंडे के चित्र बनाये। मुझे उम्मीद है कि आप लोग भी इन चित्रों से अत्यंत प्रभावित होंगे।

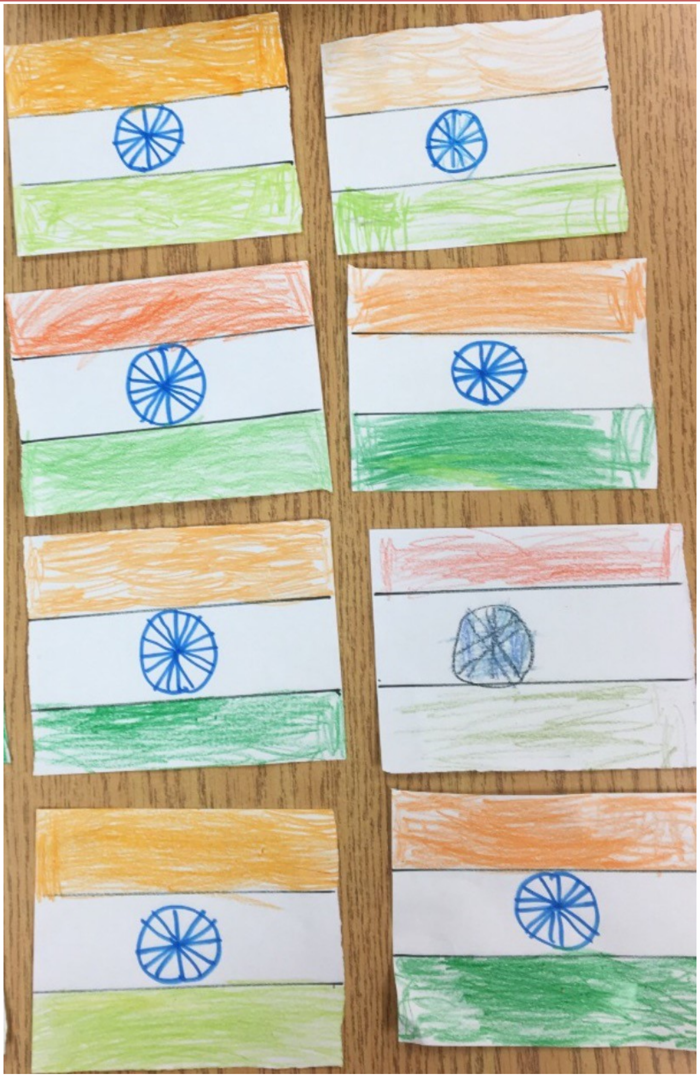

Awesome!
Super job!
ARSH
Cool!
Anirudh

दिवाली

शुभ जोशी, उच्चस्तर-२, चैस्टरफील्ड पाठशाला

दिवाली मेरा मनपसंद त्योहार है। इस साल दिवाली पर मुझे बहुत आनंद आया। दिवाली के दिन मेरी मम्मी ने बहुत सारे पकवान बनाए थे जैसे पूरी, आलू एवं पनीर की सब्जी, दाल का हलवा, गुजिया इत्यादि।

उस दिन मैंने नए कपड़े पहने और घर वालों के साथ मिलकर लक्ष्मी जी की पूजा की और सारे घर में दीयों और मोमबत्ती से रोशनी की। सारा घर रोशनी से जगमगा उठा। खाना खाने के बाद हमने

फूल झड़ी एंव अनार जलाए।
रात को हमने भारत मे अपने
रिश्तेदारों को फोन पर दिवाली
की शुभ कामनाएँ दी। इस प्रकार
मैंने अपने परिवार के साथ
धूमधाम से दिवाली मनाई।

बसंत पंचमी

अरिया मेहरा: मध्यमा-३, नॉर्थ ब्रंस्विक

अरिया मेहरा

बसंत पंचमी वसंत ऋतु का त्योहार है। हर साल यह माघ महीने के शुक्ल पक्ष के पांचवें दिन पर मनाया जाता है। बसंत पंचमी के दिन हम देवी सरस्वती, भगवान शिव और भगवान विष्णु से प्रार्थना करते हैं। देवी सरस्वती विद्या की देवी हैं। भारत में खास कर यह त्योहार बंगाल में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। लोग बसंत पंचमी के दिन पीले कपड़े पहनते हैं। लोग सबके साथ मिल कर मिठाई खाते हैं और अपने घरों को पीले फूलों से सजाते हैं।

अरिया मेहरा
I-3

लालची राजा

मेरा नाम चेहल कटोच है। मैं हिन्दी यू.एस.ए की ईस्ट ब्रस्विक पाठशाला में उच्च स्तर-1 में पढ़ती हूँ। मैं आपको एक राजा की कहानी कॉमिक के जरिए बता रही हूँ।

इस कहानी से हमे पता चलता है, की हमे लालच नहीं करना चाहिए। राजा के लालच के कारण उसकी प्यारी बेटी भी सोने की बन गई।

हिन्दी महोत्सव-२०१६ बच्चों के कार्यक्रम

शिक्षक-शिक्षिका अभिनन्दन समारोह की झलकियाँ

युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह

कविता पाठ प्रतियोगिता

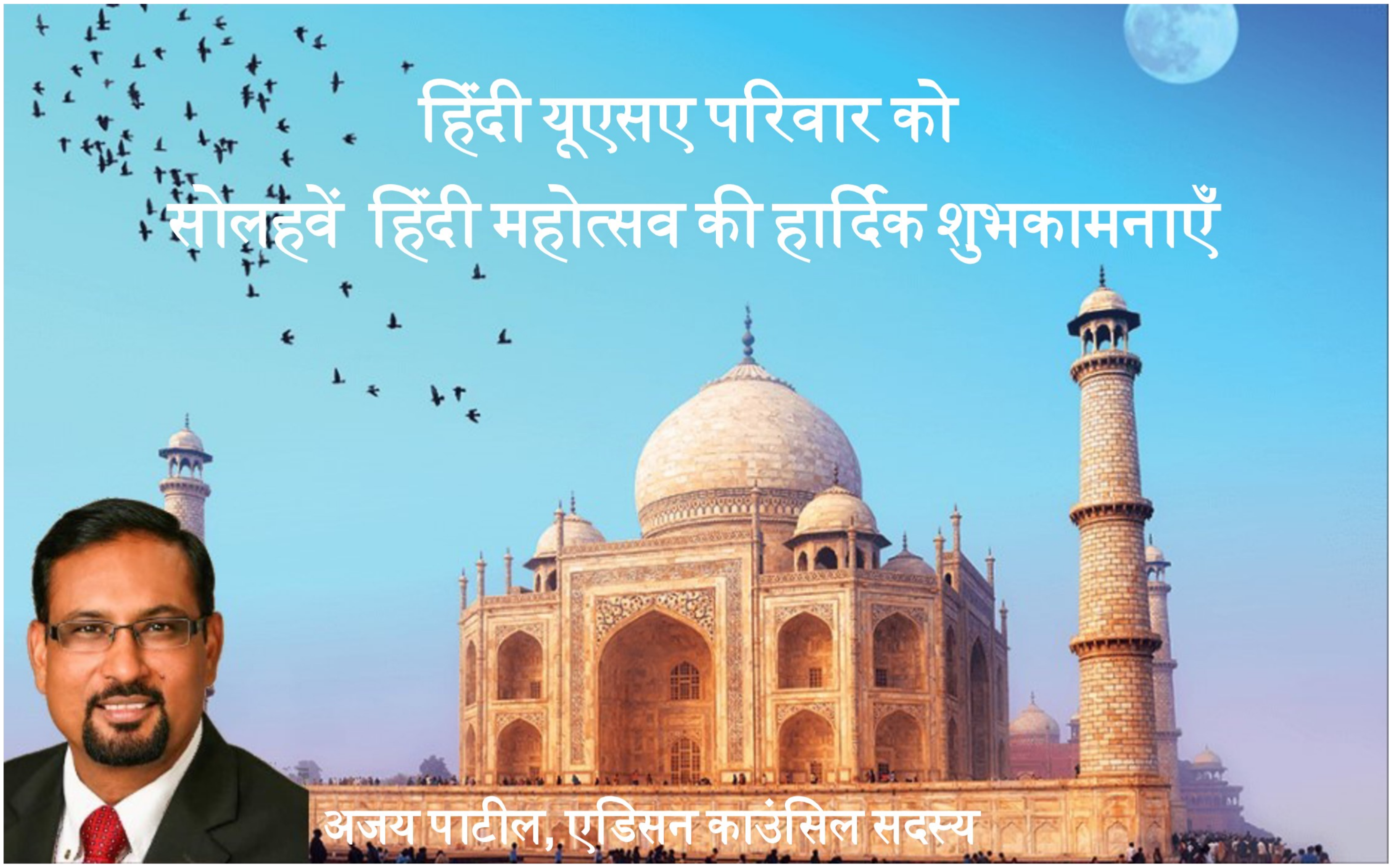

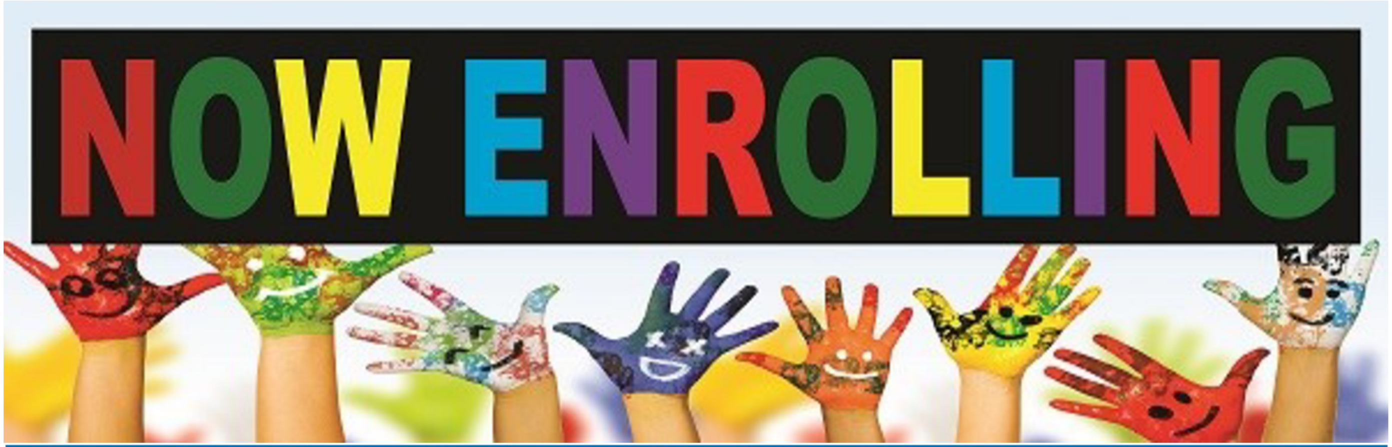

Little Spring Montessori Academy

1460 Livingston Ave, North Brunswick, NJ 08902

Call:(908) 818-9668 (732) 640-1588

www.littlespringmontessori.com

We couldn't be more excited about this message

Yes, we are growing

Yes, we are Hiring

Even in this economy

For a career opportunity as Financial Advisor or Manager

Thevan Theivakumar, CLF®

Sr. PARTNER, New Jersey Sales Office

(732) 319-8758

ntheivakuma@ft.newyorklife.com

EOE.M/F/D/V

454352 CV 6/18/17

WE STAND STRONG

JOIN OUR TEAM

NEW YORK LIFE

The Company You Keep®

New York Life Insurance Company 379 Thornall Street, 8th Floor Edison, NJ 08837